अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक
वर्ष 63, अंक 2, मार्च-अप्रैल 2021

गांधी शांति प्रतिष्ठान

शुरू में...

इतिहास जिन रास्तों से निकलता-चलता-बढ़ता है, उन रास्तों को देखना-पहचानना और संसार को उससे परिचित कराना एक जरूरी ऐतिहासिक दायित्व है लेकिन है यह बड़ा बारीक काम। जो इस बारीकी को नहीं पहचाते हैं, वे राजनीति की गलियों में ढोल बजाते रह जाते हैं; जो इसकी बारीकियों को समझ व समझा पाते हैं वे जॉर्ज ऑर्वेल(1903-1950) बन जाते हैं; और लिख जाते हैं 'एनिमल फार्म'(1945) और '1984' (1949)। इन दोनों किताबों ने मानव समाज की जितनी सेवा की है वैसी बहुत कम किताबों ने की है। ये दोनों किताबें अमर हो गई हैं।

1917 में हुई रूसी क्रांति ने भी मानव समाज की इतनी सेवा की है कि उसकी गाथा भी अमर हो गई है। विनोबा ने जिन्हें 'महामुनि' कहा उन कार्ल मार्क्स के चिंतन और जयप्रकाश ने जिन्हें 'महानायक' कहा उन व्लादिमीर इलिच लेनिन के अपूर्व नेतृत्व से स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत हुआ और 1922 में सोवियत संघ अस्तित्व में आया। 1917 के बाद दुनिया की सोच और सामाजिक विमर्श की भाषा इस कदर बदली कि जैसी पहले कभी बदली नहीं थी। लेकिन यह स्वर्णिम आसमान जल्दी ही अपनी चमक खोने लगा। रोज़ा लक्ज़मबर्ग(1871-1919), लियोन ट्रॉट्स्की (1879-1940) जैसों ने चमक खोती क्रांति की इस पीड़ा को देखा और दुनिया को आगाह भी किया। ट्रॉट्स्की ने पतनशील मजदूर क्रांति के खिलाफ लेनिन को आगाह किया और स्टालिन का तो सीधा मुकाबला ही किया था। स्टालिन ने सत्ता पाते ही ट्राट्स्की को देशनिकाला दे दिया और अंततः भाड़े का हत्यारा भेज कर, मेक्सिको में उनकी हत्या करवा दी। आपसी खूनी खेल में यह अपूर्व क्रांति तब जो फंसी तो आज तक इससे उबर नहीं सकी है।

साम्यवाद और साम्यवादी क्रांति से जयप्रकाश का मोहभंग भी इसी दौर में हुआ और जॉर्ज ऑर्वेल का भी। जयप्रकाश ने बड़ी लंबी व रोमांचक विचार-यात्रा की और फिर 'अच्छाई की प्रेरणा' शीर्षक से वह ऐतिहासिक निबंध लिखा जिसने दुनिया के वामपंथी खेमे में
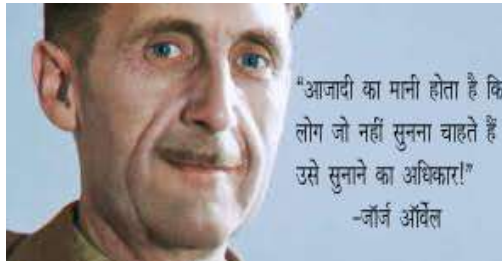
गहरी हलचल मचाई, तो गांधी-विचार को भी समृद्ध किया।

जॉर्ज ऑर्वेल ने भी विचारों की लंबी यात्रा की। 1922 से 1927 तक वे इंडियन इंपीरियल पुलिस में अधिकारी बनकर बर्मा के मोर्चे पर रहे। 1936-37 में स्पेन युद्ध में वे बजाप्ता फौजी बनकर लड़े और तब एक गोली इनका गला चीरती हुई निकल गई थी। इससे फौजी जीवन समाप्त हुआ। घायल ऑर्वेल अब एक नई लड़ाई में कूद पड़े— विचारों की लड़ाई! उन्होंने ट्रॉट्स्की की धारा को समर्थन दिया। यह रूसी क्रांति का स्टालिन-युग था। यदि ऑर्वेल स्पेन से निकल भागने और इंग्लैंड पहुंचने में सफल न हुए होते तो उनकी जान पर ही बन आई थी। इंग्लैंड में कुछ समय वे बीबीसी में रहे, कुछ समय पत्रकारिता-संपादन किया। और फिर उनकी पहली किताब आई— 'एनिमल फार्म'। यह वह कथानक था जिसे अद्‌भुत बारीकी से ऑर्वेल ने बुना था ताकि वे संसार को बता सकें कि पुराने मन से नया संसार न बनाया जा सकता है, न टिकाया जा सकता है। ऑर्वेल कल्पना करते हैं कि जानवरों का एक बाड़ा है जो अपने मनुष्य मालिक से बेजार होकर बगावत करता है और मनुष्य की गुलामी से छुटकारा पा जाता है। अब अपने मन की दुनिया रचने के लिए सारा आसमान उनके सामने खुला है। उनके गुरु मेजर ने क्रांति का सपना तो बुन ही दिया था, अब भरना था उसमें रंग। वह भरा भी गया लेकिन सारे रंग बदरंग होते गए और उनका 'एनिमल फार्म' एक शोकांतिका बन कर रह गया। ऑर्वेल ने इस उपन्यास में अपने आदर्श ट्रॉट्स्की को भी शामिल किया और उन्हें नाम दिया 'स्नोबॉल', जिसकी कथा आप आगे के पन्नों पर 'गोलू' के नाम से पढ़ेंगे।

'एनिमल फार्म' और '1984'— दोनों किताबों की संयुक्त बिक्री आज तक इतनी हुई है जितनी 20वीं शताब्दी के किसी भी एक लेखक की दो किताबों की नहीं हुई है। 2008 में मशहूर अखबार 'द टाइम्स' ने 1945 से 2008 के बीच के सबसे बेहतरीन अंग्रेज लेखकों की सूची में ऑर्वेल को दूसरे स्थान पर रखा था।

ooo

'गांधी-मार्ग' का यह पूरा अंक उसी 'एनिमल फार्म' को लेकर आपके पास आया है। इसलिए नहीं कि यह किसी बेहतरीन लेखक की बेहतरीन कृति है। इसलिए कि 'एनिमल फार्म' दुनिया भर के परिवर्तनवादियों की पाठ्य-पुस्तक का दर्जा हासिल कर चुका है। इतना ही नहीं, यह गांधी को समझने में हमारी मदद करता है। गांधी बार-बार एक ही बात हमें समझाते रहे कि साध्य कितना भी अच्छा हो, अहम यह है कि तुम्हारा साधन भी उतना ही अच्छा हो। काले साधनों की काली छाया चमकीली उपलब्धि को भी काला कर देती है। 'हिंद-स्वराज्य' (1909) में वे अपने पाठक पर तंज कसते हुए कहते हैं कि आपको शेर तो चाहिए, शेर का स्वभाव नहीं चाहिए। वे पूछते हैं : शेर के स्वभाव के बिना शेर होता है क्या?

सारे संसार में, सारे प्रचलित वादों-पद्धत्तियों के पास सत्ता का एक ही मॉडल है। क्रांतिकारी जब पुरानी व्यवस्था तोड़ कर अपने सपनों की नई दुनिया बनाने चलता है तब

उसके पास भी ईंट-गारा तो वही होता है जो उसे विरासत में मिला है। इसलिए विनायक बनाना चाहता है, बनता है बंदर! गांधी जोर देकर कहते हैं कि मनःस्थिति बदलो, परिस्थिति खुद ही बदल जाएगी। आज का समाजशास्त्री जिसे 'पैराडाइम शिफ्ट' कहता है, गांधी उसे पुराने केंचुल से निकलना कहते हैं। हमारा अपना देश इसका एक उपयुक्त उदाहरण है। आजादी की लड़ाई की अपूर्व रणनीति और रचनात्मक कार्यक्रमों का अकल्पनीय तंत्र गांधी ने इस तरह खड़ा किया था कि दुनिया को लगने लगा था कि भारत से, पूरब से ही कोई नया संदेश, कोई नया रास्ता मिलेगा। लेकिन मिलीं तीन गोलियां जिसने गांधी व्यक्ति को ही नहीं मारा, संभावनाओं का पूरा संसार ही बिखेर दिया।

30 जनवरी 1948 के बाद जिन्हें रचना था उन संभावनाओं के आधार पर नया भारत, उन सबके पास मॉडल तो वही था जो अंग्रेज छोड़ कर गए थे। इसलिए बदले लोग और उनकी चमड़ी का रंग। गांधी छूटे तो छूटते ही चले गए।

ऐसा ही तब भी हुआ जब रूस में साम्यवादी क्रांति के बाद साम्य पर आधारित समाज बनाने की चुनौती आई। लेनिन ने कुछ हाथ-पैर मारा जरूर लेकिन स्थितियां हाथ से निकलती गईं और अंततः पूंजीवादी प्रतिमानों से समता की क्रांति दम तोड़ गई।

ऑर्वेल के **जनावरपुरा** में भी ऐसा ही हुआ।

क्रांति की हर नई कोशिश के साथ ऐसा ही हो सकता है।

गांधी ने हमारे लिए विरासत छोड़ी है : क्रांति के प्रति सतत जागरूकता और अपने प्रति गहरी, कठोर ईमानदारी!

ooo

'एनिमल फार्म' का हिंदी अनुवाद पहले भी हो चुका है। लेकिन आज जरूरी यह था कि ऑर्वेल के 'एनिमल फार्म' को 'जनावरपुरा' बनाया जाए। ऑर्वेल भारतीय होते तो जो करते वह काम **प्रेरणाजी** ने अपूर्व कुशलता से किया है। यह भाषांतर नहीं है, रूपांतर है। पाठकों को याद होगा, हम **प्रेरणाजी** की यह प्रतिभा जेम्स डगलस की 'अनस्पिकेबल' की प्रस्तुति में देख चुके हैं। **प्रेरणाजी** स्वयं गांधी-विचार से प्रतिबद्ध ही नहीं हैं, गांधी की दिशा समझने व उसे युवा-मन तक पहुंचाने की कोशिश में सतत लगी रहती हैं। वे आधुनिक अर्थशास्त्र में दखल रखती हैं और गांधी को उस पर भी आजमाती रहती हैं।

ooo

अब 'जनावरपुरा' आपके हाथ में सौंप कर हम विदा लेते हैं। आप इसे पढ़ें और ऑर्वेल साहब से दोस्ती ताजा करें। फिर हमें अपनी राय भी लिखें।

हमारा यह भी आग्रह है कि हमारा हर पाठक **गांधी-मार्ग** के इस अंक को कम-से-कम 25 नये पाठकों तक पहुंचाए। यह गांधी के नमक का कर्ज उतारना है।

o कु.प्र.

जनावरपुरा

एनिमल फार्म एक क्लासिक है; साम्यवाद पर एक ऐतिहासिक टिप्पणी है। आज साम्यवाद दुनिया के कुल पांच देशों में बच गया है और जहां बचा है वहां भी वह दूसरा कुछ भी हो, साम्यवादी तो नहीं है। फिर यह किताब प्रासंगिक क्यों है? आज का नौजवान भले साम्यवाद की परिकल्पना से अनभिज्ञ है लेकिन उसे भी यह साफ दिखता है कि हर कहीं एक 'राजा' है जो किसी 'मुंगेरीलाल' और 'गोलू' का डर दिखा कर पूरे 'जनावरपुरा' को अपने काबू में रखता है। जब भी 'राजा' का कोई बड़ा घपला सामने आता है, जनावरपुरा में भी युद्ध हो जाता है ताकि भोले जानवरों का ध्यान भटक जाए और दुश्मन के डर से सब 'राजा' के काबू में रहें। उनकी तकलीफों को किसी बड़े उद्देश्य के शोर के नीचे दबा दिया जाता है। आज 75 साल के बाद यह किताब साम्यवाद को ही नहीं, दुनिया भर की तानाशाहियों को समेट लेती है। जो तानाशाही की वृत्तियों को नहीं पहचान पाते वे अभिशप्त हो कर अपने 'जनावरपुरा' में बंद हो जाते हैं। इसी सच्चाई की वजह से इसका रूपांतर किए बिना मैं रह नहीं सकी।

—प्रेरणा

यह बात नरमादापुरा की है। मुंगेरीलाल आज खूब पी कर आया था। उसने अपने मुर्गी घर का फाटक तो बंद किया लेकिन उनमें बने छोटे दरवाजों को बंद करना भूल गया। छत पर टंगी लालटेन की रोशनी के साथ नाचता-लड़खड़ाता वह अपने कमरे में पहुंचा, इधर-उधर नजर घुमाई, जूते उतार फेंके और बोतल में बची आखिरी शराब गिलास में उड़ेल कर, डगमगाता हुआ अपने बिस्तर तक पहुंचा जहां उसकी पत्नी पहले से ही खर्राटे ले रही थी।

इधर मुंगेरीलाल ने कमरे की बत्ती बुझाई और उधर जानवरों के बाड़े में तेज सुगबुगाहट होने लगी। वैसे उनके बीच यह खबर पहले ही फैल चुकी थी कि जनाब मेजर साहब यानी बाड़े के माननीय सफेद सूअर को कल रात एक अजीब-सा सपना आया है और वे बेचैन हैं कि अपने इस सपने के बारे में वे दूसरे प्राणियों को कब व कैसे बताएं। फिर दिन-ही-दिन में सभी प्राणियों के बीच यह तय हुआ कि जैसे ही मुंगेरीलाल की आंखें लगेंगी, सभी प्राणी बड़े खेत के पिछले हिस्से में जमा हो जाएंगे। वहीं मेजर साहब अपने सपने की बात बताएंगे। वैसे गांव के मेले में मेजर साहब का नाम 'नरमादापुरा का हीरा' मशहूर था लेकिन बाड़े के सभी प्राणी उन्हें मेजर साहब ही बुलाते थे। और मेजर साहब की धाक और शोहरत ऐसी थी कि उनका कहा पत्थर की लकीर! सभी अपनी घंटे भर की नींद कुर्बान कर खेत के पिछले हिस्से में जमा होने को तैयार हो गए।

अब अगला नजारा यह था कि बड़े खेत के पिछले हिस्से में, जहां जमीन थोड़ी-सी उठी हुई थी, वहीं, ठीक वहीं मेजर साहब पुआल पर पसरे हुए थे। उसके सिर के ऊपर छत से लालटेन लटकी रही थी। मेजर साहब की उम्र कुछ बारह बरस की होगी लेकिन खा-पी कर वे खासे मोटे-चौड़े तैयार हुए थे— एकदम राजसी ठाठ-बाट वाला सूअर! आगे के उनके नुकीले दांत कभी काटे नहीं गए थे। यह धज उन्हें खासा बुद्धिमान और सर्वमान्य बनाती थी।

एक-एक कर बाड़े के सभी प्राणी आने लगे और अपनी-अपनी पसंद की जगह देख कर बैठने लगे। सबसे पहले तीन कुत्ते आए— राजू, भूरी और कल्लू। फिर सूअर आए और सामने बिछी पुआल पर पसरते गए। फिर मुर्गियां आईं जो खिड़की पर बैठती गईं। कबूतर भी पंख फड़फड़ाते आए और छत पर बनी लकड़ी की पट्टियों पर जा बैठे। भेड़ों और गायों ने अपने लिए सूअरों के पीछे बैठने की जगह बनाई। वे बैठीं और जुगाली करने लगीं। मुंगेरीलाल की गाड़ी में लगने वाले दोनों घोड़े भी साथ-साथ पहुंचे— बहादुर और बिजली। वे अपने बड़े-बड़े मजबूत और बालों से ढंके खुर बड़ी सावधानी से रख रहे थे कि कहीं कोई छोटा-मोटा प्राणी घास में दुबक कर बैठा न हो। अधेड़ावस्था में पहुंचती बिजली थोड़ी मोटी घोड़ी थी। अपने चौथे बछड़े को जन्म देने के बाद वह पहले जैसी सुंदर-सुडौल नहीं रह गई थी लेकिन सभी उसके ममतालू स्वभाव की प्रशंसा करते थे। बहादुर अच्छा-खासा कद्दावर घोड़ा था - कोई अठारह हाथ ऊंचा! उस एक में आसानी से दो घोड़ों जैसी ताकत थी। उसकी नाक पर एक सफेद धारी थी जिसकी वजह से वह दूर से ही पहचाना जाता था। लेकिन बुद्धि के मामले में वह पैदल ही था। फिर भी गंभीर चरित्र और काम करने की अकूत ताकत की वजह से सभी उसका बहुत सम्मान करते थे।

घोड़ों के बाद आई सफेद बकरी कमली और फिर आया बबलू नाम का गधा।

बबलू इस बाड़े का सबसे पुराना प्राणी था, और सबसे खड़ूस भी। वह बमुश्किल किसी से बात करता था, और जब भी बोलता तो कुछ टेढ़ा-मेढ़ा और नकारात्मक ही बोलता। जैसे वह कहता था कि भगवान ने उसे पूंछ मक्खियां उड़ाने के लिए दी हैं लेकिन जल्दी ही वह दिन आएगा जब न उसकी पूंछ रहेगी, न ही मक्खियां! बाड़े का वह इकलौता प्राणी था जिसे किसी ने हंसते नहीं देखा था। वजह पूछने पर वह कहता : मुझे कुछ भी ऐसा नजर नहीं आता है जिस पर हंसा जा सके। उसकी और बहादुर की अच्छी जमती। दोनों अक्सर रविवार की अपनी छुट्टियां साथ-साथ चरते हुए बिताते लेकिन इस दौरान भी उनकी आपस में कोई बातचीत नहीं होती थी।

दोनों घोड़ों ने अभी अपनी जगह बनाई ही थी कि बत्तख के बच्चों का पंक्तिबद्ध झुंड कमजोर आवाज में चिंचियाता हुआ घुसा। इनकी मां मर चुकी थी। इधर-उधर लपकता-झपकता यह झुंड अपने लिए कोई ऐसी जगह तलाश रहा था जहां कोई बड़ा जानवर उन्हें अपने पैरों तले कुचल न दे। बिजली ने झट उनकी परेशानी समझ ली। उसने अपने आगे के पैरों को जोड़ कर एक सुरक्षित घेरा बनाया और बत्तख के बच्चे इसके भीतर दुबक आए। वे बैठे और सो गए। सबसे आखिर में रोजी आई। यह एक कमअक्ल लेकिन बेहद खूबसूरत सफेद घोड़ी थी। मुंगेरीलाल की सैर-सपाटे वाली बग्घी वही खींचती थी। गुड़ का टुकड़ा मुंह में चुघलाती, मस्ती में झूमती रोजी सबसे आगे बैठ गई। वह अपनी सफेद पूंछ इधर-उधर लहरा रही थी, अपनी गर्दन पर बंधा लाल रिबन सबको दिखा रही थी। सबसे आखिर में बिल्ली आई। हमेशा की तरह उसने सबसे आरामदेह जगह के लिए आसपास देखा, और फिर बहादुर और बिजली के बीच की जगह में जा घुसी। मेजर साहब के भाषण के दौरान वह संतुष्ट भाव से घुरघुराती रही लेकिन सच यह था कि उसने मेजर साहब का कहा एक भी शब्द नहीं सुना था।

काला कौआ कालू भीतर नहीं आया। वह पिछवाड़े के दरवाजे पर बैठ कर सोता रहा। जब मेजर साहब ने देखा कि सब आराम से अपनी-अपनी जगह बैठ चुके हैं और उनकी बात शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं, तो उन्होंने अपना गला साफ किया और कहना शुरू किया:

"साथियो, आप लोग मेरे उस अजीब सपने के बारे में सुन ही चुके हैं। लेकिन मैं उसकी बात बाद में करूंगा। मुझे उससे पहले कुछ और भी कहना है। मित्रो, मुझे नहीं लगता कि अब मैं ज्यादा समय तक आप लोगों के साथ रह पाऊंगा। मैंने भरपूर जीवन जी लिया है। अपने बाड़े में अकेले पड़े-पड़े मुझे सोचने का भरपूर समय मिला और मैंने बहुत सारा ज्ञान अर्जित किया। अब लगता है कि मेरा कर्तव्य है कि मरने से पहले मैंने जो कुछ ज्ञान हासिल किया है, उसे आप लोगों को देता जाऊं। मैं मानता हूं कि यहां मौजूद किसी भी प्राणी से ज्यादा समझ मेरे पास है कि इस पृथ्वी पर जीवन का अर्थ क्या है। मैं इसी बारे में आज सबसे पहले बात करूंगा।

"दोस्तो, आप बताइए, हमारी इस जिंदगी का मतलब क्या है? पहले तो हम यह स्वीकार करें कि हमारी जिंदगी दयनीय है, कठोर है और बहुत छोटी है। हमारे पैदा होते ही हमें सिर्फ इतना ही खाना दिया जाता है कि हमारी सांस चलती रहे। हममें से जो कर सकते हैं उनसे उनकी अंतिम सांस तक कठोर काम लिया जाता है। जब हमारी जरूरत खत्म हो जाती है तो हमें घिनौनी क्रूरता से कत्ल कर दिया जाता है। पूरे भारत में आपको ऐसा कोई प्राणी नहीं

मिलेगा जिसकी उम्र एक साल की है, फिर भी वह खुश है। पूरे भारतवर्ष में कोई भी प्राणी आजाद नहीं है। कड़वी सच्चाई यह है कि हमारी जिंदगी गुलामी और अपमान से भरी है।

"लेकिन मैं आप सबसे पूछना चाहता हूं कि क्या यह कुदरत का नियम है? जिस धरती पर हम रहते हैं क्या वह इतनी गरीब है कि इस पर रहने वाले हम सभी को एक सुखी जिंदगी नहीं मिल सकती? नहीं दोस्तो, नहीं; हजार बार नहीं!! भारत देश की मिट्टी उपजाऊ है, हवा-पानी-प्रकाश यहां भरपूर है। इस धरती में इतनी ताकत है कि इस पर जितने प्राणी आज रहते हैं उससे कई गुना ज्यादा प्राणी भरपूर आनंद व संतोष से रह सकें। अकेले हमारे नरमादापुरा में ही आज से एक दर्जन ज्यादा घोड़े, बीस गायें, सैंकड़ों भेड़ें खूब आराम व सम्मान की जिंदगी बसर कर सकती हैं। फिर हम इतनी खराब हालत में क्यों हैं? इसलिए, और सिर्फ इसलिए कि हमारी मेहनत का सारा मेवा मनुष्य हड़प लेता है। हमारी हर समस्या की जड़ एक ही है - आदमी, मनुष्य, मानव! मनुष्य ही हमारा असली दुश्मन है। अगर हम मनुष्य को अपने जीवन से हटा देते हैं तो हमारी भूख और हाड़तोड़ मेहनत की जड़ हमेशा के लिए कट जाएगी।

"मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो बिना कुछ भी पैदा किए, बस उपभोग करता है। वह दूध नहीं देता, अंडे नहीं सेता, इतना कमजोर है वह कि खुद से हल भी नहीं चला सकता, दौड़ कर अपने लिए शिकार भी नहीं कर सकता। फिर भी वही हम प्राणियों का मालिक बना बैठा है। वह हमें काम में जोत देता है और खाने के लिए उतना ही देता है जिससे कि हम भूखों न मरें। हमारे मेहनत से वह खेत जोतता है और हमारे ही मल से उसके खेतों में खाद पड़ती है। लेकिन हमारे पास अपनी खाल के अलावा कुछ बचता है क्या? मेरे सामने गायें बैठीं हैं। आप मुझे बताएं कि पिछले बरस आपने कितने हजार लीटर दूध दिया है? उसमें कितना आपके बछड़ों को मिला कि वे हट्टे-कट्टे बनते? उस दूध की एक-एक बूंद हमारे दुश्मनों के गले के नीचे उतर गई है और हमारे बच्चे तरसते रह गए! मैं तुम मुर्गियों से पूछता हूं कि पिछले बरस भर में तुमने कितने अंडे दिए और उनमें से कितने चूजे निकल सके? और जो चूजे आए भी उनमें से कितने आज तुम्हारे साथ हैं? तुम्हारे सारे अंडे और चूजे बाजार में बिकने पहुंच गए ताकि मुंगेरीलाल और उसके आदमियों की खूब कमाई हो सके। बिजली, तुम बताओ कि क्या हुआ उन चार बछड़ों का जिन्हें तुमने जना था, और जो बुढ़ापे में तुम्हारा सहारा और आंखों का तारा बनते? साल भर का होते-न-होते उन्हें बेच दिया गया। अब तुम उनमें से किसी को भी दोबारा नहीं देख पाओगी। बदले में तुम्हें क्या मिला? चार-चार जचगियों और खेतों में कड़ी मेहनत के बदले तुम्हारे पास आज मामूली राशन और एक तबेले के अलावा और क्या है?

"और फिर यह कि हम कंगाली-बदहाली की जो जिंदगी जीते हैं, वह भी हमें पूरी उम्र तक जीने कहां दिया जाता है! मैं अपने बारे में नहीं कह रहा क्योंकि किस्मत ने मेरा थोड़ा-बहुत साथ दिया है। इस समय मैं बारह बरस का हूं। मेरे चार सौ से भी ज्यादा बच्चे हुए हैं। एक सूअर का यही प्राकृतिक जीवन होता है। लेकिन मुझे आप सबकी जिंदगी पर तरस आता है। कोई भी प्राणी क्रूर कसाई के छुरे की मार से बचा है! ये सब जो नन्हे-मुन्ने सूअर सामने बैठे हैं, जानते हो इन्हें किसलिए पाला जा रहा है? बलि देने के लिए! तुम सब

याद रखो कि तुम्हें सिर्फ मांस के लिए पाला जा रहा है। एक साल के भीतर ही तुम सब काट दिए जाओगे। हममें से हर का ऐसा ही बुरा हाल होना है- क्या गायें, क्या सूअर, क्या मुर्गियां और भेड़ें, सब इसी कतार में हैं। घोड़ों और कुत्तों की जिंदगी भी इससे बेहतर कहां है? तुम, बहादुर तुम सोचो, जिस दिन भी तुम्हारे कंधों की यह मजबूती नहीं रहेगी, मुंगेरीलाल तुम्हारा क्या करेगा? तुम्हें कसाई के पास बेच आएगा। हम देखते ही हैं न कि जब हमारे कुत्ते बूढ़े हो जाते हैं तो मुंगेरीलाल उनकी गर्दन से पूरी ईंटें बांध कर, उन्हें नजदीक के तालाब में डुबो आता है।

"क्या आपको साफ-साफ नहीं दिख रहा कि मनुष्य जाति के अत्याचार ही हमारी सारी परेशानी की जड़ हैं? अगर हम आदमी से छुटकारा पा लेते हैं तो फिर हमारी सारी मेहनत और उपज पर हमारा अधिकार होगा। हम रातों-रात अमीर और आजाद हो जाएंगे। लेकिन यह सब कैसे होगा? तो मैं कहना चाहता हूं कि आप सबको एक ही काम करना है - आज से और अभी से, कि यहां से मनुष्य-जाति को जड़ से उखाड़ फेंकने की दिशा में दिन-रात काम करना है, मन लगाकर हाड़-तोड़ मेहनत करनी है। साथियो, आप लोगों के लिए यही मेरा संदेश है— विद्रोह! मुझे नहीं पता कि यह बगावत कब होगी। इसमें एक सप्ताह भी लग सकता है और सौ बरस भी लेकिन मुझे पूरा यकीन है, मैं नीचे बिछी इस घास की तरह साफ-साफ देख पा रहा हूं कि आज नहीं तो कल, हमारी बगावत सफल होगी और हमें न्याय जरूर मिलेगा। दोस्तो, अब जितनी भी जिंदगी बची है उसके एक-एक पल को इसी काम में लगाना है। अपनी निगाह इसी ध्येय पर गड़ाए रखो। और इससे भी ज्यादा जरूरी यह है कि मेरे इस संदेश को उन तक भी पहुंचाओ जो तुम्हारे बाद इस धरती पर आएंगे ताकि आनेवाली पीढ़ियां तब तक संघर्ष करती रहें जब तक हम जीत नहीं जाते।

"साथियो, तुम अपने संकल्प से पीछे मत हटना। सावधान रहना कि कोई भी तुम्हें बहका या भटका न सके। इस बात पर कभी भरोसा मत करना कि आदमी और पशु के हित एक हैं। यह बकवास है कि एक के विकास में ही दूसरे का विकास निहित है। आदमी अपने अलावा किसी प्राणी का भला नहीं सोच सकता। हम पशुओं में संपूर्ण एकता होनी चाहिए और संघर्ष के लिए मजबूत भाईचारा बनना चाहिए। सभी मनुष्य शत्रु हैं। सभी पशु एक हैं और एक-दूसरे के साथी हैं।"

मेजर साहब का भाषण सुनते ही चारों तरफ गजब का शोर उठा। हड़कंप मच गया। मेजर साहब की बातें सुनते हुए चार तगड़े चूहे अपने बिलों से बाहर सरक आए थे। अचानक कुत्तों की निगाह उन पर पड़ गई और कुछ दूसरा घटता इससे पहले चूहे गजब की फुर्ती से अपने बिलों में छलांग लगा गए। तब कहीं उनकी जान बची। अफरातफरी मचती कि मेजर साहब ने अपना पैर उठाकर शांति बनाए रखने का इशारा किया।

"दोस्तो," उन्होंने कहा, "यहां हमें एक और बात साफ-साफ तय कर लेनी चाहिए। आप बताएं कि जंगली जीव जैसे चूहे और खरगोश, ये सब हमारे शत्रु हैं या हमारे मित्र? ...चलिए, मतदान कर लेते हैं। मैं सभा के सामने यह सवाल रखता हूं : क्या चूहे हमारे साथी हैं?"

तुरंत मतदान हुआ। जबरदस्त बहुमत से तय हुआ कि चूहे हमारे साथी-मित्र हैं। केवल

चार प्राणी इसके विरोध में थे : तीन कुत्ते और बिल्ली। बाद में पता चला कि बिल्ली ने दोनों तरफ मतदान किया था। मेजर साहब ने अपनी बात जारी रखी :

"बस, अब मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना है। मैं फिर दोहराता हूं कि मनुष्य और उसके सभी तौर-तरीकों से हमारी दुश्मनी है। यह कभी मत भूलना कि जो भी दो पैरों पर चलता है, वह हमारा शत्रु है; जो चार पैरों पर चलता है या जिसके पर हैं, वह हमारा मित्र है, साथी है। यह भी याद रखना कि मनुष्य के साथ लड़ते वक्त उन जैसे मत बन जाना। मनुष्य पर जब जीत हासिल हो जाए तब भी उसकी बुरी आदतों को कभी मत अपनाना। कोई भी पशु कभी भी अपना घर बनाकर उसके भीतर ना रहे, बिस्तर पर ना सोए, कपड़े भी ना पहने, नशा-पानी न करे, तंबाकू सेवन न करे, रुपये-पैसे को हाथ न लगाए और कारोबार ना करे। मनुष्य की ये सारी आदतें पाप हैं। और सबसे बड़ी बात, कोई भी पशु अपनी जात-बिरादरी पर कभी अत्याचार ना करे। हमारे बंधु, फिर चाहे वो कमजोर हों या शक्तिशाली, चतुर हों या भोले, हम सब भाई-भाई हैं। कोई भी पशु कभी किसी दूसरे पशु को ना मारे। हम सभी पशु एक हैं, समान हैं।

"साथियो, अब मैं आपको अपने कल रात के उस सपने के बारे में बताता हूं जिसकी बातें आप तक पहुंच ही चुकी हैं। वह दिव्य सपना शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है। यह उस वक्त की धरती का सपना है जब यहां आदमी का नामो-निशान नहीं रहेगा। इस सपने ने मुझे वह सब याद दिला दिया है जो मैं कब का भूल चुका था। बहुत बरस पहले, जब मैं एक नन्हा-सा सूअर था, मेरी मां और दूसरी सुअरनियां एक बहुत पुराना गाना गाती थीं। उन्हें भी इस गीत की धुन और शुरू के तीन शब्द ही याद थे। मुझे धुन बचपन में याद थी लेकिन अब याद धुंधली पड़ गई है। लेकिन देखो कि कैसा हुआ कि अचानक वही धुन मेरे सपने में लौट आई। धुन ही नहीं, गीत के बोल भी लौट आए। मुझे पूरा यकीन है कि ये वही बोल हैं जो सदियों पहले पशु गाया करते थे। फिर सब कहीं खो गया। मेरे प्यारे दोस्तो, मैं वह गीत आप लोगों को गा कर सुनाता हूं। मैं बूढ़ा हो गया हूं और मेरी आवाज भी कर्कश हो गई है लेकिन जब मैं आपको इसकी धुन सिखा दूंगा तो आप लोग इसे खूब अच्छी तरह से गाना। गीत का मुखड़ा है : 'भारत के जनावर।"

मेजर साहब ने अपना गला साफ कर गाना शुरू किया। उन्होंने कहा तो था कि उनकी आवाज कर्कश हो चुकी है लेकिन गाया उन्होंने ठीक-ठाक। गीत की धुन भी बढ़िया थी- कुछ-कुछ 'हम होंगे कामयाब' और कुछ-कुछ 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तान हमारा' जैसी धुन व मस्ती थी उसमें। गीत के बोल इस तरह थे :

भारत के जनावर, हिंदुस्तान के जनावर
जनावर इस महान धरती और आसमान के
खुशियों भरे मेरे गीत सुनो
सुनहरे भविष्य के सपनों के गीत सुनो।

आएगा वह दिन देर-सबेर
दुष्ट आदमी दिया जाएगा खदेड़

और भारत की इस महान धरती पर
होंगे सिर्फ जनावर और पेड़।

हमारी नकेलें हो जाएंगी गायब
पीठ पर से बोझा हो जाएगा दूर
कील और चाबुक जाएंगी सड़
बरसेंगे नहीं कभी कोड़े क्रूर।

कल्पना से कहीं अधिक होंगे हम अमीर
गेहूं, जौ, मक्का और चारा होगा भरपूर
बनमेथी, फलियां, दूध और नीर
एक दिन सबको मिलेगा जरूर

चमकेंगे धूप में हिंदुस्तान के खेत
पीएंगे वे भर पेट मीठा पानी
बहेगी हर ओर मीठी हवा
बनेगी एक दिन हमारी कहानी

करें उस दिन के लिए मेहनत और जिद्द
गाय, घोड़े, बकरी और गिद्ध

हो सकता है सबके निकलें प्राण
बगावत के पूर्व
तभी मिलेगी अपनी आजादी अपूर्व

भारत के जनावर, हिंदुस्तान के जनावर
जनावर इस महान धरती और आसमान के
खुशियों भरे मेरे गीत सुनो
सुनहरे भविष्य के सपनों के गीत सुनो

गीत गाते-गाते सभी प्राणी उत्तेजना से भर उठे। मेजर साहब ने गाना खत्म भी नहीं किया था कि सबने खुद ही इसे गाना शुरू कर दिया। सबसे भोंदू पशुओं की जबान पर भी इसकी धुन चढ़ गई। उन्होंने कुछेक शब्द सीख भी लिये। सूअरों और कुत्तों को तो कुछ ही पल में पूरा गाना याद हो गया। थोड़े अभ्यास के बाद पूरा बाड़ा एक साथ, एक आवाज में ऐसे कोरस गाने लगा मानो रफी साहब व मन्ना डे की जुगलबंदी हो। रात का सन्नाटा तोड़ कर सारा बाड़ा 'भारत के जनावर' गीत से गूंज उठा। गायों ने इसे रंभा कर गाया; कुत्तों ने रिरियाया कर; भेड़ों ने मिमियां कर। घोड़ों ने हिनहिना कर सबका साथ दिया। बत्तखों की कांय-कांय ने भप्पी दा का अंदाज साकार कर दिया। सब इतने उल्लास से भरे थे कि उन्होंने इसे लगातार पांच बार गाया। वे तो इसे सारी रात ही गाते रहते कि अचानक... संगीत के

शोर-शराबे से मुंगेरीलाल की नींद टूट गई। वह बिस्तर से उछला। उसे लगा कि बाड़े में कोई लोमड़ी घुस आई है। बिस्तर के पास हमेशा पड़ी रहने वाली अपनी बंदूक एक झटके में उठा कर वह बाहर आया और अंधेरे में धांय-धांय छह गोलियां दाग दीं। गोलियां खेत की पिछली दीवार में, जहां जानवर बैठे थे, जा धंसीं। फिर तो मचनी ही थी अफरा-तफरी। मची। और देखते-देखते सारा बाड़ा ऐसे सो गया मानो कभी जगा ही नहीं था।

तीन रात बाद मेजर साहब नींद में ही चल बसे। उसका शव फलों के बगीचे के एक कोने में दफनाया गया।

यह मार्च शुरू की बात थी। अगले तीन महीनों तक बाड़े में गुपचुप सरगर्मियां चलती रहीं। मेजर के भाषण ने बाड़े के अधिक बुद्धिमान पशुओं को जीवन का एक नया मकसद दे दिया था। उन्हें यह तो नहीं पता था कि मेजर ने जिस बगावत की भविष्यवाणी की, वह कब होगी; उनके जीते-जी होगी भी या नहीं लेकिन एक बात सबको समझ में आ गई थी कि इस बगावत के लिए खुद को तैयार रखना उनका फर्ज है। दूसरों को सिखाने-पढ़ाने और संगठित करने का दायित्व स्वाभाविक रूप से सूअरों के कंधों पर आया। वे ही थे जिन्हें ज्यादा चतुर माना जाता था। सूअरों में गोलू और राजा दो युवा सूअर सबसे चपल व होशियार थे। मुंगेरीलाल उनको बेचने की नीयत से पाल रहा था। राजा कद-काठी में बड़ा, दिखने में खूंखार भोपाली सूअर था - पूरे बाड़े का एकमात्र भोपाली प्राणी! वह ज्यादा बातें नहीं करता था लेकिन अपनी मर्जी का काम कराने में उसे महारत हासिल थी। राजा की तुलना में गोलू ज्यादा जिंदादिल सूअर था - बेहद कल्पनाशील और साहसी! बाकी सभी नर सूअर मांस के लिए पाले जा रहे थे। उनमें एक था भीम - भरे-भरे गाल, चमकदार आंखें, चपल चाल, तगड़ी तीखी आवाज और बातें बनाने में एकदम उस्ताद। भीम जब भी बहस करता तो लगातार इधर-उधर फुदकता और अपनी पूंछ तेजी से कुछ इस तरह हिलाता कि हर कोई उसकी बातों में आ जाता। उसकी पूंछ थी भी बहुत आकर्षक। भीम के बारे में सबका कहना था कि वह इतना उस्ताद है कि काले को सफेद में बदल सकता है।

गोलू, राजा और भीम तीनों ने मिलकर मेजर के उपदेशों को एक विचारधारा में ढाला और नाम दिया - पशुवाद! फिर सिलसिला यूं चला कि मुंगेरीलाल के सो जाने के बाद रातों जग-जग कर उनकी गुप्त बैठकें चलतीं, 'पशुवाद' के सिद्धांत को मांजा जाता, एक-दूसरे को उसकी बारीकियां समझाई जातीं। शुरू-शुरू में सबने अनसुनी ही की। कुछ जानवरों ने यह भी याद दिलाया कि मुंगेरीलाल हमारा मालिक है और ईमानदारी यही है कि हम उसके प्रति वफादार रहें कुछ ने यह भी कहा कि हमारे मर जाने के बाद क्या होगा, इससे हमें क्या? यह बात भी उठी कि जब मेजर साहब कह गए हैं कि बगावत तय है तो फिर कोशिश करने की क्या जरूरत है? उनके भेजे में यह बात बिठाने में सूअरों को खासी मेहनत करनी पड़ी कि ऐसा सोचना 'पशुवाद' के सिद्धांत के खिलाफ है। सबसे अधिक मूर्खतापूर्ण सवाल सफेद घोड़ी रोजी पूछती थी। गोलू से सबसे पहला सवाल उसने यही किया : "क्या बगावत के बाद खाने को गुड़ मिलेगा?"

"नहीं नहीं," गोलू की कड़ी आवाज उभरी, "इस बाड़े में गुड़ बनाने लायक कोई साधन नहीं है। और फिर तुम्हें गुड़ की जरूरत ही क्या है? जितनी चाहिए जई और सूखी घास तुम्हें, उतनी मिलेगी।"

"क्या मैं बगावत के बाद भी अपनी गर्दन पर रिबन लगा सकूंगी?" रोजी ने पूछा।

"बहन," गोलू का जवाब था, "जिन रिबनों के पीछे तुम इस तरह पागल रहती हो, अरे, जानती भी हो कि ये रिबन भी हमारी गुलामी के बिल्ले हैं। तुम्हें इतनी समझ भी नहीं है कि स्वतंत्रता रिबनों से कहीं अधिक मूल्यवान होती है!"

रोजी चुप तो हो गई लेकिन उसका मन नहीं माना।

सूअरों को कालिया कव्वे द्वारा फैलाई झूठी बातों का खंडन करने में खासी मेहनत करनी पड़ती। कालिया मुंगेरीलाल का चहिता था। असल में वह उसका जासूस था। लेकिन वह कलाकार भी था- कहानियां सुनाने में माहिर! उसका दावा था कि वह एक ऐसे रहस्यमय पहाड़ के बारे में जानता है जिसका नाम मिसरी पर्वत है। यह पर्वत स्वर्ग नाम की जगह पर है और मरने के बाद सभी जानवर वहीं पहुंचते हैं। यह स्वर्ग बादलों से ऊपर आकाश में कहीं है। कालिया का कहना था कि मिसरी पर्वत पर सप्ताह के सातों दिन रविवार रहता है और वहां घास हर मौसम में उगती है। खेत में गुड़ उगता है और बाड़ों में सोयाबीन की खली। झूठा और कामचोर होने के कारण सभी कालिया से नफरत करते थे। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो मिसरी पर्वत वाली उसकी बात पर विश्वास करते थे। सूअरों को यह समझाने में खासी मेहनत करनी पड़ती थी कि ऐसी कोई जगह कहीं है नहीं।

सूअरों के सबसे अधिक निष्ठावान चेले थे मालगाड़ी में लगने वाले दोनों घोड़े— बहादुर और बिजली। ये दोनों खुद से कुछ भी नहीं सोच पाते थे। इसलिए सूअरों को उन्होंने अपना गुरु स्वीकार कर लिया। अपने गुरुओं से वे जो कुछ सीखते, दूसरों को आसान भाषा में सिखाने लगते। खेत की गुप्त बैठकों में बिना भूले आते और सबको 'भारत के जनावर' गीत गवाते। बाड़े की हर बैठक हमेशा इसी गीत के साथ समाप्त होती।

जिस बगावत के आसार दूर-दूर तक नहीं थे वह अचानक ही, उम्मीद से बहुत पहले और अनुमान से कहीं आसानी से हो गई। मुंगेरीलाल एक मेहनती और काबिल किसान था लेकिन पिछले कुछ वक्त से उसके बुरे दिन चल रहे थे। मुकदमे में पैसे गंवाने के बाद उसने बेतहाशा पीना शुरू कर दिया था। सारा-सारा दिन रसोईघर की अपनी कुर्सी पर वह पसरा रहता और कालू कौवे को शराब में डुबो कर रोटी के टुकड़े देता रहता। उसके नौकर-चाकर सुस्त और बेईमान थे। उसके खेतों में खर-पतवार उग आई थी। छत को मरम्मत की जरूरत थी, बाड़ें देखभाल मांगते थे और पशुओं को पूरा खाना नहीं मिल रहा था।

सितंबर आ चुका था। फसलें कटाई के लिए एकदम तैयार थीं। 24 सितंबर को शनिवार का दिन था। मुंगेरीलाल ने शहर जाकर इतनी शराब पी कि रविवार की दोपहर तक वापस नहीं आया। उसके नौकर सुबह-सुबह गायों को दुहने के बाद खरगोश का शिकार करने निकल गए। उन्हें इसकी रत्ती भर परवाह नहीं थी कि पशुओं को दाना-पानी भी देना है। शराब की उतरती खुमारी में मुंगेरीलाल वापस लौटा और जैसे-तैसे पलंग पर फैल गया। शाम उतर आई तो बगैर चारा-पानी के जानवर बिलबिला उठे, "अब बात बर्दाश्त के बाहर है!" एक गाय ने भंडारघर का दरवाजा अपनी सींग से तोड़ दिया और सारे पशुओं टूटे दरवाजे से भीतर घुस आए। जिसे जहां जो मिला, उसने खाना शुरू कर दिया। इस उठापटक से मुंगेरीलाल की आंख खुल गई। पलक झपकते ही वह और उसके चारों नौकर भंडारघर में पहुंच गए।

यहां तो जानवरों का भोजनालय चल रहा था। उनके हाथों में चाबुक थी। आते ही उन्होंने चारों तरफ कोड़े बरसाना शुरू कर दिया। भूखे-प्यासे पशु इससे ज्यादा बरदाश्त नहीं कर सके। पहले से कुछ भी तय नहीं था लेकिन कोड़ों की मार से बचने के लिए पशुओं ने एक साथ अत्याचारियों पर हमला बोल दिया। पांसा पलट गया। मुंगेरीलाल और उसके आदमियों ने अचानक पाया कि वे घिर चुके हैं। सब तरफ से उन पर लातों और सींगों की मार पड़ रही है। उन्होंने कभी अपने पशुओं को ऐसा बर्ताव करते नहीं देखा था। होता तो यही आया था कि जब उनके मन में आता, वे कोड़े फटकारते और सब प्राणी सिर झुकाए उसे बर्दाश्त करते। आज मामला ही दूसरा हो गया। मुंगेरीलाल व उसके नौकरों के होश उड़ गए। पांचों बाहर सड़क की तरफ भाग निकले और सामने से गुजरती घोड़ागाड़ी में चढ़ गए। जानवरों ने काफी दूर तक उनकी घोड़ागाड़ी का पीछा किया।

मुंगेरीलाल की पत्नी ने खिड़की से यह बगावत देखी। वह समझ गई कि खतरा एकदम सामने है। उसने भी एक थैला उठाया, फटाफट उसमें काम की कुछ चीजें ठूंसी और दबे पांव दूसरे रास्ते बाड़े से बाहर निकल गई। पशुओं ने मुंगेरीलाल और उसके आदमियों को खदेड़ देने के बाद लोहे का गेट भड़ाक से बंद कर दिया, और इस तरह, इससे पहले कि कोई समझ पाता बगावत भी हो गई और बगावती जीत भी गए। नरमादापुरा अब उनका अपना हो चुका था।

कुछ पल तो पशुओं को अपने नसीब पर भरोसा नहीं हुआ। फिर उन्होंने झुंड बना कर पूरे बाड़े का चक्कर लगाया कि कहीं कोई आदमी छुप कर तो नहीं बैठा है। फिर वे दौड़ते हुए मुंगेरीलाल के घर की तरफ आए। मुंगेरीलाल के क्रूर शासन का नामो-निशान मिटाना था। औजारघर का दरवाजा तोड़ा गया। वहां मिलीं अनगिनत लगामें, नकेलें, कुत्तों की जंजीरें, वे डरावने चाकू-छुरियां जिनसे मुंगेरीलाल सूअरों और मेमनों को बधिया किया करता था ताकि उन्हें मांस के लिए बेचा जा सके। इन सारी चीजों को अंधे कुएं में उछाल दिया गया। लगाम की रस्सियां, गलफासियां, घोड़ों की आंखों पर बांधी जानेवाली पट्टियां, अपमानजनक चाबुकें आदि को समेटकर आंगन में जल रही कूड़े की आग के हवाले कर दिया गया। यही हाल कोड़ों का हुआ। जब पशुओं ने कोड़ों को आग की लपटों में जलते देखा तो मारे खुशी के सब फुदकने लगे। गोलू ने उन रिबनों को भी आग के हवाले कर दिया जिनसे हाट-बाजार के दिनों में घोड़ों की गर्दन और पूंछों को सजाया जाता था।

उसने जोर से कहा, "रिबन को कपड़ों के समान माना जाना चाहिए, और कपड़े मनुष्य जाति की निशानी है। सभी पशुओं को नंगा रहना चाहिए।"

बहादुर ने यह सुना तो वह लपककर सूखे घास से बनी अपनी नन्ही टोपी ले आया और आग में झोंक दिया। इस टोपी से वह गर्मियों में मक्खियों से अपने कान बचाता था लेकिन जीत की उत्तेजना ऐसी थी कि सही-गलत कौन सोचता!

देखते-देखते वह सारा कुछ जलकर भस्म हो गया, जो मुंगेरीलाल की याद दिलाता था। उसके बाद राजा सबको भंडारघर में ले गया और उसने सबको मकई का दोगुना राशन दिया। कुत्तों को दो-दो बिस्किट मिले। फिर सबने मिलकर लगातार सात बार 'भारत के जनावर' गीत गाया। जब सब गा-गा कर थक गए तब कहीं जाकर सोने चले गए। आज जैसी नींद

उन्हें इससे पहले कभी नहीं आई थी।

अगली सुबह वे हमेशा की तरह उठे। रात घटी वह अनहोनी अचानक याद आई और वे चारागाह की तरफ लपके। चारागाह से थोड़ा ही आगे एक टेकरी थी जहां से लगभग पूरे बाड़े का नजारा दिखाई देता था। सभी इसी टेकरी पर चढ़ गए और सुबह की चमकती रोशनी में चारों तरफ निहारने लगे : हां, जहां तक अपनी नजर जाती है वह सब अब अपना है! वे भावुक हो कर गोल-गोल चक्कर खाने, हवा में उछलने-कूदने लगे, ओस से भींगी जमीन पर लोटने लगे। उन्होंने मुंह भर कर मैदान की मीठी घास खाई।

उन्होंने ढेर सारी काली मिट्टी हवा में उछाली और उसकी मदमस्त गंध अपने फेफड़ों में भरी। फिर सबने टोलियां बनाकर खेत, घास का मैदान, फलों का बगीचा, तालाब, उसके पास का छोटा-सा जंगल सबका गर्व से मुआयना किया, ऐसे जैसे इन जगहों को उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। उन्हें अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब कुछ उनका अपना है।

फिर सब कतारबद्ध मुंगेरीलाल के घर के दरवाजे पर आ कर चुपचाप खड़े हो गए जो अब उनका था। लेकिन वे भीतर जाने से डर रहे थे। एक-दो पल बाद गोलू और राजा ने अपने कंधों से धकेलकर घर का दरवाजा खोल दिया। सभी प्राणी एक-एक कर भीतर आ गए। वे सावधान थे कि कहीं कोई चीज उनसे अस्त-व्यस्त न हो जाए। वे बात भी फुसफुसा कर कर रहे थे। कमरे का वैभव देखकर उनकी आंखें चौंधिया रही थीं। पंख वाले गुदगुदे, गद्देदार बिस्तर, चमकते दर्पण, घोड़ों के बाल से बने सोफे, कश्मीर का कालीन, ड्राइंगरूम में टेबल पर रखी प्रधानमंत्री की तस्वीर - वे विस्मय से सब निहार रहे थे। बाहर निकले तो अचानक किसी का ध्यान गया कि रोजी साथ नहीं है। वे फिर भीतर गए। रोजी घर के सबसे अच्छे शयनकक्ष में, जिसमें एक बड़ा-सा आईना लगा था, ठिठकी खड़ी थी। उसने मुंगेरीलाल की पत्नी के श्रृंगार की मेज से एक नीला रिबन उठाकर अपने कंधे के पास लगा रखा था। सबने मिलकर उसे जोर से डांटा। रसोईघर में उन्हें सूअर का कुछ सूखा मांस टंगा मिला। उसे बाहर ला कर जमीन में गाड़ दिया गया। रसोई के कोठे पर रखे शराब के पीपों को बहादुर ने लात मारकर गिरा दिया। खड़े-खड़े ही सबकी राय बनी कि इस घर को संग्रहालय के रूप में सुरक्षित रखा जाए। सब इस बात से सहमत हुए कि कभी, कोई भी पशु इस घर में नहीं रहेगा।

फिर सबने मिलकर नाश्ता किया। गोलू और राजा ने सबको दोबारा जमा किया, "अब यह भी तो देखना है न भाइयो कि जनावरपुरा चलेगा कैसे!"

"मित्रो," गोलू ने कहा, "अभी साढ़े छह बजे हैं और हमारे सामने पूरा दिन पड़ा है। आज हम सूखी घास की फसल काटना शुरू करते हैं। लेकिन इससे पहले एक और मामला है जिसे हमें निबटाना है।"

अब सूअरों ने सबको राज की एक बात बताई कि पिछले तीन महीनों के दौरान उन्होंने रद्दी के ढेर में मिली मुंगेरीलाल के बच्चों की अक्षर ज्ञान की एक किताब से पढ़ना-लिखना सीख लिया है। राजा ने काले और सफेद रंग के डिब्बे मंगवाए और सबको मुख्य सड़क की तरफ जो गेट था, वहां ले गया। फिर गोलू ने (उसकी लिखाई अच्छी थी) अपने पैर की दो गांठों के बीच ब्रश थामा और गेट की ऊपर वाली पट्टी पर लिखे 'नरमादापुरा' पर रंग फेर कर,

उसकी जगह 'जनावरपुरा' लिख दिया, "अबसे इस बाड़े का यही नाम रहेगा!" गोलू और राजा ने एक सीढ़ी मंगवाई और उसे बड़े खेत की आखिरी दीवार के साथ सटा कर खड़ा कर दिया। उन्होंने सबको बताया कि पिछले तीन महीनों के अध्ययन के बाद उन्होंने 'पशुवाद के सात सिद्धांत' या कहें कि 'अटल धर्मादेश' बनाए हैं, "इन सात धर्मादेशों को हम आज ही दीवार पर लिख डालेंगे। ये धर्मादेश कभी न बदलने वाले कानून होंगे और जनावरपुरा के सभी पशुओं को मरते दम तक इनका पालन करना होगा।" बड़ी-बड़ी मुश्किल से (आखिर एक सूअर के लिए सीढ़ी पर संतुलन बनाए रखना कहां आसान होता है!) गोलू सीढ़ी पर चढ़ पाया और फिर उसने अपना काम शुरू कर दिया। भीम सबसे निचले पट्टे पर रंग का डिब्बा थामे खड़ा रहा और गोलू सधे हाथों से, बड़े-बड़े सफेद अक्षरों में सातों धर्मादेश लिखता गया- इतने बड़े और चमकीले कि दूर से पढ़ा जा सके।

सात धर्मादेश :

1- जो भी दो पैरों पर चलता है, वह शत्रु है।

2- जो भी चार पैरों पर चलता है या जिसके पंख हैं, वह मित्र है।

3- कोई भी पशु कभी कपड़े नहीं पहनेगा।

4- कोई भी पशु कभी बिस्तर पर नहीं सोएगा।

5- कोई भी पशु कभी शराब नहीं पीएगा।

6- कोई भी पशु कभी किसी दूसरे पशु को नहीं मारेगा।

7- सभी पशु बराबर हैं।

सब कुछ बिलकुल साफ-साफ व शुद्ध लिखा गया था। सिर्फ 'मित्र' की जगह 'मितर' लिखा गया था और एक जगह 'ग' उलटा था। गोलू ने ऊंची आवाज में सातों धर्मादेश पढ़कर सुनाए। सबने सुना, सबने पूर्ण सहमति में अपनी मुंडियां हिलाईं। जो ज्यादा समझदार थे, उन्होंने तत्काल ही धर्मादेशों को कंठस्थ करना शुरू कर दिया।

"साथियो," गोलू ने कहा, "अब सूखी घास की तरफ कूच करो। हम साबित कर देंगे कि मुंगेरीलाल और उसके नौकर जितना समय लगाते थे हम उससे कम समय में अच्छी तरह फसल काट सकते हैं।"

बात पूरी हुई ही थी कि तभी तीन गायों ने बड़ी जोर से आवाज लगाई। वे काफी देर से बेचैन थीं। पिछले चौबीस घंटे से किसी ने उनका दूध दुहा नहीं था। उनके थन फटने-फटने को थे। थोड़ी देर सोचने के बाद सूअरों ने बाल्टियां मंगवाईं और सफलतापूर्वक गायों को दुह लिया। झागदार, मलाईदार दूध से भरी पांच बाल्टियां सामने थीं। कई पशु उन बाल्टियों को बड़ी हसरत से निहार रहे थे। "इतने सारे दूध का क्या किया जाएगा?" किसी ने पूछा।

"मुंगेरीलाल कभी-कभी थोड़ा-सा दूध हमारे दाने में मिला दिया करता था," मुर्गियों में से एक ने धीरे से कहा।

"दूध की चिंता छोड़ो साथियो," राजा चिल्लाया और बाल्टियों के सामने आ खड़ा हुआ, "इसे भी ठिकाने लगा दिया जाएगा लेकिन साथियो, फसल ज्यादा जरूरी है। भाई गोलू आपको रास्ता दिखाएगा। मैं पीछे-पीछे आ ही रहा हूं। आगे बढ़ो मित्रो, सूखी घास आपका इंतजार कर रही है।"

सभी सूखी घास की तरफ कूच कर गए। शाम को जब वे वापस लौटे तो दूध गायब था।

उन्होंने सूखी घास काटने के लिए जम कर मेहनत की, खून-पसीना एक कर दिया। उनकी मेहनत रंग भी लाई। फसल उनकी उम्मीदों से कहीं अधिक हुई।

मुश्किलें तो कई आईं। उनके पास जो औजार थे वे आदमियों के इस्तेमाल के लिए बनाए गए थे, पशुओं के नहीं। पिछली दो टांगों पर खड़े होने की जरूरत पड़े वैसे औजार कोई भी पशु इस्तेमाल नहीं कर पाता था। लेकिन सूअर इतने चतुर थे कि हर मुश्किल का कोई-न-कोई हल ढूंढ निकालते थे। घोड़े खेत के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे। निराई-कटाई में वे मुंगेरीलाल और उसके नौकरों से भी ज्यादा माहिर थे। लेकिन एक बात थी कि सूअर कोई काम नहीं करते थे। वे दूसरों को काम बताते और काम करने वालों की निगरानी करते।

बहादुर और बिजली ने कटाई मशीन संभाल ली। जरूरत के मुताबिक वे घोड़ागाड़ी में भी जुत जाते थे (अलबत्ता अब चाबुक या कोड़ों की कोई जरूरत नहीं रह गई थी)। वे हल भी खींचते थे। उनके पीछे-पीछे एक सूअर चलता और 'और तेज साथियो' या 'शाबाश मित्रो!' जैसी आवाजें निकालता रहता। हर प्राणी घास काटने और बटोरने में लग गया। मुर्गियां और बत्तखें भी तपती धूप में दिन-भर चल-चल कर कड़ी मेहनत करतीं और अपनी चोंच में घास के नन्हे-नन्हे तिनके लातीं-ले जातीं। काम पूरा करने में इन्हें मुंगेरीलाल और उसके नौकरों की तुलना में दो दिन कम ही लगे। बाड़े ने इतनी फसल आज तक नहीं देखी थी। रत्ती भर बरबादी नहीं हुई। मुर्गियों और बत्तखों ने अपनी तेज निगाहों से आखिरी तिनका तक बीन लिया था। किसी भी पशु ने एक मुंह-भर भी अनाज की चोरी नहीं की।

कटाई का काम घड़ी की सुइयों की तरह चलता रहा। पशु खुश थे। अन्न के एक-एक निवाले से उन्हें बेहद संतोष व खुशी हो रही थी। यह उनका अपना अन्न था। इसे उन्होंने अपनी मेहनत से, अपने लिए उगाया था। किसी क्रूर और कंजूस मालिक ने उन्हें यह मजदूरी में नहीं दिया था। दो कौड़ी के परजीवी आदमी के चले जाने के बाद उनमें से हरेक के पास खाने के लिए पर्याप्त था। काम के अनघड़ तरीकों के बावजूद अब उनके पास ज्यादा फुर्सत थी। तकलीफें कई तरह की आईं। जब मकई की फसल काटने का समय आया तो उन्हें कटाई का तरीका मालूम ही नहीं था और भूसी निकालने के लिए फूंक मार-मार कर काम चलाना पड़ा था। बाड़े में कचरा निकालने की कोई मशीन नहीं थी। लेकिन सूअर अपनी अक्लमंदी से और बहादुर अपनी गजब की ताकत से हर काम पूरा कर ही लेते थे।

बहादुर सबकी आंखों का तारा था। वह मुंगेरीलाल के साथ था तब भी कठोर मेहनती था। अब तो लगता था मानो उसमें तीन घोड़ों की ताकत आ गई है। ऐसे भी दिन बीतते जब लगता कि जनावरपुरा का सारा काम, उसी अकेले के मजबूत कंधों पर आ गया हो। सुबह

से रात तक वह लगा ही रहता। कभी कुछ धकेलता हुआ, तो कभी कुछ खींचता हुआ। जहां भी होता मुश्किल काम वहीं मिलता बहादुर। उसने एक युवा मुर्गे के साथ यह पक्का किया था वह उसे दूसरों से आधा घंटा पहले जगा दिया करेगा ताकि वह दूसरों के बचे काम भी निबटा ले। हरेक समस्या, हरेक बाधा के लिए उसका एक ही जवाब होता : "मैं और ज्यादा मेहनत करूंगा!" यह उसका निजी संकल्प था।

लेकिन यह भी सच था कि जनावरपुरा का हर प्राणी इन दिनों अपनी पूरी क्षमता से काम कर रहा था। मुर्गियों और बत्तखों ने फसल के दौरान इधर-उधर बिखरे दाने बीन-बीन कर कोई पांच गोनी मकई बचाई। किसी ने चोरी नहीं की। किसी ने भी खुराक की शिकायत नहीं की। पुराने दिनों के झगड़े, चुगलखोरियां, जलना-भुनना, जो तब सामान्य था, अब कहीं खोजे नहीं मिलता था। कोई भी या कहें लगभग कोई भी नहीं था कि जो काम से जी चुराता था। रोजी सुबह जल्दी उठने की आदी नहीं थी। वह यह कह कर काम जल्दी छोड़ कर आ जाती कि उसके खुर में कोई कंकड़ फंस गया है। बिल्ली का व्यवहार भी कुछ अजीब-सा था। जल्दी सबको पता लग गया कि जब भी कोई काम करने की बात होती है, तो बिल्ली कहीं नजर ही नहीं आती। वह घंटों गायब हो जाती। खाने के वक्त या एकदम शाम को, जब सारा काम निबट जाता, वह वापस पहुंचती थी। लौट कर ऐसा जताती जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसके पास बहाने एक-से-बढ़ कर-एक हुआ करते और उन बहानों को वह इतने प्यार से घुरघुरा कर बताती कि उस पर कोई अविश्वास करे तो कैसे! बेचारा बबलू गधा बगावत के बाद भी गधा ही रहा। जैसे वह तब काम किया करता था, आज भी वैसे ही करता था : धीमे-धीमे, अड़ियल टट्टू की तरह! वह काम से जी नहीं चुराता था लेकिन कभी आगे बढ़कर काम लेता भी नहीं था। यह पूछे जाने पर कि क्या वह मुंगेरीलाल के वक्त से अब ज्यादा खुश है, वह इतना ही कहता : "केवल गधे ही लंबे समय तक जीते हैं। क्या आपने आज तक कोई मरा हुआ गधा देखा है?" अब इस जवाब का रहस्य कौन समझे!

रविवार के दिन छुट्टी रहती। तब नाश्ता सामान्य दिनों की तुलना में एक घंटा देर से मिलता और नाश्ते के बाद बिना भूले हर हफ्ते उत्सव मनाया जाता। सबसे पहले झंडा फहराया जाता। गोलू को औजारघर से श्रीमती मुंगेरीलाल का एक पुराना, हरे रंग का दुपट्टा मिल गया था। उसने उस पर सफेद रंग में एक खुर और सींग का आकार बना दिया और बाड़े के बगीचे में हर रविवार की सुबह यही ध्वज डंडे पर चढ़ाकर फहराया जाता। गोलू ने स्पष्ट किया : "झंडा इसलिए हरा है क्योंकि यह भारत के हरे-भरे खेतों का प्रतीक है। इस पर बने खुर और सींग पशुओं के उस भावी गणतंत्र की ओर इशारा करते हैं जब मनुष्य जाति को पूरी तरह खदेड़ दिया जाएगा।" झंडा फहराने के बाद सभी पशु बड़े खेत में मार्च करते हुए आमसभा के लिए इकट्ठा होते। इसे वे पशु-चौपाल कहते थे। इसी चौपाल में अगले सप्ताह के कामों की पूरी योजना बनाई जाती, संकल्प तय किए जाते और उन पर बहस होती। हमेशा सूअर ही सबके सामने संकल्प रखते थे। प्राणियों ने हाथ उठाकर वोट देना तो सीख किया था लेकिन अपनी तरफ से कोई संकल्प रखने की बात अभी सोच भी नहीं पाते थे। गोलू और राजा यहां की बहसों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते। लेकिन यह बात सभी प्राणियों को अब धीरे-धीरे समझ में आने लगी थी कि वे दोनों कभी एक-दूसरे से सहमत नहीं होते

थे। अगर एक सुझाव रखता, तो दूसरा हर हाल में उसका विरोध करता।

यह संकल्प किया गया कि फलों के बगीचे के पीछे एक छोटा-सा बाड़ा उन पशुओं के लिए आरामघर के रूप में बनाया जाएगा जो काम करने की उम्र पार कर चुके हैं। इस पर किसी को क्या एतराज हो सकता था लेकिन इस पर भी धुआंधार बहस हो गई। मुद्दा यह बना कि प्राणियों की प्रत्येक जाति के लिए सेवानिवृत्ति की सही उम्र क्या होगी? हर बैठक हमेशा ही 'भारत के जनावर' गीत के गायन के साथ समाप्त होती। फिर दोपहर में मनोरंजन।

सूअरों ने औजार रखने वाले कमरे को अपना मुख्यालय बना लिया। शाम के वक्त वे सब बढ़ईगीरी, लुहारगीरी और दूसरी जरूरी कलाओं का अध्ययन उन किताबों से करते थे जो वे मुंगेरीलाल के घर से उठा लाए थे। गोलू ने खुद को दूसरे पशुओं को संगठित करने और पशु समिति बनाने में व्यस्त कर लिया था। वह इस काम में अथक जुटा रहता। उसने मुर्गियों के लिए अंडा उत्पादन समिति, जंगली पशु पुनर्शिक्षा समिति (इसका उद्देश्य चूहों और खरगोशों को पालतू बनाना था), भेड़ों के लिए सफेद ऊन आंदोलन और इस तरह की कई समितियां बनाईं थीं। उसने स्कूल भी शुरू किया। लेकिन उसकी लगभग सारी परियोजनाएं टांय-टांय फिस्स हो गईं। जंगली जीव-जंतुओं को पालतू बनाने की समिति तो कभी शुरू ही नहीं हो पाई। बिल्ली पुनर्शिक्षा समिति में शामिल हो गई और कुछ दिनों तक उसने बहुत उत्साह से काम भी किया। एक दिन वह छत पर बैठी कुछ गौरैयों से बात कर रही थी। गौरैयाएं बिल्ली की पहुंच से जरा-सी बाहर बैठी थीं। बिल्ली उन चिड़ियों को बता रही थी कि अब सभी पशु-पक्षी मित्र हैं और कोई भी गौरैया उसके पंजे पर आकर बैठ सकती है। लेकिन गौरैयों ने अपनी दूरी बनाए रखी। आगे बिल्ली को ऐसी पढ़ाई करते किसी ने नहीं देखा। अलबत्ता, पढ़ने-लिखने की कक्षाएं खूब सफल रहीं। शरद ऋतु के आते-आते बाड़े का हर प्राणी कुछ हद तक साक्षर हो चुका था।

सूअर तो पहले से ही धड़ल्ले से पढ़-लिख सकते थे। कुत्तों ने पढ़ना सीख तो लिया था लेकिन वे सात धर्मादिशों के अलावा और कुछ भी सीखना नहीं चाहते थे। कमली बकरी कुत्तों से थोड़ा बेहतर पढ़ लेती थी। कई बार शाम के वक्त वह कचरे में से मिले अखबार पढ़कर दूसरों को सुनाती थी। बबलू गधा सूअरों की ही तरह पढ़ सकता था लेकिन उसने कभी इस बात को जताया नहीं। उसका कहना था : जहां तक मैं जानता हूं, दुनिया में कुछ भी पढ़ने लायक नहीं है। बिजली ने पूरी वर्णमाला सीख ली लेकिन वह संयुक्ताक्षरों को पहचानने में भूल कर जाती थी। बहादुर 'ई' से आगे नहीं बढ़ पाया। कभी-कभी अपने सिर के आगे के बाल हिला कर, अपने दिमाग पर पूरा जोर डाल कर वह याद करने की कोशिश करता कि इसके बाद क्या आता है लेकिन क्या करे, उसे याद ही नहीं आता। रोजी ने अपना नाम लिखना-पढ़ना सीख लिया और बाकी कुछ भी सीखने से इंकार कर दिया। वह टहनियां जोड़ कर बड़ी सफाई से अपने नाम के अक्षर बनाती, उन्हें फूलों से सजाती और फिर खुश होकर उसके चारों तरफ चक्कर काटती रहती।

बाकी प्राणियों में कोई भी 'अ' से आगे नहीं पहुंच पाया। भोंदू किस्म के प्राणी, जैसे भेड़ें, मुर्गियां और बत्तखें लिखना- पढ़ना तो दूर, सात धर्मादिश भी नहीं रट पा रहे थे। बहुत सोच-विचार के बाद गोलू ने रास्ता निकाला और इन सात धर्मादिशों को एक ही सूत्र में पिरो

दिया : चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब। वह बोला : इस एक सूत्र में पशुवाद का आवश्यक सिद्धांत आ जाता है। जो भी इसे अच्छी तरह ग्रहण कर लेगा, वह आदमियों के प्रभाव से बचा रहेगा। शुरू-शुरू में पक्षियों ने इस पर आपत्ति की क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी भी दो ही टांगें हैं। लेकिन गोलू ने सिद्ध कर दिया कि ऐसा नहीं है : "साथियो, चिड़ियों के पर फड़फड़ाने वाले यानी शरीर को आगे ले जाने वाले अंग हैं न कि स्वार्थ साधने के हथियार। इसलिए उन्हें पैर ही माना जाना चाहिए। आदमी की खास निशानी तो उसके हाथ हैं जिनसे वह दुनिया भर में छल-कपट करता है।" पक्षियों को गोलू की यह भारी-भरकम बात समझ में तो नहीं आई लेकिन उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। सभी छोटे, निरीह प्राणियों ने इस नये सूत्र को रटना शुरू कर दिया : चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब! फिर यह भी हुआ कि बड़े खेत की आखिरी दीवार पर, 'सात धर्मादेश' के ऊपर, बड़े-बड़े अक्षरों में यह सूत्र खुदवा दिया गया। एक बार इसे कंठस्थ कर लेने के बाद भेड़ों में इस सूत्र के लिए खासा प्रेम उमड़ा। वे अक्सर खेतों में पड़े-पड़े अचानक मिमियाने लगतीं : चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब!.. . चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब! वे इसे घंटों गातीं और कभी नहीं थकतीं।

राजा को गोलू की समितियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसका कहना था कि बड़े हो चुके प्राणियों के लिए कुछ करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है बच्चों की पढ़ाई-लिखाई। हुआ यह कि राजू और भूरी, इन दो कुत्तों ने सूखी घास की फसल-कटाई के तुरंत बाद पिल्ले जने। दोनों ने कुल मिलाकर नौ तगड़े पिल्लों को जन्म दिया। उनका दूध छुड़ाए जाते ही राजा पिल्लों को उनकी मां से यह कहते हुए ले गया कि वह उनकी पढ़ाई-लिखाई की जिम्मेदारी उठाएगा। वह उन्हें औजार-कक्ष में उस मचान पर ले गया जहां केवल एक सीढ़ी द्वारा ही चढ़ा जा सकता था। उसने बच्चों को ऐसे एकांत में रखा कि बाड़े के उन्हें लोग जल्द ही भूल गए।

रोज का दूध कहां गायब हो जाता है, इसके रहस्य से भी जल्दी ही परदा उठ गया। इसे रोज सूअरों के दाना-पानी में मिलाया जाने लगा था। मौसम के शुरू के संतरे अब पकने लगे थे। बगीचे की घास अपने आप गिरने वाले संतरों से पटी पड़ी थी। सभी पशु यह मान कर चल रहे थे कि ये संतरे सब में बराबर-बराबर बांट दिए जाएंगे। लेकिन उस दिन एक नया आदेश जारी हुआ : नीचे गिरे संतरों को कोई ऐसे ही न उठा ले। उन्हें इकट्ठा करें और औजार-कक्ष में सूअरों के इस्तेमाल के लिए पहुंचा दिया जाए। कुछ पशु भुनभुनाए जरूर लेकिन अब भुनभुनाने का कोई फायदा नहीं था। सभी सूअर, यहां तक कि गोलू और राजा भी इस एक मुद्दे पर पूरी तरह सहमत थे। भीम को दूसरों को समझाने-मनाने के लिए भेजा गया, जिसने अपना काम सफलतापूर्वक पूरा किया।

"मित्रो", वह चिल्लाया, "आप यह तो नहीं सोच रहे कि हम सूअर स्वार्थी हैं और अपने लिए सुविधाएं बटोर रहे हैं? सच तो यह है दोस्तो कि हममें से कई सूअरों को दूध और संतरे पसंद ही नहीं हैं। मैं खुद भी इन्हें नापसंद करता हूं। लेकिन हम दवा की तरह इसे लेते हैं ताकि हमारी सेहत अच्छी रहे और हम बाड़े की सेवा कर सकें। दूध और संतरों में सूअरों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी माने जाने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं, विज्ञान ने इसे सिद्ध किया है। हम सूअरों को बड़े दिमागी काम करने पड़ते हैं। आपके पूरे बाड़े की व्यवस्था और इसका संगठन सब हम पर ही तो निर्भर है। हम दिन-रात आपके

कल्याण के लिए काम करते हैं। हम तो दरअसल आप लोगों की भलाई के लिए वह दूध पीते हैं और संतरे खाते हैं। आप जानते हैं कि यदि हम सूअर अपने कर्तव्य में चूक जाएं तो क्या होगा?" कोई सोचता और कुछ कहता इससे पहले भीम ने आवाज ऊंची की, नाटकीय स्वर में बोला : "मुंगेरीलाल वापस आ जाएगा; हां,हां मुंगेरीलाल वापस आ जाएगा!! ऐसा हो सकता है, बिलकुल हो सकता है।" वह जोर-जोर से फुदकने लगा। उसकी पूंछ तेजी से हिलने लगी, "क्या आपमें से कोई है कि जो चाहता है कि मुंगेरीलाल वापस आ जाए?" कोई नहीं चाहता था, यह तो पक्की बात थी।

सभी सहमत थे कि दूसरा कुछ भी हो लेकिन मुंगेरीलाल की वापसी नहीं होनी चाहिए। सूअरों की अच्छी सेहत की जरूरत सबके सामने एकदम साफ हो चुकी थी। इसलिए बहस बंद हो गई। तय हुआ कि दूध और नीचे गिरे हुए संतरे (और पक जाने पर संतरों की मुख्य फसल भी) सिर्फ सूअरों के लिए आरक्षित रखे जाएंगे।

गर्मियों के बीतते-बीतते बगावत का समाचार लगभग आधे देश में फैल चुका था। गोलू और राजा कबूतरों को आस-पास के इलाकों में उड़ान पर भेजते। उनका काम था पास-पड़ोस के बाड़ों में पशुओं से मिलना-जुलना, उन्हें बगावत की कहानी सुनाना और 'भारत के जनावर' की धुन सिखाना।

मुंगेरीलाल अपना ज्यादातर समय शहर की शराब की दुकान 'रसवंती' में गुजार रहा था। उसे जो भी मिलता, उसी के सामने वह अपना दुखड़ा रोने लगता कि किस तरह कुछ निकम्मे पशुओं के झुंड ने उसे उसकी संपत्ति से बेदखल कर दिया है। कुछ किसानों ने शुरू-शुरू में उससे सहानुभूति रखी लेकिन मदद के लिए कोई आगे नहीं आया। उल्टा, उनमें से हर एक के मन में एक बार तो यह विचार आ ही जाता कि कैसे वे मुंगेरीलाल के दुर्भाग्य को अपने सौभाग्य में बदल लें। यह तो गनीमत थी कि जनावरपुरा के दोनों तरफ के बाड़ों के मालिकों की आपस में नहीं पटती थी। इनमें से एक बाड़े का नाम रामपुरा था। यह लंबा-चौड़ा, वीरान, पुराने टाइप का बाड़ा था। जहां-तहां झाड़-झंखाड़ उगे हुए थे। चारागाहों में कुछ उगता नहीं था और सरहद बनाने के लिए उगाई गई बाड़ें भी दयनीय हालत में थीं। इस बाड़े के मालिक का नाम सुलतान था। वह आरामपसंद भलामानस किसान था। वह अपना ज्यादातर वक्त मौसम के हिसाब से मछली मारने या शिकार करने में गुजारता था। दूसरा बाड़ा रंगपुरा कहलाता था। वह बाड़ा छोटा और साफ-सुथरा था। रसराज नाम का इसका मालिक कठोर और भ्रष्ट था। हमेशा मुकदमेबाजी में उलझा रहता। उसके बारे में मशहूर था कि वह मुश्किल-से-मुश्किल सौदे आसानी से पटा लेता है। ये दोनों एक-दूसरे को फूटी-आंख नहीं सुहाते थे।

लेकिन दोनों ही नरमादापुरा में हुई बगावत से डरे हुए थे। उन्हें चिंता लगी रहती कि कहीं उनके पशु भी इस बारे में ज्यादा कुछ न जान लें। शुरू में तो उन्होंने बगावत की इस खबर को ही हंसी में उड़ा दिया था कि पशु अपना बाड़ा कैसे चला सकते हैं : "अरे देखना, पूरा मामला आठ-दस दिन में निबट जाएगा।" उन्होंने ही यह खबर भी उड़ाई कि नरमादापुरा में (आखिर पशुबाड़ा या जनावरपुरा जैसे नाम उन्हें कैसे बर्दाश्त होते!) सभी मर-कट रहे हैं। वहां भुखमरी की हालत बन रही है। जब थोड़ा वक्त गुजरा और ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, तो सुलतान और रसराज ने अपना राग बदल दिया और कहने लगे कि जनावरपुरा में भयानक चरित्रहीनता और दुष्टता का राज है। वहां जानवर एक-दूसरे को मार कर खा रहे हैं, लाल-गर्म सलाखों से एक-दूसरे को दाग रहे हैं, और उन सबकी मादाएं 'सार्वजनिक' हैं। सब उनका मिल-जुलकर उपभोग कर रहे हैं। सुलतान और रसराज का कहना था : प्रकृति के नियम के खिलाफ बगावत करोगे तो यही सब भुगतना पड़ेगा!

लेकिन जनावरपुरा एक अचंभे की तरह बना था, बना रहा। वह एक ऐसी जंग का नमूना बना रहा जहां से इंसानों को खदेड़ कर, पशु अपनी सारी व्यवस्था खुद चला रहे हैं। झूठ-मूठ की अफवाहों के बावजूद पूरे साल बगावत की कहानी की लहरें दूर-दराज के इलाकों में बहती रहीं। नतीजा यह हुआ कि सांड, जिन्हें हमेशा से पालतू और आज्ञाकारी समझा जाता था, अचानक बिगड़ैल हो गए। भेड़ों ने बाड़े तोड़ दिए और घास की फसल खोद डाली। गायों ने लात मार कर बाल्टियां उलट दीं। शिकार पर जाते घोड़ों ने अपने सवारों की बात मानने से ही इंकार ही नहीं कर दिया बल्कि उन्हें ही उछाल कर परे फेंक दिया। सबसे बड़ी बात यह हुई कि 'भारत के जनावर' की धुन और उसके बोल हर जगह, हर की जबान पर चढ़ गए। मनुष्य इस गीत को सुनते तो गुस्से से बेकाबू हो जाते हालांकि बाहर से सब यही दिखाते कि यह सब बकवास है : आखिर पशु नफरत से भरे बेतुके गीत गाने की हिम्मत कैसे कर रहे हैं?" यदि उनके यहां कोई पशु इसे गाता पाया जाता तो उसे तुरंत कोड़ों से धुन दिया जाता। इन सबके बावजूद गीत था कि दबाए नहीं दब रहा था। कोयलें झाड़ियों में छुप कर इसे कूकतीं, कबूतर पीपल के पेड़ों पर गुटर-गूं करके इसे गाते। यह लुहार के यहां के शोरगुल में जा मिला तो मंदिर की घंटियों की गूंज का हिस्सा बन गया। कमजोर दिल वालों ने इसे सुना तो डर से कांपने लगे। उन्हें इस गीत में अपनी कयामत सुनाई देने लगी।

अक्तूबर महीने में, जब मकई की फसल काट कर खलिहान में पहुंचाई जा चुकी थी और उसमें से कुछ के दाने भी निकाले जा चुके थे, कबूतरों का एक झुंड पंख फड़फड़ाते आया और उत्तेजना भरी आवाज में बताने लगा कि मुंगेरीलाल और उसके सभी नौकर-चाकर, रामपुरा और रंगपुरा के छह आदमियों को साथ लेकर हमारे लोहे के गेट तक आ पहुंचे हैं और घर की तरफ वाली कच्ची सड़क से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा : मुंगेरीलाल के सिवा सबके हाथों में लाठियां हैं। मुंगेरीलाल बंदूक थामे आगे-आगे चल रहा है। इसमें शक नहीं कि वे हमला कर बाड़े पर फिर से कब्जा करने आ रहे हैं।

इसकी आशंका पहले से थी और जनावरापुरा वालों ने सारी तैयारियां कर रखी थीं। गोलू सुरक्षात्मक हमले के लिए तैयार था। उसने मुंगेरीलाल के घर में पड़ी उस पुरानी किताब में से छत्रपति शिवाजी की मुहिमों का अध्ययन जो कर रखा था! उसने फटाफट आदेश दिए और देखते-देखते सभी प्राणी अपनी-अपनी जगह तैनात हो गए। जैसे ही आदमी घर के पास

पहुंचे, गोलू ने पहला हमला बोल दिया। सभी कबूतर, जिनकी संख्या पैंतीस थी, आदमियों के सिरों के ऊपर उड़ते हुए उन पर बीट करने लगे। आदमी जब तक इनसे निबटते, झाड़ियों में छुपी बत्तखों ने हमला बोल दिया। पांव की पिंडलियों पर चोंचें मार-मार कर उनने आदमियों को बेहाल कर दिया। लेकिन थी तो यह हल्की-फुल्की झड़प ही। आदमियों ने बत्तखों को लाठियों से मार कर दूर हांक दिया। सेनापति गोलू की दूसरी पंक्ति ने अब हमला बोला। सबसे आगे गोलू के नेतृत्व में कमली बकरी, बबलू गधा और सभी भेड़ें तेजी से आदमियों की तरफ बढ़े। उन्होंने सब तरफ से आदमियों को घेर लिया। फिर धक्के और टक्करें मारी जाने लगीं। बबलू गधा तेजी से घूम-घूम कर लातें झाड़ने लगा। बाजी पलटती कि एक बार फिर आदमियों ने अपनी लाठियों और लोहे जड़े जूतों का जोर दिखाया और पशुओं को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। फिर गोलू की चीत्कार सुनाई दी। यह मैदान छोड़ने का पहले से तय संकेत था। सभी जानवर पीछे मुड़े और बाड़े की ओर भाग गए।

आदमियों ने विजय का सिंहनाद किया। दुश्मनों के छक्के छूट गए थे। वे उनके पीछे दौड़ पड़े। यही सेनापति गोलू की चाल थी। जैसे ही वे बाड़े में पहुंचे, तीन घोड़े, तीन गाएं और बाकी सूअर, जो तबेले में घात लगाकर छिपे बैठे थे, पीछे से निकल आए। गोलू ने हमले का इशारा किया। वह खुद मुंगेरीलाल की तरफ लपका। मुंगेरीलाल ने अपनी बंदूक उठाई और दनादन गोलियां दाग दीं। एक गोली गोलू की पीठ को खरोंचती, खूनी लकीरें बनाती निकली और सामने की भेड़ को जा लगी। वह वहीं मर गई। लेकिन बिना एक पल गंवाए गोलू ने अपना सौ किलो का पूरा बदन मुंगेरीलाल की टांगों से भिड़ा दिया। यह तो जैसे टैंक का हमला था। मुंगेरीलाल गोबर की एक ढेरी पर गिर पड़ा। बंदूक उसके हाथों से छिटक गई और तभी बहादुर सामने आया। वह पिछली दो टांगों पर खड़ा, लोहे की नाल जड़े विशाल पांवों से लगातार वार कर रहा था। सब भयभीत उसे देख रहे थे। उसका पहला वार रंगपुरा की घुड़साल में काम करने वाले छोकरे के सिर पर लगा। वह वहीं कीचड़ में लोट गया - एकदम निर्जीव! यह नजारा देखते ही कई आदमियों ने अपनी लाठियां फेंकी और भागने लगे। फिर तो भगदड़ मच गई। सारे पशु उन्हें दौड़ाने लगे। किसी को सींग भोंके गए, किसी को दुलत्तियां पड़ीं, किसी को मुंह से काट खाया गया और कई पैरों तले रौंद डाले गए। बाड़े का कोई पशु ऐसा नहीं था जिसने अपने तरीके से बदला न चुकाया हो। यहां तक कि बिल्ली भी अचानक छत से एक ग्वाले के कंधे पर कूदी और अपने पंजे उसकी गर्दन में गड़ा दिए। ग्वाला भयंकर चीखा। जब बाहर जाने का रास्ता सामने साफ दिखा तो हर आदमी सिर पर पांव रख कर भाग चला और भागते-भागते बड़ी सड़क तक जा पहुंचा। इस तरह आदमी अपने हमले के पांच मिनट के भीतर ही कायरों की तरह मैदान से भागते नजर आए। लेकिन भागते दुश्मनों को भी किसी ने छोड़ा कहां- बत्तखों का झुंड फुफकारता, उनकी पिंडलियों पर चोंचें मारता अंत तक उन्हें खदेड़ता ही रहा।

एक को छोड़ कर सब भाग गए। पीछे मैदान में बहादुर अपनी नालों से जमीन खोद रहा था, साथ ही कीचड़ में औंधे पड़े छोकरे को सीधा करने की कोशिश भी कर रहा था। लड़का निर्जीव पड़ा था।

"यह मर चुका है," बहादुर ने दुखी होते हुए कहा, "ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं भूल गया था कि मैंने पांव में लोहे की नाल लगा रखी है। कौन विश्वास करेगा

कि मैंने यह जान-बूझ कर नहीं किया है!"

"भावुक होने की जरूरत नहीं है दोस्त!," गोलू चिल्लाया। उसके जख्मों से अभी भी खून रिस रहा था, "युद्ध युद्ध ही होता है। अच्छा आदमी केवल वही है जो मर चुका है।"

"मेरा इरादा किसी की भी, यहां तक मनुष्य की भी जान लेने का नहीं था," बहादुर ने अपनी बात दोहराई। उसकी आंखें सचमुच आंसुओं से डबडबाई थीं।

"रोजी कहां है?", किसी ने चौंक कर पूछा।

रोजी गायब थी। एक पल के लिए तो खलबली मच गई। कहीं आदमियों ने उसे कोई नुकसान तो नहीं पहुंचाया... कहीं वे उसे अपने साथ ही तो नहीं ले गए? चिंता भी हुई और खोज भी। आखिर में वह अपने तबेले में छुपी पाई गई। बंदूक चलते ही वह भागती हुई यहां आ छिपी थी। रोजी को ढूंढ लेने के बाद जब सब वापस आए तो देखा कि घुड़साल वाला छोकरा मरा नहीं था, बेहोश भर हुआ था और मौका पाकर भाग भी चुका था।

बाड़े में चरम उत्तेजना फैली थी। हर कोई दूसरे से अपनी बहादुरी के किस्से बखान करने में लगा था। फिर बिना किसी तैयारी के विजयोत्सव मनाया गया। ध्वजारोहण किया गया और एक नहीं, कई-कई बार 'भारत के जनावर' गीत गाया गया। फिर मारी गई भेड़ का पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उसकी समाधि पर कंटीली घास का एक पौधा भी लगाया गया। समाधि के पास गोलू ने छोटा-सा भाषण भी दिया जिसमें इसी बात पर जोर दिया गया था कि जरूरत पड़ने पर सभी पशु जनावरपुरा के लिए मरने को तैयार रहेंगे।

पशुओं ने सर्वसम्मति से तीन सैनिक पुरस्कारों की घोषणा की : 'परमवीर', 'अपूर्व वीर' और 'वीर'! और लड़ाई के मैदान में खड़े-खड़े ही पहला 'परमवीर' सम्मान गोलू और बहादुर को प्रदान किया गया। यह पीतल का एक पदक था जो मुंगेरीलाल के खजाने से निकाल लाया गया था। घोषणा की गई कि गोलू और बहादुर हर रविवार और छुट्टी के दिनों में इसे धारण करेंगे। 'वीर' सम्मान मरणोपरांत शहीद भेड़ को प्रदान किया गया।

फिर बात यह निकली कि इस लड़ाई को नाम क्या दिया जाए? तय पाया गया कि हम इसे 'तबेले की लड़ाई' नाम देते हैं और यह हमारे इतिहास में दर्ज किया जाएगा। मुंगेरीलाल की बंदूक भी जनावरपुरा की फौज के हाथ लगी, जो वहीं कीचड़ में पड़ी मिली। यह भी पता चला कि मुंगेरीलाल के घर में गोलियों का भंडार रखा है। फैसला हुआ कि इस बंदूक को झंडे के चबूतरे के पास, हथियारों की तरह सजा कर रखा जाए और इसे साल में दो बार, एक बार 12 अक्टूबर को 'तबेले की लड़ाई' की वर्षगांठ पर और दूसरी बार 24 जून को 'बगावत की वर्षगांठ' पर चलाया भी जाएगा।

सर्दियों के नजदीक आने के साथ-साथ रोजी के नखरे बढ़ने लगे। देर से उठना, काम पर देर से पहुंचना, बार-बार बीमार पड़ना लेकिन

भर पेट खाना खाना वगैरह रोज की बात बन गई। वह किसी-न-किसी बहाने भाग कर तालाब पर चली जाती। तालाब के पानी में अपनी परछाईं निहारती रहती। लेकिन एक अफवाह थी जो फैल रही थी। एक दिन जैसे ही रोजी मस्ती में टहलती, अपनी लंबी पूंछ मटकाती सूखी घास का डंठल चबाती खेत में घुसी, बिजली उसके साथ हो ली।

"रोजी," उसने कहा, "मुझे तुमसे एक गंभीर बात करनी है। आज मैंने तुम्हें जनावरपुरा और रंगपुरा को अलग करने वाली झाड़ी के पार झांकते देखा। 'रसराज' का एक आदमी झाड़ी की उस तरफ खड़ा हुआ था। मैं काफी दूर थी लेकिन मुझे पक्का यकीन है कि वह तुमसे बातें कर रहा था और तुम उसे अपनी नाक सहलाने दे रही थी। इसका क्या मतलब है रोजी?"

"नहीं, नहीं, उसने ऐसा नहीं किया... वह मैं नहीं थी... यह सच नहीं है," रोजी जोर से बोली और उछलने लगी।

"रोजी, मेरी आंखों में देखो और फिर ईमानदारी से कहो कि क्या वह तुम्हारी नाक नहीं सहला रहा था?"

"यह सच नहीं है," रोजी ने अपने शब्द कई बार दोहराए लेकिन वह बिजली से आंखें नहीं मिला सकी। अगले ही पल वह उछली और दौड़ती हुई खेत से बाहर चली गई।

बिजली किसी से भी कुछ कहे बिना रोजी के तबेले पर गई। अपने खुर से उसका घास उलटा-पलटा। पुआल के नीचे थोड़ी-सी गुड़ की भेली और अलग-अलग रंगों के रिबनों के कई गुच्छे मिले।

अगले तीन दिनों तक रोजी गायब रही। फिर कबूतरों ने खबर दी कि उन्होंने उसे रंगपुरा की तरफ देखा है। वह लाल-काले रंग के एक शानदार तांगे में जुती हुई थी। तांगा एक सार्वजनिक इमारत के बाहर खड़ा था। एक मोटा आदमी रोजी की नाक सहलाते हुए उसे गुड़ खिला रहा था। रोजी ने एकदम नया कोट पहन रखा था और बालों पर लाल रिबन बांध रखा था। इसके बाद कभी किसी पशु ने रोजी का जिक्र नहीं किया।

जनवरी का मौसम बहुत खराब आया। खेत इतने कड़े हो गए थे कि उनमें कुछ भी नहीं किया जा सकता था। इस पर विचार करने के लिए कई बैठकें आयोजित की गईं और सूअरों ने आने वाले मौसम के लिए काम की रूपरेखा बनाने में खुद को व्यस्त कर लिया। बगावत के तुरंत बाद तय हुआ था कि सूअर दूसरे जानवरों से ज्यादा चतुर हैं इसलिए वे ही जनावरपुरा की नीतियां तय किया करेंगे। लेकिन उनके सारे फैसले बहुमत के समर्थन के बाद ही लागू किए जाएंगे। यह व्यवस्था ठीकठाक ही चल रही थी कि गोलू और राजा के बीच विवादों की धूल उड़ने लगी। दोनों एक-दूसरे से असहमत होने का एक भी मौका छोड़ते नहीं थे। अगर एक बाजरा बोने का सुझाव देता तो दूसरा तुरंत मक्का बोने का सुझाव देता। यदि एक बताता कि यह खेत बंदगोभी के लिए सही है, तो दूसरा कहता कि वहां कंदमूल के अलावा कुछ नहीं हो सकता है। दोनों के अपने समर्थक भी थे। कई बार बहस के दौरान हाथापाई भी हो जाती। बैठकों में गोलू अपने बेहतरीन भाषणों की वजह से बहुमत पा जाता, तो राजा बीच-बीच में अपने लिए प्रचार करा के समर्थन जुटा लेता। भेड़ों के बीच उसका प्रभाव खासा मजबूत था। पिछले कुछ अरसे से यह भी देखने में आ रहा था कि भेड़ों ने 'चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब' मौसम-बेमौसम गाना शुरू कर दिया था। और आश्चर्य तो यह था

कि गोलू के भाषण के दौरान जब वह नाजुक क्षण में पहुंचता था, 'भेड़ें चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब' का राग अलापती ही थीं।

गोलू को मुंगेरीलाल के घर के भीतर 'किसान' और 'पशुपालन' जैसी पत्रिकाओं के कुछ पुराने अंक मिल गए थे और उसने इनका बारीकी से अध्ययन किया था। इनमें नये और आधुनिक सुधारों के लिए ढेरों योजनाएं थीं। उन सबको पढ़-पढ़ कर गोलू खेत में पानी के लिए नालियां, चारे को सतत हरा बनाए रखने की तकनीक और कचरे की व्यवस्था आदि के बारे में विद्वत्तापूर्ण बातें करने लगा था। उसने एक ऐसी पेचीदा योजना बनाई कि खेतों में हर दिन अलग-अलग जगह पर हगा करें। उसने कहा कि इस तरह गोबर खेत में अलग-अलग जगह गिरेगा और खाद ढोने और उसे खेतों में फैलाने की मेहनत बचेगी। राजा की अपनी तो कोई योजना होती नहीं थी लेकिन वह यह जरूर फुसफुसाता रहता था कि गोलू की योजनाओं से कुछ नहीं होने वाला है। कभी-कभी ऐसा लगता कि वह गुपचुप अपने समय की प्रतीक्षा कर रहा है। लेकिन उनका कोई भी विवाद उतना कटु नहीं बना था जितना पवनचक्की की योजना को लेकर बना।

लंबे चारागाह में, घर की इमारतों के पास ही एक छोटी-सी टेकरी थी जो बाड़े की सबसे ऊंची जगह थी। उस जगह के गंभीर अध्ययन के बाद गोलू ने घोषणा की कि यह पवनचक्की के लिए बिलकुल सही जगह है। उसने बताया कि पवनचक्की से बिजली पैदा करने वाला डायनामो चलेगा और उससे बाड़े के लिए बिजली बनेगी। तबेलों में रोशनी होगी, सर्दियों में वे गर्म रहेंगे। लकड़ी काटने की, चारा काटने की, मक्के के दाने छीलने की और दूध दूहने की मशीन भी बिजली से चलाई जा सकेगी। पशुओं ने इससे पहले इस तरह की चीजों के बारे में सुना नहीं था। वे गोलू की बातें मुंह फाड़े सुनते रह जाते और गोलू उन शानदार मशीनों की मायावी तस्वीरें खींचता रहता कि कैसे सारा काम मशीनों से होगा और कैसे सारे प्राणी आराम से खेतों में चरते रहेंगे या पढ़-लिख कर या आपस में चर्चा करके अपना ज्ञान बढ़ाते रहेंगे।

कुछ ही सप्ताह में गोलू ने पवनचक्की की योजना तैयार कर दी। इसके लिए उसने घर में पड़ी मुंगेरीलाल की तीन मुख्य किताबों का अध्ययन किया। 'एक था' घरेलू काम : हजार उपाय, 'दूसरा था' बनिए अपने बढ़ई आप और तीसरी किताब थी नौसिखुए के लिए बिजली। गोलू ने अपना अध्ययन-कक्ष उस कमरे को बनाया था जिसे कभी अंडे सेने के काम में लिया जाता था। इस कमरे की फर्श लकड़ी की बनी थी जिस पर नक्शे बनाना सहज था। वह घंटों इसी कमरे में बंद रहता। पत्थर के टुकड़े की मदद से किताबें खुली रखता, पैर के जोड़ों के बीच चॉक फंसाकर तेजी से आगे-पीछे चलता, एक-के-बाद-एक रेखाएं खींचता और धीमी आवाज में रोमांचित होकर रिरियाता रहता। धीरे-धीरे जटिल जाले-सी दिखने वाली उसकी ड्राइंग तैयार हो गई। उसने लगभग कमरे की आधी फर्श ढक ली। सब-के-सब पशु गोलू की ड्राइंग देखने दिन में कम-से-कम एक बार तो जरूर आते थे। यहां तक कि मुर्गियां और बत्तखें भी आईं। वे इस बात का खास ख्याल रखती थीं कि कहीं उनके पांव चॉक के निशानों पर न पड़ जाएं। सिर्फ राजा था जिसने शुरू से ही खुद को पवनचक्की की योजना के खिलाफ घोषित कर रखा था। लेकिन एक दिन अचानक वह भी ड्राइंग देखने आ पहुंचा। वह ड्राइंग के आसपास भारी कदमों से चहलकदमी करता रहा। उसने डिजाइन का बारीकी से मुआयना

किया, एक-दो बार उसे सूंघा भी। कुछ देर ठिठका, आंख के कोने से उन रेखाओं को देखता रहा और फिर अचानक उसने अपनी टांग उठाई, खाकों पर मूत कर, एक शब्द भी बोले बिना बाहर निकल गया।

पवनचक्की के मामले पर पूरा जनावरपुरा भीतर तक बंट गया था। गोलू ने स्वीकार किया कि पवनचक्की को बनाना मुश्किल होगा। पहले तो पत्थरों की खुदाई करनी होगी, फिर उनकी दीवारें खड़ी की जाएंगी और इसके बाद डायनेमो और तारों की जरूरत पड़ेगी। गोलू ने यह नहीं बताया कि इन्हें हासिल कैसे किया जाएगा लेकिन उसका दावा था कि यह काम असंभव नहीं है और इसे साल भर में पूरा किया जा सकता है, "पवनचक्की बनने के बाद परिश्रम की इतनी बचत होगी कि पशुओं को सप्ताह में सिर्फ तीन दिन काम करने की जरूरत रह जाएगी।" दूसरी तरफ राजा ने तर्क दिया कि इस वक्त की सबसे बड़ी जरूरत उत्पादन बढ़ाने की है, पवनचक्की पर वक्त बरबाद करने की नहीं। हम पवनचक्की के चक्कर में पड़े तो भूखों मर जाएंगे। इस तरह सारे पशु दो पक्षों में बंट गए। दोनों पक्षों के दो नारे बने : 'गोलू को वोट दो और सप्ताह में बस तीन दिन काम करो तथा राजा को वोट दो और पेट भर खाना पाओ।' बबलू गधा ही अकेला था जो किसी भी पक्ष की तरफ नहीं झुका। उसने कहा : न तो किसी को खाना ज्यादा मिलेगा और न ही पवनचक्की से मेहनत की बचत ही होगी। पवनचक्की हो या न हो, उसका कहना था, जिंदगी हमेशा पहले की ही तरह 'बदहाली' में चलती रहेगी।

पवनचक्की-विवाद के अलावा जनावरपुरा की सुरक्षा का प्रश्न भी सामने था। सबको इस बात का अहसास था कि मनुष्यों को 'तबेले की लड़ाई' में हरा तो दिया गया है लेकिन वे फिर से पहले से ज्यादा बड़ा हमला कर सकते हैं। सुरक्षा की ज्यादा जरूरत इसलिए भी थी कि मनुष्यों की हार की खबर देश के दूरदराज के इलाकों तक पहुंच गई थी। पड़ोसी बाड़ों के पशु भी अब बेसब्र हो रहे थे। लेकिन सुरक्षा के सवाल पर भी गोलू और राजा एक-दूसरे से असहमत थे। राजा के अनुसार पशुओं के लिए सबसे जरूरी काम था बंदूकें और दूसरे हथियार हासिल करना और उन्हें चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करना था। गोलू का कहना था कि उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा कबूतर बाहर भेजते रहने चाहिए। ये कबूतर पास-पड़ोस के बाड़ों को बगावत के लिए उकसाएंगे। एक ने तर्क दिया : हम अपनी रक्षा खुद न कर पाए तो एक दिन आएगा ही कि जब कोई हमें हरा देगा। दूसरे का तर्क था : यदि हर जगह सफल बगावत हो जाए, तो हमें अपनी सुरक्षा की जरूरत ही क्यों रहेगी? पशुओं ने पहले राजा को सुना, फिर गोलू की बात सुनी। वे तय नहीं कर पा रहे थे कि इनमें सही कौन है। अक्सर होता यही था कि जो अंत में बोलता, वे उससे सहमत हो जाते क्योंकि आखिरी बात ही याद रह जाती थी।

आखिर वह दिन आ ही गया जब गोलू की योजनाएं कागज पर पूरी हो गईं। अगले रविवार को होने वाली बैठक में यही फैसला वोट से होना था कि पवनचक्की पर काम शुरू किया जाए या नहीं? सारे पशु बड़े खेत में जमा हुए। गोलू उठा और पवनचक्की के समर्थन में उसने अपने तमाम कारण गिनाए। भेड़ें अपने नारों से बीच-बीच में खलल डालती रहीं लेकिन गोलू विचलित नहीं हुआ। फिर राजा की बारी आई। उसने बड़ी शांति से कहा कि

पवनचक्की की बात एकदम बकवास है और कोई भी इसके पक्ष में वोट न दे। बस, इतना कहकर वह बैठ गया। वह मुश्किल से तीस सेकेंड बोला होगा। उसे जैसे परवाह ही नहीं थी कि उसके बोलने का कोई असर हुआ भी या नहीं। अब गोलू अपनी टांगों पर उछला। भेड़ों को, जिन्होंने फिर से मिमियाना शुरू कर दिया था, डपट कर चुप कराते हुए वह पवनचक्की के पक्ष में भावपूर्ण अपील करने लगा। अब तक तो पशु बराबर-बराबर बंटे हुए थे लेकिन एक ही पल में गोलू ने सबको अपनी तरफ खींच लिया। लच्छेदार भाषा में उसने उस वक्त के जनावरपुरा की तस्वीर खींची जब पशुओं की पीठ पर से कमरतोड़ काम का घिनौना बोझ उतर जाएगा। वह अपनी कल्पना में रंग भरने लगा : "सोचो जरा, बिजली से हल चलेंगे, बिजली से ही फसलों की बुआई और कटाई भी होगी। हर किसी को मिलेगी खुद की रोशनी, ठंडा-गर्म पानी और बिजली का हीटर।" जब उसने अपनी बात खत्म की तो इस बात में कोई शक नहीं रह गया था कि वोट किसे मिलेगा। लेकिन तभी राजा उठा। उसने गोलू की तरफ अजीब तरीके से देखते हुए खूब ही ऊंची आवाज में रिरियाती हुई चीख निकाली। ऐसी आवाज निकालते राजा को पहले किसी ने सुना नहीं था।

सारे सभासद कुछ समझ पाते कि तभी बाहर से भौंकने की भयंकर तेज आवाजें आने लगीं और देखते-देखते नौ बड़े कुत्ते, जिन्होंने पीतल जड़े कॉलर लगा रखे थे, छलांगे मारते खेत में घुस आए और सीधे गोलू लपके। गोलू ऐन वक्त पर अपनी जगह से कूद कर हटा, नहीं तो खूंखार कुत्तों के झपटते पंजों से वह खुद को बचा नहीं पाता। मामले की नजाकत समझ कर उसने पल भर भी देर नहीं की और सामने के दरवाजे के बाहर निकल भागा। कुत्ते भी उसके पीछे लपके। एकदम भौंचक्के, अवाक पशुगण डर के मारे कुछ भी बोल नहीं पाए और जिधर कुत्ते भागे थे उधर देखने लगे। गोलू लंबे चारागाह के बीच से होता हुआ तेजी से सड़क की तरफ दौड़ रहा था। वह उतना ही तेज दौड़ रहा था जितना एक सूअर दौड़ सकता है। कुत्ते तेजी से भागते हुए उसके नजदीक पहुंच रहे थे। अचानक वह फिसला। ऐसा लगा कि कुत्ते उसे दबोच ही लेंगे। लेकिन वह फिर उठ खड़ा हुआ और पहले से भी ज्यादा तेज दौड़ने लगा। कुत्ते बिलकुल उसके पास पहुंच गए। उनमें से एक ने तो गोलू की पूंछ अपने मुंह में दबोच ही ली थी कि गोलू ने ऐन वक्त पर उसके जबड़े से अपनी दुम खींच ली और कुछ ही इंचों से कुत्तों की पहुंच से बाहर निकलकर, दीवार में बने एक छेद को पार कर निकल गया।

उसे फिर कभी किसी ने नहीं देखा।

डरे पशु चुपचाप खेत में सरक आए। कुत्ते भी छलांगें लगाते लौट आए। पहले तो किसी की समझ में नहीं आया कि आखिर ये सब आए कहां से; लेकिन जल्दी ही इस सवाल का जवाब भी मिल गया। ये वे ही पिल्ले थे जिन्हें राजा उनकी मां से ले गया था और गुपचुप जिनका पालन-पोषण किया था। वे अभी जवान नहीं हुए थे लेकिन डील-डौल और नाक-नक्श में सब भेड़ियों की तरह खतरनाक लग रहे थे। वे राजा से सट कर खड़े हो गए और बिलकुल उसी तरह पूंछ हिलाने लगे जैसे कभी मुंगेरीलाल के कुत्ते उसके आगे पूंछ हिलाते थे।

राजा और उसके पीछे-पीछे उसके कुत्ते उस जगह जाकर खड़े हो गए जहां अपना भाषण देने के लिए कभी मेजर खड़ा हुआ था। राजा ने घोषणा की कि अब से रविवार सुबह की

बैठकें नहीं हुआ करेंगी : "ये गैर-जरूरी हैं और इनसे समय की बरबादी होती है। भविष्य में, जानवरपुरा के कामकाज से जुड़े सभी मामले सूअरों की एक विशेष समिति द्वारा निबटाए जाएंगे। मैं इस समिति का अध्यक्ष रहूंगा। इस समिति की बैठकें बंद कमरे में होंगी और इसके फैसले बाद में बता दिए जाएंगे। हर रविवार की सुबह सभी झंडे को सलाम करने, 'भारत के जनावर' गीत गाने के लिए इकठ्ठा होंगे। वहीं उन्हें सप्ताह भर के काम दिए जाएंगे लेकिन ध्यान रहे कि अब से चर्चा या बहस नहीं हुआ करेगी।"

गोलू को इस तरह निकाले जाने से सभी प्राणी हतप्रभ तो थे ही, इस नई घोषणा से वे और भी निराश हो गए। उनमें से कई इस बात का विरोध कर सकते थे लेकिन इसके लिए कोई उन्हें उपयुक्त तर्क तो देता! तर्क गढ़ना सबने सीखा था। कहां बहादुर भी इस बात से थोड़ा परेशान हुआ। उसके कान खड़े हो गए थे। फिर उसने अपने कान पीछे किए, सिर को कई बार हिलाया, कुछ तर्क बनाने की कोशिश की लेकिन नहीं, वह कुछ भी नहीं सोच पाया। अलबत्ता, सूअरों में से कुछ इस बारे में ज्यादा स्पष्ट थे। पहली पंक्ति में बैठे, मांस के लिए पाले जा रहे चार सूअर असहमति में जोर से चिल्लाए, फिर वे एक साथ अपने चारों पैरों पर कूदे और फिर कुछ बोलने भी लगे कि राजा के कुत्तों ने गहरी, धमकी भरी गुर्राहट निकाली। सभी सूअर एक साथ खामोश होकर बैठ गए। और यह माहौल तोड़ने के लिए ही जैसे भेड़ों ने 'चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब' की जुगलबंदी जोर से शुरू कर दी। यह पूरे पंद्रह मिनट तक चलती रही और किसी चर्चा की कोई संभावना बची नहीं। वही हुआ जो होता था : राजा ने भीम को बाड़े के सभी प्राणियों को नयी व्यवस्था समझाने के लिए भेजा।

भीम बोला : "मित्रो, मुझे पूरा विश्वास है कि यहां मौजूद प्रत्येक प्राणी हमारे प्रधान राजा के इस त्याग की सराहना करता है कि उन्होंने अपने ऊपर इतनी सारी जिम्मेवारियां डाल ली हैं। यह मत समझिए साथियो कि नेतृत्व करना कोई बट्टे-खाते का खेल है। यह एक गहरी और भारी जिम्मेदारी है। मैं आपसे कहता हूं कि 'सभी पशु बराबर हैं' जनावरपुरा के इस सिद्धांत पर हमारे प्रधान राजा का जितना अटल विश्वास है उतना यहां मौजूद किसी दूसरे प्राणी का नहीं है। आप अपने फैसले खुद कर सकें, इससे सबसे ज्यादा खुशी उन्हें ही होगी। लेकिन ऐसा हो तो सकता है न कि कभी आप गलत फैसले ले लें। सोचिए, आपका एक गलत फैसला हमें कहां पहुंचा सकता है। अब देखिए न, आप लोग गोलू की पवनचक्की वाली योजना के चक्कर में पड़ गए होते तो क्या होता? यह तो हमें अब जाकर पता चल रहा है कि गोलू किसी शातिर अपराधी से कम नहीं था।"

"लेकिन वह तबेले की लड़ाई में बहादुरी से लड़ा था," किसी ने कहा।

"बहादुरी ही काफी नहीं है," भीम तुरंत बोला, "निष्ठा और आज्ञाकारी होना उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है। और जहां तक 'तबेले की लड़ाई' का सवाल है, मुझे विश्वास है कि कभी-न-कभी यह बात भी आप सबको समझ में आ जाएगी कि उस लड़ाई में गोलू की भूमिका को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है। अनुशासन, मित्रो कड़ा अनुशासन ही आज का अपना एकमात्र नारा है। एक गलत कदम पड़ा और दुश्मन हमारे सिर पर होगा। मित्रो, क्या हममें से कोई भी चाहता है कि मुंगेरीलाल वापस आ जाए?"

अब इस धमकी का कोई क्या उत्तर दे सकता था। मुंगेरीलाल वापस आ जाए, यह तो

कोई भी नहीं चाहता था। यदि रविवार की सुबह खुली बहस करने से मुंगेरीलाल की वापसी का खतरा है, तो ये बहसें जरूर बंद हो जानी चाहिए। बहादुर ने, जिसे अब सोचने-समझने का पर्याप्त वक्त मिल चुका था, प्राणियों की आम राय को इस तरह व्यक्त किया : "यदि प्रधान राजा ऐसा कहते हैं, तो यह सही ही होगा"। यहां से बहादुर ने 'मैं और अधिक कड़ा परिश्रम करूंगा' के अपने व्यक्तिगत मंत्र में एक और मंत्र जोड़ लिया : "प्रधान हमेशा ठीक कहते हैं।" यह उसका नया जुमला था।

इसके साथ ही जनावरपुरा में कई नई बातें शुरू हुईं। मौसम खुल चुका था। वसंत के वक्त की खेती शुरू हो चुकी थी। वह कमरा, जिसमें गोलू ने पवनचक्की के डिजाइन आदि बनाए थे, हमेशा के लिए बंद कर दिया गया। हर रविवार की सुबह दस बजे सभी पशु बड़े खेत में इकट्ठे होते और आने वाले सप्ताह में काम के अपने आदेश प्राप्त करते। मेजर साहब की खोपड़ी, जिस पर से अब तक मांस बिल्कुल ही झड़ चुका था, फलों के बगीचे की कब्र में से खोद निकाली गई तथा झंडे के डंडे के नीचे, बंदूक के पास एक ठूंठे पर उसे सजा दिया गया। अब सिलसिला यह बना कि झंडा फहराने के बाद सभी पशु एक कतार में, अदब से सिर झुकाते हुए खोपड़ी के सामने से गुजरते थे। ऐसा किए बिना किसी को खेत में घुसने की इजाजत नहीं थी। अब वे पहले की तरह एक साथ नहीं बैठते थे। राजा, भीम और कचरा नाम के एक दूसरे सूअर के साथ चबूतरे पर सबसे आगे बैठता। कचरा गीत गाने में और कविताएं रचने में माहिर था। नौ युवा कुत्तों की पलटन उनके चारों तरफ अर्धगोलाकार बनाकर खड़ी रहती। दूसरे सूअर उनके पीछे बैठते। बाकी सारे प्राणी उनकी तरफ मुंह करके बैठ जाते। राजा रूखी फौजी आवाज में सप्ताह के आदेश पढ़ता, सब एक बार 'भारत के जनावर' गीत गाते और फिर तितर-बितर हो जाते।

गोलू के चले जाने के बाद का यह तीसरा रविवार था। आज राजा ने ऐसी घोषणा की कि सारे प्राणी हैरान रह गए। राजा ने कहा कि अब हम पवनचक्की बनाएंगे। उसने अचानक अपना विचार बदलने का कोई कारण नहीं बताया लेकिन पशुओं को यह चेतावनी जरूर दे डाली कि पवनचक्की का मतलब यह है कि और ज्यादा मेहनत! हो सकता है कि राशन भी कम करना पड़े। उसने यह भी कहा कि पवनचक्की के सारे खाके और योजनाएं पूरी बारीकी से हमने तैयार कर ली हैं। पिछले तीन सप्ताहों से सूअरों की एक विशेष समिति रात-दिन इस पर ही काम करती रही है। इस नई, आधुनिक पवनचक्की के निर्माण में दो साल लगने की उम्मीद है।

उस शाम भीम ने पशुओं को एकांत में ले जाकर एक राज की बात बताई : "राजा कभी भी पवनचक्की के विरुद्ध नहीं था। सच्ची बात तो यह है कि पवनचक्की की पूरी योजना राजा की ही बनाई थी। जो नक्शे गोलू ने अपने कमरे में जमीन पर बनाए थे, वे सब उसने राजा के ही कागजों से चुराए थे।" किसी ने पूछा कि तब राजा पवनचक्की का इतना कड़ा विरोध क्यों करता रहा था? भीम ने बड़े शातिर अंदाज में कहा : "यही तो राजा की बुद्धि का कमाल है! उसने ऐसी हवा बनाई कि जैसे वह पवनचक्की के सख्त खिलाफ है। यह गोलू से छुटकारा पाने की चाल थी। गोलू संदिग्ध चरित्र का सूअर था। सब पर उसका गलत असर पड़ रहा था। अब गोलू का कांटा साफ हो चुका है, तो पवनचक्की की राजा की शानदार योजना बिना

किसी बाधा के पूरी की जा सकती है।" भीम ने आंख मारी : "यही चाणक्य-नीति कहलाती है भाई, चाणक्य-नीति!" वह गोल-गोल घूमने लगा, अपनी पूंछ ऐंठते हुए, ठहाके लगाते हुए कई बार "चाणक्य-नीति, दोस्तो, चाणक्य-नीति!" दोहराता रहा। भीम जब विश्वास के साथ बोलता जा रहा था तब संयोग देखिए कि राजा के तीन कुत्ते भी वहीं मौजूद थे। उनकी डरावनी गुर्राहट सभी सुन रहे थे। यह भी चाणक्य-नीति ही होगी, मान कर सबने भीम की बात मान लेने में ही भलाई समझी।

पूरे साल भर पशुओं ने गुलामों की तरह काम किया। उन्हें पता था कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं, अपने लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए कर रहे हैं, निठल्ले कामचोर आदमी लोगों के लिए नहीं।

पूरे वसंत और गर्मियों के दौरान रोजाना दस-दस घंटे तक काम चला। अगस्त में राजा ने नई घोषणा की कि अब से रविवार की दोपहर में भी काम होगा। कहने को कहा गया कि यह काम पूरी तरह स्वैच्छिक होगा लेकिन यदि कोई पशु काम पर नहीं आता तो उसका राशन आधा कर दिया जाता था। इतने कड़े अनुशासन और इतनी अधिक मेहनत के बावजूद कई काम अधूरे छूट रहे थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार फसल थोड़ी कम हुई थी। दो खेत, जिनमें गर्मियों में कंद-मूल बोने थे, बोए नहीं जा सके क्योंकि उन खेतों की जुताई समय रहते पूरी नहीं पाई थी। सब समझ रहे थे कि आने वाली सर्दियां तकलीफदेह होंगी।

पवनचक्की ने अनुमान से कहीं अधिक मुसीबतें खड़ी कीं। जनावरपुरा में ही चूने के पत्थर की एक अच्छी खदान थी। नौकर-चाकर वाले कमरों में से रेत और सीमेंट काफी मात्रा में मिल गया था। लेकिन जिस समस्या से पशु पार नहीं पा सक रहे थे वह था कि पत्थरों को कैसे काम लायक आकार में तोड़ा जाए। यह काम संभव नहीं था क्योंकि कोई भी पशु पिछली दो टांगों पर खड़े होकर औजारों का प्रयोग नहीं कर पाता था। कई हफ्तों की असफल मेहनत के बाद ही किसी को सूझा कि क्यों न गुरुत्वाकर्षण के बल का प्रयोग करके देखा जाए। बड़ी-बड़ी चट्टानें खदान की तली में जमीन पर चारों तरफ बिखरी पड़ी थीं। ये इतनी बड़ी थीं कि इन्हें इसी आकार में कहीं इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। पशुओं ने इनके चारों तरफ रस्सियां बांधी और सभी गाय, घोड़ा, भेड़ आदि जो जैसे रस्सी थाम सकता था, थाम कर तैयार हो गया। नाजुक क्षणों में कभी-कभी सूअर भी जुट गए। सबने मिल कर ढलान से पत्थरों को घसीटते हुए खदान के ऊपरी सिरे तक पहुंचाया। वहां से इन पत्थरों को नीचे लुढ़का दिया गया। उतनी ऊंचाई से नीचे गिरते ही पत्थर टुकड़े-टुकड़े हो गए। अब इन्हें ढोना आसान हो गया। घोड़े उन्हें गाड़ियों में भर कर ले जाते। भेड़ें एक-एक पत्थर घसीटतीं। यहां तक

कि कमली बकरी और बबलू गधा भी पुरानी छोटी गाड़ी में खुद को जोत लेते। सभी अपनी-अपनी तरह से इस काम में जुटे। गर्मियां खत्म होते-होते पत्थरों का अच्छा-खासा भंडार जमा हो गया। फिर सूअरों की देख-रेख में इमारत बनाने का काम शुरू हुआ।

लेकिन यह पूरी प्रक्रिया धीमी और कमरतोड़ थी। कई बार तो एक विशाल चट्टान को घसीट कर खदान के ऊपरी सिरे तक ले जाने में पूरा दिन निकल जाता। कई बार ऐसा भी होता कि नीचे गिर कर भी पत्थर टूटता नहीं था। और यह भी सच था कि बहादुर के बगैर कुछ भी मुमकिन नहीं था। उस अकेले की ताकत बाकी पशुओं की इकट्ठी ताकत के बराबर मालूम होती। जब ऐसा होता कि ऊपर चढ़ाते वक्त पत्थर फिसल जाते और तेजी से नीचे लुढ़कने लगते तो सारे पशु-प्राणी हताशा में चिल्लाने लगते। ऐसे में हमेशा बहादुर ही आगे आता और रस्सी खींच कर फिसलते पत्थर को रोकने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देता। वह दृश्य, जब वह ढलान पर एक-एक इंच पर पत्थर रोकने के लिए जी-जान से ताकत लगा रहा होता, उसके खुर जमीन पर अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए मिट्टी में धंस रहे होते, उसकी सांस धौंकनी-सी चल रही होती, मजबूत कंधे से पसीने की धार छूटती होती तब सारे प्राणी समवेत जोर-जोर से आवाजें लगाकर उसका हौसला बढ़ाते। बिजली कई बार उसे चेताती कि वह अपना खयाल रखे, लेकिन बहादुर कभी भी उसकी सलाह पर ध्यान नहीं देता। अपने दोनों सिद्धांतों में कि 'मैं और अधिक परिश्रम करूंगा' और 'राजा प्रधान हमेशा ठीक कहता है', उसे अपनी सारी समस्याओं के हल दीखते। उसने उस नौजवान मुर्गे को अब कहा कि वह उसे सुबह आधे के बजाए पौना घंटा जल्दी जगा दिया करे। जब कभी समय बचता, वह अकेला भी खदान में चला जाता और टूटे पत्थरों की ढेरी इकट्ठी करता और बिना किसी की मदद के पवनचक्की तक लुढ़का लाता।

काम की मुश्किलों के बावजूद पूरी गर्मियों का मौसम पशुओं के लिए इतना बुरा भी नहीं रहा। मुंगेरीलाल के दिनों की तुलना में खाने के लिए उनके पास ज्यादा नहीं तो कम भी नहीं था। अतिरिक्त पांच निकम्मे आदमी लोगों की देखभाल न करनी पड़े, तो यही सुविधा इतनी बड़ी थी कि कई-कई असफलताएं इसके सामने छोटी पड़ जातीं। कई मामले तो ऐसे भी थे कि जहां पशुओं के तरीके आदमियों से ज्यादा सफल साबित हुए। जैसे खेत से खर-पतवार निकालना। यह काम वे जितना व्यवस्थित कर पाते उतना आदमियों के लिए तो असंभव ही था। और यह भी था कि अब कोई पशु चोरी नहीं करता था। चारागाह और खेती की जमीन को अलग-अलग करने के लिए अब बाड़ लगाने की जरूरत नहीं रह गई थी। इससे बाड़ और फाटक वगैरह के रख-रखाव की मेहनत व खर्च की बचत हो जाती।

यह सब तो ठीक था लेकिन जैसे-जैसे गर्मियां बढ़ती गईं, कई तरह की अनदेखी कमियां सामने आने लगीं। पैराफिन का तेल, कीलें, डोरी, कुत्तों के बिस्किट, घोड़ों की नालों के लिए लोहा - जरूरत तो इन सबकी थी। सब जनावरपुरा में पैदा करना संभव नहीं था। आगे बीजों की, कृत्रिम खाद की, अलग-अलग औजारों की और अंत में पवनचक्की के लिए मशीनरी की जरूरत पड़ने वाली थी। ये चीजें आखिर कैसे जुटाई जाएंगी?

एक रविवार की सुबह जब पशु अपने-अपने आदेश लेने के लिए जमा हुए तो राजा ने बताया कि उसने एक नई नीति बनाई है। अब से जनावरपुरा पड़ोसी बाड़ों के साथ कारोबार करेगा। यह सब व्यापारिक इरादों से नहीं बल्कि इसलिए किया जाएगा कि कुछ निहायत जरूरी चीजें तत्काल हासिल की जा सकें। उसने कहा : "पवनचक्की की जरूरतों को हम दूसरी सभी चीजों से ऊपर रखेंगे।" इसके लिए सूखी घास का एक ढेर और इस साल की गेहूं की फसल का कुछ हिस्सा बेचा जाएगा। बाद में यदि और धन की आवश्यकता पड़ी तो उसे अंडों की अधिक बिक्री कर जुटाया जाएगा। राजा ने कहा कि मुर्गियों को पवनचक्की के निर्माण के लिए अपनी ओर से विशेष योगदान के रूप में खुशी-खुशी यह त्याग करना चाहिए।

इस बार भी पशुओं ने एक अजीब-सी बेचैनी महसूस की। आदमियों के साथ कभी कोई लेन-देन न करना, कारोबार न करना, कभी धन का इस्तेमाल न करना, क्या ये सब मुंगेरीलाल को भगाए जाने के बाद हुई पहली विजय-बैठक में संकल्प के रूप में तय नहीं किया गया था? सभी को याद था कि इस तरह के संकल्प पारित किए गए थे। जिन चार युवा सूअरों ने राजा द्वारा साप्ताहिक बैठकें समाप्त करने की घोषणा का विरोध किया था, उन्होंने ही डरते-डरते फिर अपनी आवाज उठाई लेकिन कुत्तों की भयंकर गुर्राहट ने उन्हें एकदम शांत कर दिया। उसी वक्त, हमेशा की तरह भेड़ों ने 'चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब' का राग अलापना शुरू कर दिया। जो वातावरण असहज बन गया था वह हल्का हो आया। राजा ने शांति बनाए रखने का आदेश देने के लिए अपना पैर ऊंचा किया और बताया कि वह पहले ही सारी व्यवस्थाएं कर चुका है। किसी भी पशु को किसी आदमी के साथ सीधा संपर्क करने की कोई जरूरत नहीं है। वह सारा-का-सारा बोझ अपने कंधों पर उठाने को तैयार है। शहर में एक वकील श्रीमान राजकमल रहते हैं। उन्होंने जनावरपुरा और बाहरी दुनिया के बीच हमारा एजेंट बनना स्वीकार कर लिया है। वह हर सोमवार सूचनाएं लेने यहां आया करेगा। राजा ने 'जनावरपुरा अमर रहे' के नारे के साथ अपना भाषण समाप्त किया और 'भारत के जनावर' गीत गाने के बाद बैठक बरखास्त कर दी गई।

बाद में भीम ने बाड़े का एक चक्कर लगाया और पशुओं की शंकाओं का शमन किया। उसने सबको भरोसा दिलाया कि कारोबार करने और धन के इस्तेमाल के खिलाफ कभी न तो संकल्प पारित किया गया था और न किसी ने ऐसा सुझाया ही था। यह पूरी तरह से काल्पनिक बात है। लगता है शायद गोलू ने ही ऐसा झूठ फैलाया था। लेकिन भीम ने भांप लिया कि कुछ पशुओं को अभी भी संदेह है। उसने उनसे बड़े ही शातिर तरीके से पूछा : "क्या तुम्हें पक्का यकीन है कि तुमने यह सब सपने में नहीं देखा? मेरे दोस्त, क्या तुम्हारे पास इस तरह का कोई संकल्प-पत्र है? क्या ऐसा कुछ लिखा किसी ने देखा है? न किसी के पास ऐसा संकल्प-पत्र था, न लिखित ही कुछ मौजूद था। सबको संतोष हो गया कि वे ही गलती कर रहे थे।

अब हर सोमवार को राजकमल जनावरपुरा आने लगा। वह एक चालाक, लंबे घुंघराले बालों वाला नाटा-सा आदमी था। था तो वह एक मामूली वकील लेकिन इतना

तेज तो था ही कि पहले ही मौके पर पहचान ले कि जनावरपुरा को आगे एक दलाल की जरूरत पड़ेगी ही और यहां से मिलने वाली दलाली भी अच्छी रहेगी। उसके आने-जाने को पशु छिप कर देखते थे और जहां तक हो, उससे कतराते थे। लेकिन वे तब गर्व से भर जाते जब देखते कि चार पैरों वाला उनका राजा दो पैरों वाले राजकमल को आदेश दे रहा है। इस तरह उन्होंने नई व्यवस्थाओं को कुछ हद तक स्वीकार कर ही लिया। लेकिन अपनी तरह से फल-फूल रहे जनावरपुरा से इंसान अब और ज्यादा नफरत करने लगे थे। हर किसी को भीतर-ही-भीतर यह भरोसा था कि देर-सवेर जनावरपुरा दिवालिया हो जाएगा; "और उनकी पवनचक्की तो विफल ही होनी है। अगर किसी तरह यह खड़ी भी हो गई तो कभी काम नहीं कर पाएगी।" लेकिन यह भी था कि अनिच्छा से ही क्यों न हो, वे पशुओं की कुशलता का सम्मान भी करने लगे थे। वे यह देखकर हैरान भी रहते थे कि किस तरह पशु अपने कामकाज खुद संभाल रहे हैं। इसी का नतीजा था कि अब आदमी लोगों ने इस बाड़े को 'जनावरपुरा' नाम से पुकारना शुरू कर दिया था। अब उन्होंने मुंगेरीलाल की हिमायत करना भी छोड़ दिया था। मुंगेरीलाल ने भी अपना बाड़ा वापस पाने की उम्मीद छोड़ दी थी और देश के किसी दूसरे कोने में रहने चला गया था। इंसानों की दुनिया से केवल राजकमल ही था कि जनावरपुरा से जिसका संपर्क था। ऐसी खबरें या अफवाहें हमेशा ही फैलती रहती थीं कि राजा या तो रामपुरा के सुलतान के साथ या रंगपुरा के कपटी रसराज के साथ व्यापारिक समझौता करने ही वाला है।

इसी दौरान सूअर अचानक घर के भीतर रहने चले गए। पशुओं को फिर लगा कि शुरू के दिनों में तो शायद इसके भी खिलाफ संकल्प पारित किया गया था लेकिन एक बार फिर भीम उन्हें समझाने में सफल हो गया कि ऐसा कोई संकल्प हमने नहीं किया था : "देखो भाइयो, सूअर कुशलता से हमारे भले का काम कर सकें, इसके लिए निहायत जरूरी है कि उन्हें रहने को शांत, स्वच्छ जगह दी जाए। यह नेताजी की गरिमा के भी अधिक अनुरूप है (कुछ अरसे से उसने राजा को प्रधान या नेताजी कहकर बुलाना शुरू कर दिया था) कि वे गंदे तबेले में रहने के बजाय साफ-सुथरे घर में रहें।" कई जानवर यह जान कर दुखी हुए कि सूअरों ने न केवल रसोई में भोजन करना शुरू कर दिया है और बैठक के कमरे को वे मनोरंजन-कक्ष की तरह इस्तेमाल करने लगे हैं बल्कि अब वे बिस्तरों पर भी सोने लगे हैं। बहादुर ने हमेशा की तरह इसे भी यह कह कर उड़ा दिया कि 'प्रधान राजा हमेशा ठीक कहते हैं।' लेकिन बिजली को बात पची नहीं। उसे पक्का याद था कि बिस्तरों के खिलाफ तो नियम बनाया ही गया था। वह बड़े खेत की आखिरी दीवार की तरफ गई और वहां खुदे सात धर्मादेशों की गुत्थी सुलझाने की कोशिश करने लगी। लेकिन वह अलग-अलग अक्षरों से आगे कुछ भी नहीं पढ़ पाई। परेशान बिजली कमली बकरी को पकड़ लाई।

"कमली, मुझे चौथा धर्मादेश पढ़ कर सुनाओ। क्या इसमें ऐसा नहीं लिखा है कि पशु बिस्तर पर कभी नहीं सोएंगे?"

थोड़ी-सी तकलीफ के बाद कमली ने अंटकते-अंटकते पढ़ा : "कोई भी पशु चादरों के साथ बिस्तर पर नहीं सोएगा।"

यह तो अजीब ही बात हुई।चौथे धर्मादेश में चादरों का कोई जिक्र था ही नहीं लेकिन चूंकि दीवार पर यही लिखा था, तो उसे मानना पड़ा : "रहा होगा, शायद ऐसा ही रहा होगा!" भीम संयोग से उसी वक्त कुत्तों की टोली लिये वहां से गुजर रहा था। उसने सारा मामला सही नजरिए से, साफ करके सबको समझा दिया : "मित्रो, आप लोगों ने सुना ही होगा कि हम सूअर लोग घर में बिस्तरों पर सोते हैं। आखिर क्यों न सोएं? आप लोगों को कहीं यह तो नहीं लग रहा कि बिस्तरों के खिलाफ कोई कायदा बना था? बिस्तर का मतलब तो सिर्फ सोने की जगह होता है। तबेले में घास को, पुआल के गट्ठर को ठीक कर बिस्तर मान लिया जाता है। कानून बिस्तर के खिलाफ नहीं, चादरों के खिलाफ था; चादरें, जो मनुष्य का आविष्कार हैं। हमने अपने घर के बिस्तरों से चादरें उठा दी हैं और हम कंबलों के बीच सोते हैं। ये बिस्तर काफी आरामदेह हैं। लेकिन आपको पता होना चाहिए कि हम आजकल जितना दिमागी काम करते हैं, उसे देखते हुए यह सहूलियत हमारी जरूरत से ज्यादा नहीं है। आप हमें हमारे आराम से तो वंचित नहीं करेंगे न? क्या आप ऐसा करेंगे मित्रो? क्या आप चाहते हैं कि हम इतना थक जाएं कि आपका काम ही न कर सकें? निश्चित ही आपमें से कोई भी मुंगेरीलाल वापस आ जाए, ऐसा तो नहीं चाहेगा?"

सभी पशुओं ने आगे बढ़कर सुअरों को आश्वस्त किया कि वे उन्हें हर संभव सहूलियत देंगे। फिर कभी सूअरों के बिस्तर में सोने के बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ दिन बाद जब यह घोषणा हुई कि अब से सूअर सुबह के वक्त दूसरे पशुओं की तुलना में एक घंटा देर से उठा करेंगे तो इसके खिलाफ भी कोई शिकायत नहीं आई।

शरद ऋतु के आते-आते पशु थक चुके थे, फिर भी खुश थे। उन्होंने एक कठिन और तकलीफदेह साल गुजार लिया था। सूखी घास और मकई का कुछ हिस्सा बेच देने के बाद भी सर्दियों के लिए अनाज के भंडार पूरी तरह नहीं भर पाए थे लेकिन तेजी से बन रही पवनचक्की सबकी आंखों में चमकने लगी थी। अब वह लगभग आधी बन चुकी थी। फसल के बाद कुछ वक्त के लिए साफ-सूखा मौसम आया तो पशुओं ने पहले की तुलना में और ज्यादा मेहनत की। वे पूरा दिन पत्थर एक जगह से दूसरी जगह ढोते रहे। वे चाहते थे कि दीवारें कम-से-कम एकाध फुट और ऊपर चढ़ा ली जाएं। बहादुर रात के वक्त भी शरद ऋतु की चांदनी में एक-दो घंटे काम करता। अपनी फुर्सत के क्षणों में दूसरे पशु भी अधूरी बनी चक्की के आसपास चक्कर काटते, दीवारों की मजबूती और समकोण पर खड़ी लंबाई की तारीफ करते। उन्हें खुद पर ही आश्चर्य होता कि वे ऐसी कठिन चीज इतनी सफलता से कैसे बना पाए! बूढ़ा बबलू ही एक था जो पवनचक्की को लेकर किसी प्रकार से उत्साहित नहीं था। हमेशा की तरह वह अपनी गूढ़ टिप्पणी दोहराता : "गधे लंबे समय तक जीवित रहते हैं।"

फिर नवंबर का महीना आया। खूब तेज हवाएं चलने लगीं। इमारत का काम रोक देना पड़ा। सब कुछ इतना गीला और ठंडा था कि मिट्टी का गारा तैयार करना मुश्किल हो रहा था। एक ऐसी रात भी आई जब भयंकर आंधी उठी। घर की इमारतें भी जड़ से हिल गईं। तबेले की छत से कई टिन उखड़कर दूर जा गिरे। मुर्गियां डर के मारे चीखकर नींद से उठीं। उन्हें लगा कि उन्हें निशाने पर लेकर एक साथ कई गोलियां दाग दी गई हैं। सुबह जब सारे प्राणी अपने-अपने बाड़ों से बाहर आए तो उन्होंने पाया कि झंडे का

डंडा उखड़कर नीचे गिरा हुआ है, संतरे के पेड़ गाजर-मूली की तरह उखड़े पड़े हैं। उन्होंने अभी यह देखा ही था कि एक घुटी हुई चीख से माहौल गूंज उठा। भयानक नजारा था। पवनचक्की धराशायी हो चुकी थी!

सब एक साथ उस तरफ दौड़े। राजा, जिसे चहलकदमी से ज्यादा तेज चलते शायद ही किसी ने कभी देखा था, आज सबसे आगे दौड़ा। पवनचक्की की जगह मिट्टी का ढेर पड़ा था। उनके संघर्षों का ऐसा अंत? सब सन्न रह गए। वे पत्थर जिन्हें उन्होंने तराश-तराश कर, इतनी मेहनत से ढो-ढो कर लाया था, अब चारों तरफ बिखरे पड़े थे। कोई कुछ बोल नहीं पा रहा था, बस सब मिट्टी के उस ढेर को घूरते जा रहे थे। राजा भी बिना कुछ बोले आगे-पीछे होता रहा, बीच-बीच में जमीन सूंघता रहा। उसकी पूंछ एकदम कड़ी हो गई थी और दाएं-बाएं तेजी से घूम रही थी। वह गहरे तनाव में होता तब ऐसा ही होता था। अचानक वह रुका। सिर हवा में उठाकर कुछ सूंघता रहा, फिर धीमे से बोला : "साथियो, क्या आप जानते हैं कि इस विनाश के लिए कौन जिम्मेवार है? क्या आप उस दुश्मन को जानते हैं जो रात में आया और हमारी पवनचक्की को तहस-नहस कर निकल गया? मैं जानता हूं। उसका नाम है गोलू," फिर वह तूफानी आवाज में गरजा : "यह काम गोलू ने किया है। उसने हमसे अपनी दुश्मनी निभाई है। उसे लगा होगा कि वह हमारी योजनाओं को धूल में मिला कर, अपने देशनिकाले का बदला ले लेगा। वह विश्वासघाती गोलू रात के अंधेरे में यहां घुस आया और हमारी बरस-भर की मेहनत पर पानी फेर गया। साथियो, मैं अभी और यहीं गोलू को मृत्युदंड की सजा देता हूं। जो भी उसे मारेगा उसे 'अपूर्व वीर' का खिताब और आधी पेटी संतरे भी मिलेंगे। जो उसे जिंदा पकड़कर लाएगा उसे पूरी एक पेटी संतरे की मिलेगी।"

पशुओं की आंखें फटी-की-फटी रह गईं! गोलू ऐसी नीच हरकत पर उतर आया? चारों तरफ से रोष भरी चिल्लाहट होने लगी। हर कोई गोलू से बदला लेने की और उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने की तरकीबें सोचने लगा। लगभग तभी टेकरी से थोड़ी ही दूर, गीली घास में एक सूअर के पैरों के निशान भी मिल गए। वे सिर्फ कुछ गज तक ही देखे जा सके लेकिन ऐसा लगता था कि वे निशान बाड़े में छेद की तरफ जा रहे थे। राजा ने गहरी सांस लेकर उन्हें सूंघा और घोषित कर दिया : "ये निशान गोलू के ही हैं।" उसने अपनी यह राय भी जाहिर कर दी कि गोलू शायद रंगपुरा की दिशा से आया था।

"अब और देर नहीं करनी है साथियो," पैरों के निशानों की पहचान कर लेने के बाद राजा ने कहा, "हमें अपना काम करना है। हम आज सुबह से ही पवनचक्की को दोबारा बनाना शुरू कर देंगे। इसे हम पूरी सर्दी, बरसात और गरमी में बनाते रहेंगे। हम उस विश्वासघाती को यह पाठ पढ़ाकर ही रहेंगे कि वह हमारी मेहनत पर इतनी आसानी से पानी नहीं फेर सकता। याद रखो साथियो, हमारी योजना में कोई भी बदलाव या रुकावट नहीं आनी चाहिए। वे अपने समय से पूरी की जाएंगी। आगे बढ़ो दोस्तो। पवनचक्की अमर रहे, जनावरपुरा अमर रहे।"

इस बार कड़ाके की सर्दियां पड़ीं। तूफानी मौसम अपने साथ ओले और हिमपात भी लेकर आया। उसके बाद जो कड़ा पाला पड़ा, वह फरवरी तक बना रहा। पशु जी-जान से पवनचक्की को फिर से बनाने में जुटे रहे। उन्हें पता था कि बाहरी दुनिया की आंखें उन पर लगी हुई हैं। अगर पवनचक्की वक्त पर पूरी न हुई तो मनुष्य खुशी के मारे झूम उठेंगे।

जलन के मारे आदमियों के बीच बात चलती कि दीवारें जरूरत से ज्यादा पतली थीं जिस कारण भरभरा कर गिर पड़ीं। पशु जानते थे कि यह सच नहीं था फिर भी तय किया गया कि इस बार अठारह इंच की जगह दीवारों की मोटाई तीन फुट रखी जाए। इसका मतलब था पत्थरों का और भी बड़ा ढेर जमा करना और फिर उन्हें आकार देना।

अरसे तक खदान बर्फ से भरी रही। कुछ भी नहीं किया जा सका। सूखे पाले वाले मौसम में थोड़ा-बहुत काम हुआ लेकिन वह बहुत कठिन साबित हुआ। प्राणियों का आत्मविश्वास भी कुछ हिल-सा गया था। उन्हें हमेशा ठंड लगती रहती और वे अक्सर भूखे सोते। सिर्फ बहादुर और बिजली थे जिनने कभी हिम्मत नहीं हारी। भीम काम के सुख और श्रम की गरिमा के बारे में शानदार भाषणबाजी करता था लेकिन प्राणियों को बहादुर की ताकत और उसकी 'मैं और अधिक परिश्रम करूंगा' वाले संकल्प से ज्यादा प्रेरणा मिलती थी।

जनवरी में अनाज की तंगी हो गई। मकई के राशन में खासी कमी कर दी गई। यह घोषणा भी की गई कि आगे से अनाज के बदले आलू की अतिरिक्त खुराक दी जाएगी। लेकिन पाया गया कि आलू की फसल का बहुत बड़ा हिस्सा, अच्छी तरह से ढक कर न रखने के कारण बर्फ व पाले से सड़ गया है। खाने लायक आलू थोड़े ही बचे थे। फिर तो यह भी हुआ कि लगातार कई-कई दिनों तक प्राणियों को चोकर और चुंकदर के अलावा खाने को कुछ भी नहीं मिला। भुखमरी के लक्षण उन पर नजर आने लगे थे।

लेकिन यह सब बाहरी दुनिया से छुपाए रखना जरूरी था। राजा जानता था कि अगर खाद्यान्न की असली स्थिति का पता बाहर चल जाए तो बात बिगड़ सकती है। उसने उलटी अफवाह फैलाने के लिए राजकमल का इस्तेमाल किया। अब तक तो पशुओं का राजकमल के साथ जरा-सा या नहीं के बराबर ही संपर्क था। लेकिन अब चुने हुए पशुओं को, खास कर भेड़ों को यह हिदायत दी गई कि वे उसे सुनाने के लिए बराबर ऐसी बातें करें कि उनका राशन बढ़ा दिया गया है। राजा ने यह आदेश भी दिया कि भंडारघर में खाली हो चुके डिब्बों को रेत से लगभग पूरा भर दिया जाए और फिर ऊपर-ऊपर थोड़ा अनाज और खल डाल दिया जाए। एक रोज किसी बहाने से राजकमल को भंडारघर में ले जाया गया ताकि वह भरे-पूरे डिब्बों को देख सके। राजकमल भी इस धोखे में आ गया और बाहरी दुनिया को लगातार बताता रहा कि जनावरपुरा में खाने-पीने की कोई कमी नहीं है।

जनवरी के खत्म होते-होते यह स्पष्ट हो गया कि कहीं से कुछ और अनाज लेना जरूरी

होगा। इन दिनों राजा बमुश्किल ही प्राणियों के बीच आता था। खूंखार कुत्तों के पहरे में वह सारा समय घर के भीतर ही गुजारता था। जब बाहर आता भी तो पूरे राजसी ठाठ के साथ आता। छह कुत्ते उसकी सुरक्षा करते हुए उससे एकदम सट कर चलते। यदि कोई दूसरा प्राणी ज्यादा नजदीक आने लगता तो वे सब गुर्राने लगते। अब तो वह रविवार की सुबह भी नहीं आता था। दूसरे सूअरों से, खासकर भीम से अपने आदेश जारी करवा देता।

रविवार की एक सुबह भीम ने घोषणा की कि मुर्गियों को, जिन्होंने हाल ही में फिर से अंडे दिए हैं, अपने अंडे जमा कर देने होंगे। राजा ने राजकमल के जरिए हर हफ्ते चार सौ अंडों का एक ठेका मंजूर किया था। कहा गया कि इससे इतनी कमाई होगी कि गर्मियों तक चल सके इतना अनाज और खल खरीदा जा सके।

जब मुर्गियों ने यह घोषणा सुनी तो उनमें हड़कंप मच गया। जनावरपुरा के लिए उन्हें त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, ऐसा पहले कहा गया था लेकिन उन्हें विश्वास नहीं था कि सचमुच ऐसा होगा। वे अभी वसंत ऋतु में सेने के लिए अपने अंडों की ढेरियां तैयार कर रही थीं। उन्होंने विरोध किया कि ऐसे वक्त उनसे अंडे छीनना हत्या के बराबर होगा। मुंगेरीलाल के निष्कासन के बाद यह पहली बार था कि राजा से बगावत जैसा कुछ होता लग रहा था। काली लहरदार कलगी वाली युवा मुर्गियों ने इसका नेतृत्व किया। वे उड़ कर ऊंचे टांड़ों पर जा बैठीं और उन्होंने वहीं अपने अंडे दिए जो नीचे गिर-गिर कर टूट गए। राजा खामोश नहीं रहा। उसने तुरंत बेरहम कार्रवाई की। अंडे देने वाले खानदान की खुराक बंद करने का आदेश आया और यह धमकी भी कि यदि कोई भी उन्हें अनाज का एक दाना भी देता पाया गया तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा। कुत्तों को नियुक्त किया गया कि इस पर नजर रखें। पांच दिनों तक मुर्गियां अपने निर्णय पर डटी रहीं फिर उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। वे अपने दड़बों में लौट आईं। इस बीच नौ मुर्गियां मर चुकी थीं। उनके शव फल के बगीचे में दफना दिए गए और यह खबर फैला दी गई कि पेट के रोग से उनकी मौत हो गई है। राजकमल को इसका कुछ भी पता नहीं चला। उसे समय से अंडे विधिवत मिलते गए। किराने वाले की गाड़ी हफ्ते में एक बार जनावरपुरा आती और अंडे उठा ले जाती।

इस पूरे अरसे गोलू को किसी ने नहीं देखा। एक अफवाह यह जरूर उड़ी कि वह संभवतः पड़ोस के बाड़ों में से एक रामपुरा या फिर रंगपुरा में छुपा है। राजा के दूसरे किसानों के साथ संबंध सुधर रहे थे। बात यूं बनी कि अहाते में इमारती लकड़ी का एक ढेर पिछले दस सालों से अच्छी तरह बांध कर धरा हुआ था। कभी बाड़े के छोटे जंगल की कटाई हुई थी। ये लकड़ियां तभी की थीं। अब धूप में वे अच्छी तरह सूख चुकी थीं। राजकमल ने राजा को सलाह दी कि वह इसे बेच दे। सुल्तान और रसराज दोनों इसे खरीदने को उत्सुक थे। राजा हिचकिचा रहा था कि इसे दूं कि उसे? देखा यह गया कि जब भी राजा सुल्तान के साथ सौदा निबटाने की स्थिति में पहुंचता, कहीं से खबर आ जाती कि गोलू रामपुरा में छुपा बैठा है। जब सौदा रसराज के साथ होने को होता तो बात फैलती कि गोलू रंगपुरा में छुपा बैठा है। रामपुरा-रंगपुरा के जाल में फंसा राजा फैसला नहीं कर पाता।

वसंत के शुरू में अचानक ही एक नई खतरनाक बात पता चली। खबर यह थी कि गोलू गुपचुप हर रात बाड़े में आता है। और हर तरह की बदमाशियां करता है। मकई चुराता

है, दूध के बर्तन उड़ेल देता है, अंडे तोड़ देता है, पौधों को रौंद देता है, फलदार पेड़ों की छाल तक उतार लेता है। अब कहीं कोई गड़बड़ होती थी तो वह गोलू के मत्थे मढ़ दी जाती। कोई खिड़की टूटी तो गोलू, कोई नाली जाम हो गई तो गोलू! कहीं से कोई कह देता कि उसने रात में गोलू को देखा कि वह खुराफातें कर रहा है, तो वह पक्की खबर बन जाती। जब भंडारघर की चाभी खो गई, बात पक्की मान ली गई कि गोलू ने चाभी कुएं में फेंक दी है। मजा तब बना जब खोई चाभी अनाज की बोरी के नीचे से मिली। झट नई कहानी बन गई कि गोलू ने ही चाभी छुपाई थी। गायों ने नई कहानी कही : गोलू उनके तबेले में घुसा और उनका दूध दूह कर ले गया। किसी ने पूछा, "तुम लोगों ने हल्ला क्यों नहीं किया?" "हम हल्ला कैसे करतीं", गायों का मासूम जवाब आया, "हम तो सो रही थीं!" चूहे उन सर्दियों में कुछ ज्यादा ही ऊधमी हो गए थे। बताया गया कि यह भी गोलू के इशारे पर ही हो रहा है।

फिर राजाज्ञा हुई : गोलू की हरकतों की पूरी छानबीन की जाएगी। छानबीन करने राजा खुद अपने कुत्तों के साथ निकला। सभी प्राणी उससे थोड़ी दूरी बना कर, आदरपूर्वक चलते रहे। थोड़े-थोड़े कदमों के बाद राजा रुकता, गोलू के पैरों के निशानों को पहचानने की नीयत से जमीन सूंघता। उसने कह ही रखा था कि उसके सूंघने से कोई बच नहीं सकता है। उसने आज कोना-कोना सूंघा। खेत सूंघा, तबेले सूंघे, दड़बे सूंघे। सब्जियों की क्यारियां सूंघी। हर जगह गोलू के होने के निशान मिले। वह अपना थूथन जमीन पर लगाता, लंबी-लंबी सांसें खींचता और डरावनी आवाज में चिल्लाता : "गोलू!... वह यहां भी आया था।" 'गोलू' शब्द आते ही कुत्ते डरावने दांत निकालकर, भयानक आवाज में गुर्राने लगते।

जनावरपुरा बुरी तरह डर चुका था। गोलू कोई अदृश्य जिन्न था, जो हवा को चीरते हुआ आता था और मनमानी कर निकल जाता था। उस शाम भीम ने सबको इकट्ठा किया और अपने चेहरे पर डरावने भाव लाता हुआ बोला : "साथियो, एक बहुत भयानक बात पता चली है। गोलू ने खुद को रंगपुरा बाड़े के रसराज के हाथों बेच दिया है ताकि वह हम पर हमला करने और हमारा जनावरपुरा हमसे छीन लेने में सफल हो सके। जब हमला होगा तो गोलू रसराज के गाइड का काम करेगा। लेकिन इससे भी बुरा यह कि गोलू शुरू से ही मुंगेरीलाल का खुफिया था। हमें यह सब अभी-अभी हाथ आए उस दस्तावेज से पता चला है जो वह भागते वक्त पीछे छोड़ गया था। मित्रो, अब बहुत सारी बातें समझ में आ रही हैं। क्या हमने खुद अपनी आंखों से नहीं देखा कि उसने किस तरह से हमला किया था? हमें हरा कर वह तबेले की लड़ाई में हमें मटियामेट कर देना चाहता था। सौभाग्य से वह इसमें सफल नहीं हो सका।"

सारे प्राणी इस नये सच से हक्के-बक्के रह गए। यह तो पवनचक्की नष्ट करने की साजिश से भी ज्यादा भयंकर बात थी। उन्हें इसे पचाने में थोड़ा वक्त लगा। सबको याद तो यह आ रहा था कि तबेले की लड़ाई में गोलू सबसे आगे था और सबको उत्साहित कर रहा था। सबने देखा था कि जब मुंगेरीलाल की बंदूक की गोलियों से उसकी पीठ छलनी हो गई थी तब भी वह एक पल के लिए नहीं रुका था। कैसे मान लें हम कि तब गोलू मुंगेरीलाल की तरफ से लड़ रहा था? सबके चेहरे पर यही सवाल था। कभी कोई सवाल न उठाने वाला बहादुर भी दुविधा में था। वह नीचे बैठा, आगे के पैर अपने नीचे मोड़े, आंखें बंद कीं और बड़ी मुश्किल

से बोला : "मैं इस पर विश्वास नहीं करता। गोलू तबेले की लड़ाई में बहुत बहादुरी से लड़ा था। मैंने खुद उसे लड़ते देखा था। क्या लड़ाई के तत्काल बाद हमने ही उसे 'परमवीर पशु' का खिताब नहीं दिया था?"

"वह हमारी भूल थी साथियो! हमें अब जाकर कुछ गुप्त दस्तावेज मिले हैं जिनसे सच सामने आया है। दरअसल वह हमें बहकाकर सर्वनाश की तरफ ले जा रहा था।"

"लेकिन वह जख्मी था," बहादुर ने कहा, "हम सबने उसे खून से लथपथ देखा था।"

"वह सब उसकी चाल का हिस्सा था," भीम जोर से चीखा, "मुंगेरीलाल की गोली से उसे सिर्फ खरोंच भर आई थी। अगर तुम पढ़ सकते हो तो मैं खुद उसी के अक्षर में लिखा दस्तावेज तुम्हें दिखा सकता हूं। षड्यंत्र यह था कि लड़ाई के नाजुक क्षणों में गोलू भागने का संकेत देता और हम सब दुश्मन के हवाले मैदान छोड़ कर भाग जाते। वह अपने षड्यंत्र में लगभग सफल भी हो चुका था। दोस्तो, अगर हमारे नेताजी, प्रधान राजा ने बहादुरी न दिखाई होती तो अनर्थ हो ही जाता। क्या आपको याद नहीं है कि जब मुंगेरीलाल और उसके आदमी अहाते में घुस आए थे तो किस तरह गोलू अचानक मुड़ा था और भागने लगा? दूसरे भी कई पशु उसके साथ भागे थे। ऐन वक्त पर, जब चारों तरफ भगदड़ मची थी और लगने लगा था कि सब कुछ खत्म गया, प्रधान राजा बहादुरी से छलांग मारते आए थे और उन्होंने हुंकार भरी था : 'मनुष्यता का नाश हो!' और इसके साथ ही उन्होंने मुंगेरीलाल की टांग में अपने दांत गड़ा दिए थे। यह सब तो आपको पक्का याद है न?" दाएं-बाएं फुदकते हुए भीम लगातार बोले जा रहा था और इतने बारीक विवरण से प्राणियों को भी लगने लगा था कि उन्हें सब ऐसे ही याद है। "हां, हमें यह तो याद है ही कि लड़ाई के नाजुक क्षणों में गोलू भागने के लिए मुड़ा था।" कई एक साथ बोले।

"मैं नहीं मानता कि गोलू शुरू से विश्वासघाती था," बोल पड़ा, "उसने बाद में क्या किया यह न मैं जानता हूं, न दूसरा कोई। भीम जो कह रहा है वह होगा सच लेकिन मुझे विश्वास है कि तबेले की लड़ाई में वह एक अच्छे, बहादुर सिपाही की तरह लड़ा था।"

"दोस्त, हमारे नेताजी प्रधान राजा ने," अब भीम ने धीमी, मुलायम आवाज निकाली, "साफसाफ कहा है कि गोलू शुरू से ही मुंगेरीलाल का एजेंट था। हमें बगावत का ख्याल आया, उससे पहले से ही वह एजेंट था।"

"ओह!," बहादुर ने कहा, "अगर प्रधान राजा कहते हैं तो यह ठीक ही होगा।"

"यही सच्ची भावना है दोस्त!," भीम चिल्लाया लेकिन यह साफ दिख रहा था कि उसने अपनी छोटी-छोटी मिचमिचाती आंखों से बहादुर की तरफ गहरी नफरत से देखा। फिर वह जाने के लिए मुड़ा, मुड़कर रुका और शब्द-शब्द पर जोर देते हुए बोला, "मैं इस बाड़े के हर प्राणी को चेतावनी देता हूं कि सब अपनी आंखें खुली रखें। हमारे पास इस बात के प्रमाण हैं कि इस वक्त भी हम लोगों के बीच गोलू के खुफिया एजेंट घात लगाए बैठे हैं।"

चार दिन बीते कि दोपहर ढलने के बाद, राजा के आदेश से फिर सभी पशु बाड़े में इकट्ठा हुए। राजा घर के भीतर से प्रकट हुआ। उसने कंधों पर दो पदक लगा रखे थे (हाल ही में उसने खुद को 'परमवीर पशु' और 'वीर पशु' सम्मान से विभूषित कर लिया था।) उसके आगे-पीछे उसके नौ विशाल कुत्ते चल रहे थे। उनके गुर्राने की आवाज इतनी भयानक थी कि

पशुओं की रीढ़ में कंपकंपी-सी दौड़ गई। सभी चुपचाप अपनी-अपनी जगह धंस गए मानो कोई हादसा होने वाला है।

राजा ने अपने श्रोताओं का मुआयना किया। फिर धीरे-धीरे गंभीरता से खड़ा हुआ। बहुत ऊंची आवाज में घुरघुराहट की। उसकी घुरघुराहट मानो कोई संकेत थी। कुत्ते तुरंत आगे की ओर लपके, सामने बैठे चार सूअरों को कानों से दबोचा, और दर्द तथा आतंक से पिनपिनाते उन्हें राजा के कदमों में डाल दिया। उन सबके कानों से खून बह रहा था। कुत्तों के मुंह में खून लग गया था। कुछ पल के लिए वे एकदम पागल-से हो गए। सब-के-सब हक्के-बक्के रह गए जब उनमें से तीन कुत्ते बहादुर की तरफ उछले। बहादुर ने उन्हें झपटते देख लिया और अपना विशाल खुर उठा कर एक कुत्ते को उसने बीच हवा में ही रोका, जमीन पर पटका और अपने पांव के नीचे दबा दिया। अब कुत्ता किंकिया रहा था। उसका हाल देख बाकी दोनों कुत्ते अपनी पिछली टांगों में दुम दबा कर भाग खड़े हुए। बहादुर ने राजा की तरफ देखा, मानो पूछ रहा हो कि कुचल दूं या छोड़ दूं? राजा की मुखमुद्रा बदली। उसने तेज आवाज में बहादुर को कुत्ते को छोड़ने का आदेश दिया। बहादुर ने अपना पांव उठाया। बिलबिलाता कुत्ता जख्मी हाल में वहां से खिसक लिया।

हंगामा शांत हो गया। चारों सूअर अभी भी कांपते हुए राजा के पांव के पास गिरे थे। उनके चेहरे पर अपराध साफ लिखा था। ये वही चार सूअर थे जिन्होंने रविवार की बैठकें खत्म करने के राजा के फैसले का विरोध किया था। राजा ने उन्हें अपराधी करार दिया। बिना किसी सवाल-जवाब के उन चारों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया कि गोलू को जनावरपुरा से निकाल देने के बाद से ही वे उससे गुप्त संपर्क में थे और उसके साथ मिलकर पवनचक्की को नष्ट करने का षड्यंत्र भी रचा था। उन्होंने गोलू के साथ यह समझौता भी किया था कि वे जनावरपुरा की मालिकी रसराज को दिलाने में उसका साथ देंगे। उन्होंने यह भी बताया कि गोलू ने उनके सामने स्वीकार किया था कि वह वर्षों से मुंगेरीलाल का खुफिया एजेंट है। जब उन्होंने अपने सारे अपराध स्वीकार कर लिये तो कुत्तों ने तुरंत उनके गले चीर दिए। राजा गरजा, “क्या किसी और प्राणी को भी अपना कोई अपराध स्वीकार करना है?”

तीन मुर्गियां, जो अंडा-बगावत की सरगना थीं, आगे आईं और बताया कि गोलू उनके सपनों में आया था और वही उनको बगावत के लिए भड़का गया था। मुर्गियों का भी कत्ल कर दिया गया। फिर एक बत्तख सामने आया। उसने स्वीकार किया कि पिछले साल फसल के मौके पर उसने तीन भुट्टे छुपा लिये थे और रात के वक्त खा लिये थे। फिर एक भेड़ ने स्वीकार किया कि उसने पानी पीने के तालाब में पेशाब किया था और उसे ऐसा करने के लिए गोलू ने उकसाया था। दो और भेड़ों ने माना कि उन्होंने राजा के खास निष्ठावान भक्त बूढ़े मेढ़ को आग के चारों तरफ दौड़ा-दौड़ा कर उस वक्त मार डाला था जब वह खांसी से पीड़ित था। इन सबको भी वहीं-के-वहीं मौत के घाट उतार दिया गया। इस तरह अपराध स्वीकार करने और वहीं-के-वहीं प्राणदंड देने का यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक राजा के पैरों के पास लाशों का ढेर नहीं लग गया।

हवा खून की गंध से भारी हो चली थी। खून का यह सिलसिला, जिसे मुंगेरीलाल के निष्कासन के बाद किसी ने न देखा था, न सुना था, अब रोजाना की बात हो चली थी।

जब सब कुछ निबट गया तब सूअरों और कुत्तों को छोड़ कर बाकी प्राणी एक साथ सरकते हुए निकल गए। उनके दिल दहले हुए थे और आंखों में भय भरा था। सब-के-सब बेहद दुखी थे। वे नहीं जानते थे कि उन्हें किस चीज से ज्यादा धक्का लगा था : गोलू के साथ सांठ-गांठ करने वाले पशुओं की धोखाधड़ी से या उस क्रूर खून-खराबे से जो उनकी आंखों के सामने अभी-अभी घटा था? पुराने दिनों में भी ऐसे खतरनाक खून-खराबे अक्सर हुआ करते थे लेकिन अब यह सब उनके आपस में हो रहा था। मुंगेरीलाल के जनावरपुरा से जाने के बाद से आज तक किसी भी पशु ने दूसरे पशु को नहीं मारा था, यहां तक कि किसी चूहे को भी नहीं। सब सिर झुकाए उस छोटी टेकरी की तरफ बढ़े जहां आधी-अधूरी पवनचक्की खड़ी थी। बिजली, कमली, बबलू, गाय, बत्तख और मुर्गियां सब-के-सब झुंड बनाकर आपस में ऐसे सटे बैठ थे मानो एक-दूसरे को सहारा दे रहे हों या एक-दूसरे की गर्मी महसूस करना चाहते हों। इन सबके बीच में बिल्ली नहीं थी। वह पशुओं को इकट्ठा होने के राजा के आदेश से कुछ पहले ही अचानक गायब हो गई थी।

थोड़ी देर तक कोई भी नहीं बोला। बहादुर अपनी टांगों पर खड़ा, अपने पुट्ठों पर अपनी लंबी काली पूंछ सटकाता बेचैनी से आगे-पीछे होता रहा। बीच-बीच में वह हैरानी भरी हिनहिनाहट कर रहा था। अंततः उसने कहना शुरू किया, "मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं। मुझे यकीन नहीं आ रहा है कि ऐसी चीजें हमारे जनावरपुरा में हो सकती हैं। इसमें कहीं हमारा ही दोष होगा। जहां तक मुझे लगता है, इसका एक ही हल है कि और कड़ी मेहनत की जाए। अब से मैं सुबह एक घंटा जल्दी उठा करूंगा," और पत्थर ढोने वाली गाड़ी ले कर वह खदान की तरफ चल पड़ा। रात ढलने तक वह वहीं काम करता रहा।

सभी पशु बिजली के पास सरक आए। जिस टेकरी पर वे बैठे थे, वहां से गांव का नजारा खूब दिखता था। जनावरपुरा का ज्यादातर हिस्सा सड़क को छूता था। लंबा-चौड़ा चारागाह था उनका, घास के मैदान थे, पीने के पानी का ताल था, जुते हुए खेतों में पके हुए गेहूं की भरी-भरी सुनहरी बालियां थीं। घर की इमारतों की लाल छतों की चिमनियों से धुएं की आड़ी-तिरछी लकीरें निकल रही थीं। यह वसंत के दिनों की एक उजली शाम थी। घास और हरी-भरी बाड़ों पर धूप की किरणें चमक रही थीं। पशुओं ने साश्चर्य फिर खुद से कहा : यह बाड़ा उनका अपना है। इसका चप्पा-चप्पा उनका अपना है। 'अपना' शब्द ही कैसा जादू कर जाता है! यह सब उन्हें कभी भी इतना प्यारा नहीं लगा था जितना अब लग रहा था।

बिजली की आंखों में आंसू थे और वह पहाड़ों की तरफ देखे जा रही थी। अगर वह कह पाती तो कहती कि यह सब वह नहीं है जिसके लिए बरसों हमने इतनी मेहनत की, मानव-जाति को खदेड़ा। उसने सोचा कि उस रात जब जनाब मेजर ने पहली बार

उनके कानों में बगावत का बिगुल फूंका था तब उन्होंने आतंक और कत्लेआम के ऐसे नजारे की बात तो की नहीं थी! यदि वह खुद भविष्य का कोई चित्र आंक पाती तो ऐसे आंकती कि हमारा प्राणियों का ऐसा एक समाज होगा जहां न भूख होगी, न कोड़े। सब बराबर होंगे। हर अपनी क्षमता से काम करेगा, अपनी जरूरत भर पाएगा। जो बलशाली हैं, वे दुर्बल की रक्षा करेंगे। उसने भी तो मेजर के भाषण की रात अपनी अगली टांगों के बीच बत्तखों की आखिरी पीढ़ी को समेटकर उनकी रक्षा की थी। अब आज यह क्या हो रहा है? उसकी आंखें फिर भर आईं। वे कैसे इस दौर में आ पहुंचे जहां कोई अपने मन की बात कहने का साहस नहीं जुटा पाता, जहां खतरनाक गुर्राते कुत्ते हर जगह घूमते रहते हैं, जहां आपके अपने ही साथी दिल दहला देने वाले अपराध स्वीकार करते हैं और सजा में उनके चीथड़े उड़ जाते हैं। उसके दिमाग में बगावत या अवज्ञा का कोई भाव नहीं था। वह जानती थी कि इन सबके बावजूद वे सब उन दिनों की तुलना से कहीं बेहतर स्थिति में हैं जब मुंगेरीलाल का राज था। सबका यह निश्चय भी पक्का था कि मनुष्य जाति को वापस नहीं आने देना है। लेकिन... बात कहीं दिल में चुभी थी कि उसने और दूसरे प्राणियों ने न तो आज जैसी हालत की उम्मीद की थी, न ही इसके लिए पसीना बहाया था। इस दिन के लिए उन्होंने पवनचक्की बनाई थी? मुंगेरीलाल की गोलियों का सामना इसलिए किया था कि कुत्तों के हाथों मारे जाएं? बिजली यह सोच रही थी लेकिन उसके पास इन्हें व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं थे।

जब उसे कुछ भी नहीं सूझा तो उसने 'भारत के जनावर' गीत गाना शुरू कर दिया। आसपास बैठे पशुओं ने उसे उठाया और सबने तीन बार उसे पूरा गाया - बहुत अच्छे स्वर में लेकिन पता नहीं क्यों आज उसकी धीमी धुन मातमी हो गई थी। ऐसी धुन में उन्होंने इसे पहले कभी नहीं गाया था।

तीसरी बार का गाना खत्म हुआ ही था कि दो कुत्तों की अगवानी में भीम उनके पास आया। उसने ऐसा आभास दिया जैसे कोई बहुत महत्वपूर्ण बात कहनी हो लेकिन जो कहा उसने वह यह था कि प्रधान राजा के एक विशेष आदेश द्वारा 'भारत के जनावर' गीत गाना अब से बंद करवा दिया गया है। जनावरपुरा में इसे गाने की मनाही होगी।

पशु हक्के-बक्के रह गए।

"क्यों?" कमली चिल्लाई।

"अब इसकी जरूरत नहीं है दोस्त," भीम की आवाज में कड़ाई थी, "भारत के जनावर' बगावत का गीत है लेकिन हमारी बगावत तो अब पूरी हो चुकी है। आज ही दोपहर आपने देखा कि हमने विश्वासघातियों को मौत की सजा दी। वह बगावत का अंतिम अंक था। बाहरी और भीतरी दोनों ही दुश्मन का खात्मा हो चुका है। 'भारत के जनावर' में हमने आने वाले दिनों में एक बेहतर समाज के लिए अपनी अभिलाषा व्यक्त की थी। लेकिन अब यह समाज हमने बना लिया है तो उसका गीत गाने का कोई मकसद नहीं रहा भाइयो!"

सारे पशु डरे हुए तो थे लेकिन विरोध की भी सोच रहे थे कि भेड़ों ने झट से वही पुरानी तान छेड़ दी : 'चार टांगें अच्छी, दो टांगें खराब!' यह में-में कई मिनटों तक

चलती रही और सारी बहस उसी में खो गई।

इस दिन के बाद से जनावरपुरा में फिर कभी 'भारत के जनावर' गीत न गाया गया, न सुना गया। इसके स्थान पर कविवर कचराजी ने एक और गीत की रचना की। इसकी शुरूआती पंक्तियां इस तरह थीं :

जनावरपुरा, जनावरपुरा
ऐसा दिन कभी नहीं आएगा
जब मेरे कारण होगा तुम्हारा कुछ बुरा
जनावरपुरा, जनावरपुरा!

हर रविवार की सुबह झंडा चढ़ाने के बाद इसे गाया जाने लगा। लेकिन न तो यह गीत, न इसके बोल और न कभी इसकी धुन ही वह जगह ले पाई जो कभी 'भारत के जनावर' को मिली हुई थी।

कुछ दिन बीत चले। कत्लेआम का आतंक थोड़ा कम हुआ। फिर कुछ पशुओं को याद आया कि छठे धर्मादेश में लिखा था (याकि उन्हें ऐसा याद आ रहा था कि ऐसा लिखा था) कि कोई भी पशु किसी दूसरे पशु को नहीं मारेगा। सूअरों या कुत्तों की मौजूदगी में किसी ने इसका जिक्र तो नहीं किया लेकिन यह बात सबके जेहन में थी कि जिस तरह पशुओं ने पशुओं की हत्याएं कीं, वह इस सूत्र से मेल नहीं खाती हैं। बिजली ने बबलू से कहा कि वह उसे छठा धर्मादेश पढ़कर सुनाए लेकिन हमेशा की तरह बबलू ने ऐसे मामलों में टांग अड़ाने से इंकार कर दिया। उसने कमली को थामा। कमली ने उसे छठा धर्मादेश पढ़कर सुनाया : "कोई भी पशु किसी दूसरे पशु को बिना वजह नहीं मारेगा।" कैसे, यह कैसे हुआ? कैसे हुआ कि इस छठे धर्मादेश के दो शब्द 'बिना वजह' सारे प्राणियों को याद ही नहीं रहे? लेकिन सच पढ़कर उन्हें यकीन हो गया कि छठे धर्मादेश का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। "फिर तो विश्वासघाती आतंकवादी गोलू का साथ देने वालों को मृत्युदंड देना उचित ही था," सब सहमत थे।

पूरे साल पशुओं ने पिछले साल से भी अधिक मेहनत की। पवनचक्की को बनाना, उसकी दीवारों को पहले की तुलना में दोगुना मोटा रखना, नियत समय के भीतर उसे पूरा करना, इसके साथ ही बाड़े के सारे नियमित काम– सब बहुत मेहनत मांगते थे। कई बार पशुओं को लगा कि वे बहुत ज्यादा काम कर रहे हैं और मुंगेरीलाल के दिनों की तुलना में कोई अच्छी खुराक भी नहीं पा रहे हैं। लेकिन रविवार की सुबह भीम अपने पैर में कागज की एक लंबी सूची थामे आता और नये आंकड़े सुनाता। वह आंकड़ों से सिद्ध करता कि हर प्रकार के अनाज, फल, सब्जियों के उत्पादन में 200 से 300 प्रतिशत की और कुछ में तो

500 प्रतिशत की बढ़त हुई है। पशु आंकड़ों पर अविश्वास करते तो कैसे? अब उन्हें धुंधला-धुंधला-सा भी याद नहीं था कि बगावत से पहले हालात कैसे थे। लेकिन वे इसका इंतजार जरूर करते थे कि कभी तो वह दिन आएगा जब आंकड़े कम और खाना ज्यादा होगा।

अब राजा पंद्रह-पंद्रह दिन तक प्रकट नहीं होता था। जब कभी वह बाहर आता तो उसके साथ न केवल कुत्तों की फौज होती बल्कि अब उसके आगे-आगे एक काला मुर्गा भी चलता था। वह राजा का बिगुल बजाने का काम करता। जब भी राजा बोलता, उससे पहले यह मुर्गा कुकडूं-कूं की बांग लगाता। फिर यह भी पता चला कि घर के भीतर भी राजा दूसरों से अलग एक बेहतर कमरे में अकेला रहता है और अकेले ही चांदी के महंगे बर्तनों में खाना खाता है। हर समय दो कुत्ते उसकी सेवा में खड़े रहते हैं। अब दो वर्षगांठों के अलावा राजा के जन्मदिन पर भी बंदूक दागी जाने लगी।

अब राजा को सिर्फ राजा कहकर नहीं, हमारे प्रधान, नेता राजा जैसा कुछ कहकर ही संबोधित किया जाता। सूअर उसके लिए नित नई उपाधियां गढ़ते रहते। ये उपाधियां कुछ ऐसी होतीं थीं— पशु-पिता, मानव जाति के लिए आतंक, भेड़-समुदाय के रक्षक, चूजों के सखा आदि-आदि। भाषण देते वक्त भीम की आंखें तब डबडबा जातीं जब वह राजा की बुद्धिमत्ता के गुणगान करता, उसके हृदय की पवित्रता के गीत गाता। वह दूसरे बाड़ों में अज्ञानता और गुलामी का जीवन जी रहे पशुओं के प्रति प्रधान राजा के हृदय में फूटते प्रेम और करुणा के बारे में बताता। यह सामान्य बात हो गई थी कि किसी भी सफलता या सौभाग्य का श्रेय राजा को दिया जाता था। एक मुर्गी दूसरी मुर्गी से कहती सुनी जाती थीः "हमारे नेताजी प्रधान राजा के मार्गदर्शन में मैंने छह दिन में पांच अंडे दिए हैं" या दो गायें तालाब पर पानी पीते हुए आपस में कहतीं : "इसका श्रेय हमारे नेताजी प्रधान राजा को जाता है कि इस पानी का स्वाद इतना अच्छा है।" जनावरपुरा की आम भावनाओं को कचराजी ने एक कविता 'प्रधान राजा' में बहुत अच्छी तरह अभिव्यक्त किया था :

हे अनाथों के पिता हमारे प्रधान राजा
आप हैं खुशियों का झरना
हमेशा हमारी बाल्टी खानों से भरना।
ओ पिता
कैसे हमारी आत्मा खुशी पाती है
जब वह आपको देख पाती है
शीतल और प्रभावशाली आपके नयन
जैसे चमके सूर्य गगन
हे प्रधान राजा!
आप ही तो हैं सबको देने वाले
दिन में दो बार भर पेट खाना
साफ पुआल पर लेटना-सोना
हर प्राणी
छोटा या बड़ा

सोता आराम से अपने थान में पड़ा
सबको देखते रहते आपके नयन
प्रधान राजा
काश, मेरा कोई छोटा होता
और इससे पहले कि
वह बड़ा हो जाता
बोतल या बेलन की तरह
लुढ़कना सीख जाता
तो हम उसे सिखाते
आपके प्रति निष्ठावान बनना
आपके प्रति सच्चा बनना
जी हां हम तो यही चाहते कि
उसकी पहली घुर्र-घुर्र से आवाज आती : प्रधान राजा, हे हमारे प्रधान राजा!

राजा ने कचरा की इस कविता को 'महान रचना' कहकर स्वीकार कर लिया और इसे बड़े खेत में लिखे सात धर्मादिशों से परे, दूसरे सिरे की दीवार पर अंकित करवा दिया। इसके नीचे राजा की एक तस्वीर भी लगा दी गई। भीम ने सफेद रंग से सारी कलाकारी की।

राजकमल की एजेंसी की मदद से राजा सुल्तान और रसराज के साथ किन्हीं जटिल समझौतों में उलझा हुआ था। इमारती लकड़ी का कट्टा अभी भी बिका नहीं था। सुल्तान इसे पाने के लिए ज्यादा आतुर था लेकिन वह उचित दाम देने के लिए तैयार नहीं था। नयी अफवाहें भी फैलने लगीं थीं। एक यह भी कि रसराज और उसके आदमी जनावरपुरा पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। रसराज को पवनचक्की फूटी आंख नहीं सुहाती थी, सो वह उसे भी नष्ट करना चाहता है। कभी-कभी ऐसा भी सुनाई पड़ता था कि राजा का रंगपुरा बाड़े की तरफ ज्यादा झुकाव है। गर्मियों में यह सुनकर सभी सचेत-अचेत हो गए कि तीन मुर्गियों ने कबूल किया है कि गोलू से प्रेरणा पाकर वे राजा को मारने के एक षड्यंत्र में शामिल हुई थीं। उन्हें भी तत्काल प्राणदंड दे दिया गया। राजा की सुरक्षा-व्यवस्था और कड़ी कर दी गई। अब रात के वक्त चार कुत्ते उसके बिस्तर के चारो कोनों की निगरानी करते। पिंकी नाम के छोटे-से सूअर को यह जिम्मेवारी सौंपी गई कि वह राजा के खाने से पहले सारा खाना चख कर देखे कि कहीं उसमें जहर तो नहीं मिलाया गया है।

लगभग इन्हीं दिनों यह भी सुनने में आया कि राजा ने इमारती लकड़ी के कट्टे सुल्तान को बेचने की व्यवस्था कर ली है। जनावरपुरा और रामपुरा के बीच कुछेक उत्पादों के आदान-प्रदान के लिए भी एक नियमित करार होने की खबर चल पड़ी थी। वैसे तो राजा और सुल्तान के बीच राजकमल ने ही संबंध जोड़ा था लेकिन अब वे दोनों गहरे दोस्त हो गए थे। एक मनुष्य के रूप में सुल्तान पर पशुओं को भरोसा नहीं था लेकिन वे उसे धूर्त रसराज की तुलना में ज्यादा मान देते थे। रसराज से उन्हें डर और नफरत दोनों थी।

गर्मियां खत्म होने पर थीं। जैसे-जैसे पवनचक्की के पूरा होने का वक्त नजदीक आ रहा था। आतंकी हमले की अफवाहें तेज होती जा रही थीं। अफवाह थी कि रसराज उनके खिलाफ

शस्त्रों और बंदूकों से लैस बीस आदमियों का हमलावर दस्ता लाने की सोच रहा है। उसने मजिस्ट्रेट और पुलिस की मुट्ठी भी गर्म कर दी है ताकि जनावरपुरा के स्वामित्व के कागजात उसके हाथ आ जाने के बाद वे कोई सवाल न उठाएं। इतना ही नहीं, रंगपुरा की अंदरूनी खबरें भी दहला देने वाली थीं। बताया गया कि उसने अपने एक बूढ़े घोड़े को कोड़े मार-मारकर खत्म कर दिया है, वह अपनी गायों को भूखा मारता है, उसने अपने एक कुत्ते को भट्ठी में डालकर भून डाला है, वह शाम के वक्त अपने मुर्गों की टांगों में रेजर ब्लेड के धारदार टुकड़े बांधकर, उन्हें लड़वाता और मजे लेता है। जब अपने साथियों पर इस तरह के जुल्म की बातें जनावरपुरा के प्राणी सुनते तो गुस्से से उनका खून खौलने लगता। वे चीखते-चिल्लाते कि उन्हें रंगपुरा बाड़े पर हमला करने तथा मनुष्यों को निकाल बाहर कर, अपने पशुओं को आजाद कराने का अभियान चलाना है। लेकिन भीम उन्हें समझाता-बुझाताः "ऐसा उतावलापन ठीक नहीं है। देखो, प्रधान राजा अपनी चाणक्य-नीति से कैसे सबको चित्त करता है।"

रविवार की एक सुबह राजा तबेले में उपस्थित हुआ : "यह बात कहां से आई कि मैं रसराज से अपनी लकड़ियों का सौदा कर रहा हूं? ऐसे धूर्तों से लेन-देन करना मैं अपनी तौहीन समझता हूं।" फिर अगली बात कही उसने : "आज से हमारे कबूतर, जो बगावत की चिंगारियां फैलाने के लिए भेजे जाते थे, अब से रंगपुरा में कहीं भी नहीं उतरेंगे। मैं चाहता हूं कि अपने पुराने नारे को हम बदल दें और 'मनुष्य जाति का नाश हो' की जगह पर 'रसराज का नाश हो' नारा बुलंद करें।" इधर राजा ने कहा और उधर यह लागू भी हो गया।

गर्मियों के खत्म होते-होते गोलू की एक और कारस्तानी सामने आई। गेहूं की फसल में जंगली घास उग आई थी। आंखों देखी बात बताई गई कि किसी रात आकर गोलू ने गेहूं के बीजों में जंगली घास के बीज मिला दिए थे। किसने ऐसा करने में गोलू की मदद की? एक बत्तख ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। भीम ने इशारा किया और उस बत्तख ने सबके सामने तभी-के-तभी धतूरे के बीज निगलकर खुदकुशी कर ली। पशुओं को वहीं यह राज की बात भी पता चली कि अब तक जो सब यह मानते आ रहे थे कि गोलू को कभी 'परमवीर पशु' का सम्मान मिला था, वह गलत था : "कोरी अफवाह थी", भीम गरज उठा, "सच तो उल्टा ही है दोस्तो! तबेले की लड़ाई में पीठ दिखाकर भागने के लिए तब उसकी निंदा की गई थी।" फिर कुछ पशुओं को एतराज हुआ, "हमने सुना नहीं, यह देखा है!" भीम उनसे बात करता हुआ, उनके साथ बाड़े तक गया और वे जल्दी ही मान भी गए कि उनकी ही याददाश्त कमजोर हो गई है।

पूरी शरद ऋतु थकान से चूर कर देने वाली मेहनत से प्राणियों ने दो काम पूरे कर लिए। एक तो फसल समय पर काट ली गई। साथ-ही-साथ पवनचक्की भी बनकर तैयार हो गई। मशीनें अभी बाकी थीं जिनकी खरीदी के लिए राजकमल मोलभाव कर रहा था। लेकिन प्राणियों ने ढांचा बनाकर तैयार कर दिया था। नौसिखए कारीगरों और बाबा आदम के जमाने के औजारों, फूटी किस्मत और गोलू के अनेक षड्यंत्रों के बाद भी काम नियत समय पर पूरा कर लिया गया था। प्राणी थकान से चूर थे लेकिन गर्व से भरे भी थे। वे अपने उत्कृष्ट निर्माण के चारों और चक्कर लगाते और बार-बार कहतेः "हमारी यह नई पवनचक्की पहले वाली से कहीं सुंदर बनी है। इसकी दीवारें भी पहले से दूनी मोटी हैं। इसे दस गोलू गविस्फोटक लगाकर

भी तोड़ नहीं सकते।" जब वे सोचते कि जब पवनचक्की में पाल लग जाएंगे और डायनमो से वे चलने भी लगेंगे तो उनकी जिंदगी में कितना अंतर आ जाएगा, तो उनकी सारी थकान मिट जाती। वे पवनचक्की के चारों तरफ उछले, फुदके, किलकारियां लगाईं। अपने कुत्तों और मुर्गों की फौज के साथ राजा खुद आया। उसने काम का मुआयना किया, आगे बढ़कर पशुओं को बधाई दी और घोषणा भी की कि यह पवनचक्की अब से 'राजा-चक्की' कहलाएगी।

दो दिन बाद पशुओं को तबेले में एक विशेष बैठक के लिए बुलाया गया। यहां राजा ने उन्हें बताया कि उसने इमारती लकड़ी के कट्टे रसराज को बेच दिए हैं तो सभी आश्चर्य से मुंह बायें सुनते रह गए। राजा ने आगे बताया कि कल रसराज की गाड़ियां आएंगी और लकड़ी ढोना शुरू कर देंगी। रामपुरा के साथ अपनी दोस्ती का नाटक करते-करते ही राजा ने रसराज के साथ एक गुप्त करार कर लिया था।

भीम ने आंख नचाई, "जय हो, चाणक्य-नीति की जय हो!"

रामपुरा के साथ सभी संबंध तोड़ लिये गए। सुल्तान को अपमानजनक संदेश भेज दिए गए। कबूतरों से कहा गया कि वे रामपुरा बाड़े की तरफ देखें भी नहीं और 'रसराज का नाश हो' के अपने नारे के स्थान पर 'सुल्तान का नाश हो' का नारा लगाया करें। राजा ने पशुओं को आश्वस्त किया कि जनावरपुरा पर हमले के किस्से एकदम मनगढ़ंत हैं। ऐसी सारी अफवाहें गोलू और उसके एजेंटों ने उड़ाई हैं। यह रहस्य भी खोला गया कि गोलू तो दरअसल में रंगपुरा में कभी छुपा ही नहीं था। गोलू रामपुरा में पूरे ठाठ-बाट से, आराम की जिंदगी बसर कर रहा है और पिछले कई सालों से सुल्तान की पेंशन पर पल रहा है।

सभी सूअर राजा की चाणक्य-नीति पर दंग थे। रामपुरा के साथ दोस्ती का दिखावा करके उसने रसराज को अपनी कीमत बारह पाउंड बढ़ाने पर मजबूर कर दिया था। "लेकिन जान लो भाइयो," भीम ने कहा, "प्रधान राजा के दिमाग का कमाल है यह कि वास्तव में वे किसी पर भी, कभी भी विश्वास नहीं करते हैं - रसराज पर भी नहीं। जानते हो, रसराज लकड़ी के दाम चेक जैसी किसी चीज के माध्यम से चुकाना चाहता था। चेक कागज का एक टुकड़ा होता है शायद जिस पर कीमत अदा करने का वचन लिखा होता है। लेकिन राजा तो उसके भी गुरु हैं। उन्होंने पहले ही मांग रख दी थी कि उन्हें भुगतान असली पांच पाउंड के नोटों में किया जाए और ये नोट लकड़ी उठाने से पहले उन्हें सौंप दिए जाएं। रसराज को ऐसा ही करना पड़ा। उसने जो कीमत चुकाई है वह पवनचक्की के लिए सारी मशीनें खरीदने के लिए पर्याप्त है।" सब भीम को देखते-सुनते रह गए।

इस बीच लकड़ी की ढुलाई तेजी से चल रही थी। जब सारा माल जा चुका तो रसराज की नगद रकम के दर्शन के लिए तबेले में एक विशेष सभा बुलाई गई। परम आनंद से मुस्कुराता हुआ, अपने दोनों मेडल धारण किए राजा चबूतरे पर रखे पुआल के सिंहासन पर पसर गया। उसके बगल में घर की रसोई से लाई गई चांदी की एक तश्तरी में नए कड़कड़ाते नोटों की गड्डी सजा कर रखी थी। पशु धीमे-धीमे भरपूर आंखों से नोटों को निहारते हुए कतार में गुजरे। बहादुर ने बैंक-नोटों को सूंघने की नीयत से अपनी नाक आगे की। उसकी सांस से चिकने सफेद नोट हिले और सरसरा उठे।

तीन दिन बाद भयानक हंगामा मच गया।

राजकमल पागलों की तरह पीला थोबड़ा लटकाए, अपनी साइकिल पर हड़बड़ाता हुआ आया। साइकिल अहाते में लुढ़काई और सीधे घर की तरफ लपका। अगले ही क्षण राजा के महल से गुस्से से भरी चीत्कार सुनाई दी। जंगल की आग की तरह यह खबर फैल गई कि वे सारे बैंक नोट नकली थे। रसराज ने सारी लकड़ी मुफ्त में हथिया ली थी।

राजा ने तत्काल ही सभी पशुओं को इकट्ठा होने के लिए कहा और भयंकर आवाज में वहीं पर रसराज को मौत की सजा सुनाई : "रसराज जैसे ही मिले, उसे जीते-जी खौलते पानी में डाल दिया जाए। और आप सावधान रहें, उसकी इस कपटपूर्ण करतूत के बाद कुछ और अनर्थकारी घट सकता है। मेरे पास खुफिया जानकारी है कि रसराज और उसके आदमी किसी भी वक्त हम पर हमला कर सकते हैं।" बाड़े में घुसने के सभी रास्तों पर पहरेदार खड़े कर दिए गए। चार कबूतरों को रामपुरा में समझौते के संदेश के साथ भेजा गया और उम्मीद की गई कि सुल्तान के साथ फिर से अच्छे संबंध बन सकेंगे।

अगली ही सुबह हमला हो गया। प्राणियों का नाश्ता हुआ भी नहीं था कि पहरेदारों ने भागते हुए खबर दी कि रसराज और उसके आदमी लोहे का गेट पार कर चुके हैं। गुस्से से भरे पशु पूरी बहादुरी से उनका मुकाबला करने आगे बढ़े लेकिन इस बार तबेले की लड़ाई की तरह उन्हें आसानी से विजय नहीं मिल पाई। वे कुल पंद्रह आदमी थे और उनमें से आधे दर्जन के पास बंदूकें थीं। पशु जैसे ही पचास गज की जद में आए, उन्होंने गोलियां चलाना शुरू कर दिया। भयानक विस्फोटों और भेदती गोलियों की बौछार पशु झेल नहीं पाए। राजा तथा बहादुर ने जोश तो पूरा दिलाया पर जल्दी ही उनके पैर उखड़ गए। कई तो पहले ही जख्मी हो चुके थे। उन्होंने भाग कर बाड़े की इमारतों में शरण ली और सावधानीपूर्वक दरारों और कोटरों से झांकने लगे। इस समय पूरा बाड़ा, चारागाह और पवनचक्की सब कुछ दुश्मनों के हाथ में थे। कुछ पलों के लिए तो लगा कि राजा भी हताश हो गया है। वह एक भी शब्द नहीं बोला। अपनी पूंछ मरोड़ता हुआ आगे-पीछे होता रहा। सब रामपुरा की दिशा में टुकुर-टुकुर निहार रहे थे और सोच रहे थे कि अगर सुल्तान और उसके आदमी मदद को आ जाएं तो अब भी बाजी पलट सकती है। लेकिन सबने देखा कि एक दिन पहले भेजे चारों कबूतर भी लौट आए। उनमें से एक के पास सुल्तान द्वारा भेजा कागज का एक टुकड़ा था जिस पर पेंसिल से लिखा था, 'जैसी करनी वैसी भरनी!'

रसराज और उसके आदमी पवनचक्की के पास पहुंचे और रुके। पशु गौर से देखने लगे। घबराहट के मारे उनमें सनसनी दौड़ रही थी। उनमें से दो आदमियों ने सब्बल और एक बड़ा हथौड़ा निकाल लिया। वे पवनचक्की को धराशायी करने जा रहे थे।

राजा चिल्लाया, "असंभव! हमने दीवारें इतनी मजबूत बनाई हैं कि वे सात दिन में भी इसे नहीं तोड़ पाएंगे। बहादुरी दिखाओ साथियो!"

बबलू आदमियों की हरकतें गौर से देख रहा था। सब्बल और हथौड़े वाले दोनों आदमी पवनचक्की की नींव के पास एक छेद बना रहे थे। बबलू ने अपना लंबोतरा मुंह हिलाया, "क्या आपको नजर नहीं आता कि वे क्या कर रहे हैं? वे उस छेद में विस्फोटक भरने वाले हैं।"

डर के मारे पशुओं की सांसें रुक गईं। बाहर निकलना असंभव था। कुछ ही मिनट बाद आदमी भागते दिखाई दिए और फिर कान फोड़ने वाला धमाका हुआ। कबूतर हवा में

फड़फड़ा कर उड़े। राजा के अलावा सभी उछलकर पेट के बल लेट गए और अपना मुंह छिपा लिया। जब वे दोबारा उठे तो पवनचक्की की जगह पर काला धुआं मंडरा रहा था। धीरे-धीरे धुआं छंटा तो सबने देखा : पवनचक्की का नामोनिशान नहीं था।

पशुओं का खून खौल उठा। पल भर पहले के डर और निराशा की जगह आक्रोश ने ले ली थी। 'बदला लो' के बुलंद हुंकार के साथ किसी के आदेश का इंतजार किए बिना सब पशु एकजुट होकर आगे बढ़े। दुश्मनों पर यह नया हमला था। इस बार उन्होंने उन क्रूर गोलियों की भी परवाह नहीं की जो उन पर ओलों की तरह बरस रही थीं। एक बर्बरतापूर्ण, पीड़ादायक लड़ाई चल पड़ी। आदमियों ने बार-बार गोलियां चलाई लेकिन पशु बढ़ते-बढ़ते उनके एकदम निकट आ गए तो उन्होंने अपनी लाठियों और अपने भारी जूतों से वार करना शुरू कर दिया। एक गाय, तीन भेड़ें और दो बत्तख खेत रहे, और घायल तो लगभग सभी हो गए थे। राजा लड़ाई का संचालन पीछे से कर रहा था। उसकी पूंछ का सिरा भी गोली लगने से कट गया था। घायल होने से तो मनुष्य भी नहीं बचे। बहादुर की लातों से तीन के तो सिर ही फूट गए। गाय के सींगों से एक आदमी की अंतड़ियां बाहर आ गईं। जस्सी और लस्सी बकरियों ने एक आदमी की पैंट फाड़ दी। और तभी राजा के निजी अंगरक्षक नौ कुत्तों ने आदमियों पर पीछे से हमला कर दिया। भगदड़ मच गई। राजा ने कुत्तों को हिदायत दे रखी थी कि वे बाड़ के पीछे से घात लगा कर हमला करेंगे। ऐसा ही हुआ। जब आदमियों ने देखा कि वे चारों ओर से घिर चुके हैं और फंस सकते हैं तो रसराज ने इशारा किया कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, यहां से भाग निकलने में ही खैरियत है। अगले ही पल कायर दुश्मन अपनी जान बचाकर भागते नजर आए। पशुओं ने उनका पीछा किया और कांटेदार बाड़ के बाहर खदेड़ते-खदेड़ते भी उन्हें दो-चार लातें जमा दीं।

वे जीत तो गए थे लेकिन सभी बुरी तरह घायल हो गए थे। जख्मों से खून बह रहा था। वे लंगड़ाते हुए अपने बाड़े की तरफ लौटे। घास पर इधर-उधर बिखरी अपने साथियों की लाशें देख कर कुछ की आंखों में आंसू भर आए। वे शोकमग्न वहां खड़े हो गए जहां कभी पवनचक्की हुआ करती थी। हां, अब वह नहीं थी वहां। उनकी मेहनत की आखिरी निशानी भी बाकी नहीं थी। उसकी बुनियाद भी नष्ट हो चुकी थी और इस बार तो दोबारा बनाने के लिए वे नीचे गिरे पत्थरों का इस्तेमाल भी नहीं कर सकते थे। धमाका इतनी जोर का था कि पत्थर सैंकड़ों गज की दूरी तक फैल गए थे। ऐसा लगता था जैसे वहां कभी कोई पवनचक्की थी ही नहीं।

वे जैसे ही घर के निकट पहुंचे, भीम फुदकता, अपनी पूंछ हिलाता संतुष्ट भाव से उनके पास आया। लड़ाई के दौरान वह रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था। तभी पशुओं ने घर की इमारत की तरफ से बंदूक चलने की और विजयनाद वाली बिगुल की आवाज सुनी।

"यह बंदूक किसलिए चलाई जा रही है?" बहादुर ने पूछा।

"जीत का जश्न मनाने के लिए!" भीम उत्तेजित होकर चिल्लाया।

"कैसी जीत?" बहादुर ने कहा। उसके घुटनों से खून बह रहा था। उसकी एक नाल निकल आई थी और एक खुर चिर गया था। पिछली टांग में दर्जन-भर गोलियां धंसी हुई थीं।

"कैसी जीत पूछ रहे हो? साथियो, क्या हमने दुश्मन को अपनी पवित्र भूमि से, अपने

जनावरपुरा से भगा नहीं दिया है?"

"लेकिन उन्होंने हमारी पवनचक्की मटियामेट कर दी है। हमारी दो साल की मेहनत पर पानी फेर दिया है।"

"तो क्या हुआ, हम दूसरी पवनचक्की बना लेंगे! हम तो ऐसी छह पवनचक्कियां बना सकते हैं। आप समझ रहे हैं कि हमने कितना महान काम करके दिखाया है? इस समय हम जिस जमीन पर खड़े हैं, यह जमीन कुछ समय पहले हमारे दुश्मन के कब्जे में थी। प्रधान राजा के नेतृत्व का आभार कि हमने अपना चप्पा-चप्पा वापस जीत लिया है।"

"हमने वही जीता जो हमारे पास पहले से था," बहादुर ने कहा।

"नहीं, हमने वह जीता जो हम हार चुके थे," भीम ने कहा।

दोनों लंगड़ाते हुए अहाते में आए। बहादुर की टांग में धंसी गोलियां टीसें मार रही थीं। वह फिर से पवनचक्की बनाने का भारी-भरकम काम परख रहा था। फिर एक बार बुनियाद से शुरू करना होगा काम। तुरंत ही अपने मन में उसने इस काम का बीड़ा उठा लिया। लेकिन आज पहली ही बार उसे यह महसूस हुआ कि वह ग्यारह वर्ष का हो चुका है और उसकी मजबूत मांसपेशियां शायद अब पहले जैसी नहीं रहीं।

तभी पशुओं ने हरा झंडा लहराते देखा और दोबारा बंदूकों की आवाज सुनी - पूरी सात गोलियां दागी गईं। राजा ने सबको वीरता के लिए बधाई दी। लड़ाई में मारे गए पशुओं का सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया गया। बहादुर और बिजली ने शव-वाहिनी के रूप में इस्तेमाल की गई गाड़ी खींची। राजा खुद जुलूस के आगे-आगे चलता रहा। पूरे दो दिन तक जश्न मनाया जाता रहा। गाना-बजाना हुआ, भाषण दिए गए, कुछ और गोलियां दागी गईं। प्रत्येक पशु को एक-एक संतरे का विशेष उपहार दिया गया। हरेक चिड़िया को दो औंस अनाज मिला और सभी कुत्तों को तीन-तीन बिस्किट। यह घोषणा भी की गई कि यह लड़ाई 'पवनचक्की युद्ध' कहलाएगी। राजा ने एक नए अलंकरण की घोषणा की - 'समर-योद्धा'; और इससे खुद को ही सम्मानित कर लिया। खुशियों के इस हल्ले-गुल्ले में बैंक नोटों का दुर्भाग्यपूर्ण मामला भुला दिया गया।

इस बात को कुछ ही दिन बीते थे कि सूअरों को घर के तहखाने में व्हिस्की की एक पेटी मिली। घर पर पहली बार कब्जा करते समय इस पर किसी की निगाह नहीं गई थी। उस रात घर के भीतर से जोर-जोर से गाने-बजाने की आवाजें आती रहीं। सभी हैरान थे कि इस धुन में 'भारत के जनावर' की धुन भी मिली हुई थी।

लगभग साढ़े नौ बजे मुंगेरीलाल का पुराना, बड़ा-सा, एक तरफ झुका हुआ हैट पहने राजा घर के पिछवाड़े में साफ-साफ देखा गया। वह लपकता हुआ अहाते में जाकर कहीं गायब हो गया। थोड़ी ही देर बाद वह वापस भीतर घुस आया। सुबह का नजारा अलग ही था। घर में गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था। सभी सूअर बेजान-से पड़े थे। कोई हिल-डुल भी नहीं रहा था। नौ बजने को हुए तो भीम प्रकट हुआ। वह धीमे-धीमे चल रहा था मानो थका-हारा हो। उसकी आंखें सुस्त थीं, पूंछ निर्जीव-सी लटक रही थी। वह गंभीर बीमार लग रहा था। उसने सब पशुओं को इकट्ठा होने के लिए कहा और फिर बताया : "एक बहुत ही दुखद खबर सुनाने जा रहा हूं साथियो, प्रधान राजा मरने वाले हैं।"

अफसोस की एक चीख उभरी। घर के दरवाजों के बाहर पुआल बिछा दिया गया और उस पर पशु संभल-संभलकर चल रहे थे। अपनी आंखों में आंसू भरे वे एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि भगवान न करे लेकिन यदि उनके नेताजी उनसे छिन जाएंगे तो हमारा क्या होगा? आखिर गोलू राजा के भोजन में जहर मिलाने में सफल हो ही गया। ग्यारह बजे भीम एक दूसरी घोषणा करने बाहर आया : "इस धरती पर राजा ने अपनी अंतिम आज्ञा जारी की है कि शराब का सेवन करने वाले को मृत्युदंड दिया जाएगा।"

शाम तक राजा की हालत कुछ-कुछ सुधर गई और अगली सुबह भीम ने सबको बताया कि राजा तेजी से ठीक हो रहे हैं। शाम तक राजा काम पर आ चुके थे। अगले दिन पता चला कि उन्होंने राजकमल से कहा है कि वह शहर से शराब बनाने आदि विषय पर कुछ पुस्तिकाएं खरीद लाए। सप्ताह भर बाद राजा का आदेश आया : "फल के बगीचे के परे के छोटे बाड़े में जुताई की जाए।"

"तो परिश्रम करने की उम्र पूरी कर चुके पशुओं के लिए अलग बाड़ा बनाने की सुंदर योजना फिर से शुरू की जा रही है!", सबने कहा और सब खुश हुए। सबको लगा कि चारागाह में घास खत्म हो तो इसमें फिर से बीज डाले जाएंगे। लेकिन जल्दी ही यह पता चला कि राजा इसमें जौ बोना चाहता है।

इन्हीं दिनों एक दूसरी विचित्र घटना भी घटी। रात लगभग बारह बजे जोरदार धमाका हुआ। सभी पशु अपने-अपने थान से भाग कर आए। चांदनी रात थी। बड़े खेत की आखिरी दीवार के नीचे, जहां सात धर्मादेश लिखे हुए थे, एक सीढ़ी टूटी पड़ी थी। उसी के पास भीम औंधा पड़ा था। हाथ भर दूर एक लालटेन, रंगाई का ब्रश और सफेद रंग का डिब्बा भी पड़ा था। कुत्तों ने तत्काल भीम के आसपास घेरा बना लिया और जैसे ही वह चलने लायक हुआ, कुत्ते उसे घर के भीतर ले गये। बूढ़े बबलू के अलावा कोई भी समझ नहीं पाया कि आखिर हुआ क्या था। उसने अपनी मुंडी हिलाई लेकिन बोला कुछ भी नहीं।

कुछ दिन बाद कमली सात धर्मादेश पढ़ रही थी, तो उसे एक और धर्मादेश ऐसा मिला कि जिसे पशुओं ने गलत रट रखा था। पांचवां धर्मादेश कहता थारू 'कोई भी पशु शराब नहीं पिएगा' लेकिन इसमें एक शब्द और भी था जिसे वे शायद भूल गए थे। धर्मादेश में अब लिखा था : 'कोई भी पशु अधिक शराब नहीं पिएगा।'
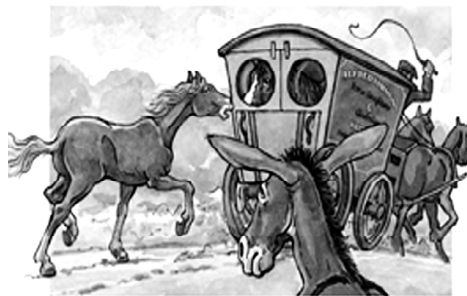
बहादुर के फटे खुर को ठीक होने में बहुत समय लगा। विजय-पर्व समाप्त होने के साथ ही पवनचक्की का काम फिर शुरू हो गया। बहादुर ने एक दिन की भी छुट्टी लेने से इंकार कर दिया। लेकिन उसकी हालत अच्छी नहीं थी। शाम को उसने बिजली को अकेले में बताया कि उसकी एंड़ी बहुत तकलीफ दे रही है। बिजली जड़ी-बूटियां चबा-चबा कर

उसके लेप से बहादुर की एंड़ी का इलाज करती और बबलू के साथ बहादुर से इतनी मेहनत न करने का इसरार भी करती : "बहादुर भाई, जानते हो न कि घोड़ों के फेफड़े हमेशा काम करते नहीं रह सकते?" बहादुर सुना-अनसुना करता जाता : "तुम दोनों जान लो कि अब मेरी एक ही आकांक्षा है कि जाने से पहले मैं पवनचक्की को अपनी आंखों से चलता देख लूं।"

जनावरपुरा में जब गणतंत्र के कानून पहली बार बनाए गए तो घोड़ों और सूअरों के लिए रिटायरमेंट की उम्र बारह वर्ष, गायों के लिए चौदह, कुत्तों के लिए नौ, भेड़ों के लिए सात और मुर्गियों-बत्तखों के लिए पांच वर्ष रखी गई थी। बुढ़ापे के लिए उदार पेंशन भी रखा गया था। तय यह भी किया गया था कि घोड़े के लिए दस किलो अनाज और सर्दियों में तीस किलो सूखी घास और सार्वजनिक छुट्टियों पर एक गाजर या एक संतरा पेंशन में दिया जाएगा।

इस बीच जिंदगी मुश्किलों से भरी रही। सर्दियों का मौसम पिछले साल जैसा ही ठिठुराने वाला था। भोजन की ज्यादा तंगी थी। सूअरों और कुत्तों के अलावा सबके राशन में फिर से कटौती की गई। भीम ने स्पष्ट किया कि राशन में नाप-तौल कर समानता लाना पशुवाद के सिद्धांतों के खिलाफ होगा। उसने यह भी सिद्ध कर दिया कि जनावरपुरा में खाने-पीने की कोई कमी न थी, न है। देखा जाए तो मुंगेरीलाल के दिनों की तुलना में सुधार तो हुआ ही था। भीम अपनी तीखी-तेज आवाज में पूछता था : "क्या यह सच नहीं है कि आज हमें मुंगेरीलाल की तुलना में कहीं ज्यादा जई, ज्यादा सूखी घास, ज्यादा मक्का मिल रहा है? अब हमें कम घंटे काम करना पड़ता है और अच्छी क्वालिटी का पीने का पानी मिल रहा है? हमारे बाल-बच्चे सुरक्षित व स्वस्थ हैं, हमारे थानों में ज्यादा पुआल है, हमें पिस्सू कम सताते हैं?" भीम बोलता जाता, सारे प्राणी सर हिलाते जाते। वे गुलामी के दिन थे; ये आजादी के दिन हैं। इसी से सारा फर्क पड़ जाता था।

शरद ऋतु में चार सूअरनियों ने कमोबेश एक साथ बच्चे जने। कुल मिला कर इकत्तीस नन्हें चितकबरे सूअर! बाड़े भर में सिर्फ एक ही सूअर ऐसा था जिसे बधिया नहीं किया गया था-राजा। इसलिए यह पता लगाना मुश्किल नहीं था कि ये बच्चे किसके हैं। फिर घोषणा हुई कि जब ईटें और लकड़ियां खरीदी जाएंगी तब घर के बगीचे में एक स्कूल भी बनाया जाएगा। तब तक नन्हे सूअरों को राजा खुद ही पढ़ा-लिखा रहा था। उनसे कहा गया था कि वे दूसरे पशु बच्चों के साथ न खेला करें। लगभग इन्हीं दिनों यह कानून भी बना : जब रास्ते में सूअर और अन्य पशु आमने-सामने हो जाएं तो सूअरों के लिए रास्ता छोड़ दें। यह भी तय हुआ कि सभी सूअर, चाहे वे किसी भी स्तर के हों, अब रविवार को अपनी पूंछों पर हरे रिबन लगा सकेंगे।

जनावरपुरा पैसों की तंगी से घिरा था। स्कूल की इमारत के लिए ईटें, रेती, चूना खरीदे जाने थे तो पवनचक्की के लिए भी पैसा बचाना जरूरी था। लालटेनों के लिए तेल, घर के लिए मोमबत्तियां और राजा के लिए ढेर सारी चीनी (राजा का निर्देश था कि दूसरे सूअर चीनी नहीं खाएंगे क्योंकि चीनी खाने से सब मोटे हो जाएंगे)। दूसरी भी तो पचीसों चीजें थीं जिन्हें खरीदना या बदलना था जैसे औजार, कीलें, डोरियां, कोयला, तार, लोहा-लक्कड़ और फिर कुत्तों

के बिस्किट। सबके लिए पैसा, सो सूखी घास का एक गट्ठर और आलू की फसल का कुछ हिस्सा बेच दिया गया, अंडों का ठेका बढ़ा कर छह सौ अंडे प्रति सप्ताह कर दिया गया। इससे मुर्गियों के हिस्से इतने कम अंडे आए कि वे बमुश्किल अपनी संख्या बराबर रख पाने लायक चूजे दे पाईं। दिसंबर में घटाया राशन फरवरी में फिर घटा दिया गया। तबेलों में लालटेन जलाने की मनाही हो गई लेकिन मुटियाते सूअर पहले जैसी सुविधाएं भोगते रहे।

फरवरी के आखिरी दिनों की उस दोपहर की बात है जब एक गर्म-सी, गाढ़ी घनी, भूख जगा देनेवाली खूशबू रसोईघर से निकल सब दूर फैलने लगी। पशुओं ने ऐसी खुशबू कभी नहीं सूंघी थी। किसी ने कहा कि यह जौ पकने की महक है। भूख से बेहाल प्राणियों को एक बार तो यह सुखद भ्रम भी हुआ कि कहीं उनके लिए गरमागरम भोजन तो तैयार नहीं किया जा रहा है? लेकिन भोजन तो आया नहीं, आई यह घोषणा : अब से सारी जौ सूअरों के लिए आरक्षित रहेगी। यह खबर भी फैली कि आजकल हर सूअर को रोजाना एक गिलास बीयर भी राशन में मिलता है। राजा चार बीयर लेता है जो उसे हमेशा चांदी की प्याली में परोसी जाती है।

लेकिन अब गाना-बजाना, भाषण-जुलूस, स्वैच्छिक प्रदर्शन संघर्षों-सफलताओं का त्योहार जोर-शोर से मनाया जाने लगा। पशुओं को इन समारोहों में आनंद आता। बार-बार यह याद दिलाया जाना भी उन्हें सुखकर लगता कि हालात चाहे जैसे हों, वे सचमुच अपनी मर्जी के मालिक हैं! वे भूल ही जाते कि उनके पेट अक्सर खाली होते हैं।

जनावरपुरा गणतंत्र बना तो राष्ट्रपति का चुनाव जरूरी हो गया। उम्मीदवार एक ही था - राजा। उसे निर्विरोध चुन लिया गया। उसी दिन यह भी बताया गया कि गोलू और मुंगेरीलाल के बीच सांठ-गांठ के कुछ नये दस्तावेज मिले हैं जिनसे रहस्य यह खुला कि गोलू ने 'तबेले की लड़ाई' में पशुओं को हराने की हर कोशिश ही नहीं की थी बल्कि वह तो खुलेआम मुंगेरीलाल की तरफ से ही लड़ रहा थ : "अरे, मनुष्यों की फौज का असली लीडर तो वही था। हमले के वक्त वह चिल्ला रहा था : 'आदमी अमर रहे!' गोलू की पीठ पर युद्ध की मार के जितने निशान थे वे राजा की दांतों के थे। राजा ने जब देखा कि गोलू देशद्रोह कर रहा है तो उन्होंने उसे वहीं-के-वहीं सजा दी थी।"

अभी गर्मियां चल ही रही थीं कि काला कौवा कालू अचानक ही जनावपुरा वापस लौट आया। वह बरसों बाद लौटा था लेकिन बदला बिलकुल नहीं था। वह किसी डाल पर जा बैठता, अपने काले पंख फड़फड़ाता और घंटों यही बक-बक करता : "वहां, उधर साथियो, उस तरफ आपको जो काले बादल दिखाई दे रहे हैं ना, उन्हीं के परे है मिसरी पर्वत! ऐसा सुखद देश जहां हम बदनसीबों को अपनी कमरतोड़ मेहनत से हमेशा के लिए छुट्टी मिल जाएगी।" कई पशु उसकी बात पर भरोसा करते थे। कालू के प्रति सूअरों का रवैया अजीब-सा था। निठल्ले कालू को रोजाना चुल्लू भर शराब के साथ जनावरपुरा में रहने दिया गया था।

खुर की चोट में आराम के बाद बहादुर ज्यादा ही मेहनत करने लगा था। बाड़े के नियमित कामों के अलावा पवनचक्की भी थी और नन्हें सूअरों का स्कूल भी था। कई-कई बार भूखे पेट काम के लंबे घंटे निकालना मुश्किल हो जाता लेकिन बहादुर कभी विचलित न

होता। लेकिन देख सभी रहे थे कि उसकी खाल की चमक फीकी पड़ गई थी, विशाल पुट्ठे सिकुड़ गये थे। लेकिन सभी एक-दूसरे को विश्वास दिलाते : "देखना, वसंत की घास जैसे ही आएगी, बहादुर पहले जैसा हो जाएगा।"

वसंत आया भी, घास लहलहाई भी लेकिन बहादुर थोड़ा और कमजोर ही हो गया। अब वह शरीर-बल से नहीं, मनोबल से काम कर पा रहा था। उसका बारहवां जन्मदिन आने ही वाला था। पेंशन पर जाने से पहले वह अपना आखिरी काम निबटा लेना चाहता था : तराशे हुए पत्थरों का अच्छा-खासा ढेर!

शाम ढलने को थी कि तभी बाड़े में आग की तरह यह खबर फैली कि बहादुर को कुछ हो गया है। कबूतर फड़फड़ाते हुए पवनचक्की की तरफ उड़ चले और जैसे गए थे वैसे ही लौटे भी : "हां, बहादुर भाई वहीं गिरा पड़ा है।"

सभी टेकरी की तरफ लपके। बहादुर गिरा पड़ा था। गाड़ी के हाथों के बीच से गर्दन बाहर को निकली हुई थी। आंखें पथरा गई थीं। सारा बदन पसीने से लथपथ। मुंह से ताजा खून की एक पतली लकीर बाहर आ रही थी। बिजली घुटनों के बल बैठ गई : "बहादुर," वह चीखी, "तुम ठीक तो हो?"

"ओह, मेरा फेफड़ा," बहादुर की धीमी कमजोर आवाज सुनाई दी, "लेकिन अब कोई परवाह नहीं, तुम लोग मेरे बगैर भी पवनचक्की का काम पूरा कर लोगे। देखो न, अब तो पत्थरों का अच्छा-खासा ढेर भी जमा हो गया है। सच कहूं, मैं अपने रिटायरमेंट की राह ही देख रहा था। अब तो अपना बबलू भी बूढ़ा हो चला है। वे उसे भी शायद मेरे साथ ही रिटायर कर देंगे। हम दोनों एक-दूसरे के साथ आराम से रहेंगे।"

बिजली ने बहादुर की कोई बात नहीं सुनी। "हमें तुरंत मदद की जरूरत है," वह घबराती हुई बोली, "दौड़ो, कोई भीम को जा कर बताओ कि यहां क्या हुआ है।"

लगभग पंद्रह मिनट बाद भीम आया- सहानुभूति और चिंता से भरा हुआ। उसने बताया कि प्रधान राजा को अपने जनावरपुरा के सबसे निष्ठावान कामगार के साथ हुई इस दुखद दुर्घटना का जैसे ही पता चला, वे बहुत व्यथित हो गए। वे बहादुर को इलाज के लिए शहर के बड़े अस्पताल में भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं।

यह सुनते ही सभी प्राणी बेचैन हो उठे। रोजी और गोलू को छोड़ कर दूसरा कोई भी नहीं था कि जो जनावरपुरा छोड़ कर गया हो। उन्हें यह सोच कर अच्छा नहीं लग रहा था कि उनका बीमार साथी मनुष्यों के हवाले किया जाए। भीम ने सबसे सहानुभूति जताई : "पशु-सिद्धांत तो वही कहता है जो आप कह रहे हैं। मैं भी वही मानता हूं। लेकिन बहादुर ...उसकी जान यदि दुश्मन मनुष्य बचा सकता है तो हमें वह कोशिश बाकी नहीं रखनी चाहिए। जनावरपुरा की तुलना में शहर के पशु-चिकित्सक बहादुर का इलाज ज्यादा अच्छा करेगा, हमारे प्रधान राजा ऐसा नहीं मानते तो बहादुर की खबर सुनते ही शहर से बातचीत कर सारी व्यवस्था क्यों करवाते?" बातें चलती रहीं और प्राणियों का मन भी बदलता रहा। बहादुर की हालत थोड़ी संभली। वह मुश्किल से खड़ा हुआ और लंगड़ाता हुआ तबेले की ओर चला। बिजली और बबलू ने वहां जा कर पहले ही नया पुआल बिछा कर नरम बिस्तर तैयार कर दिया था।

अगले दो दिन बहादुर अपने तबेले में ही पड़ा रहा। सूअरों ने गुलाबी दवा की एक बड़ी शीशी भिजवा दी थी। यह उन्हें अपने बाथरूम में दवाओं के खाने में पड़ी मिल गई थी। खाना खाने के बाद बिजली बहादुर को दो बार यह दवा देती। वह तबेले में उसके पास ही रहती, उससे बातें करती जब कि बबलू मक्खियां उड़ाता रहता था। बहादुर ने कहा कि जो हुआ सो हुआ, अफसोस करने से क्या होगा : "अगर मैं जल्दी चंगा हो गया तो मानो दो या तीन साल और जिंदा रहूंगा, तो मैं वे दो-तीन साल चारागाह के एक कोने में आराम करते हुए बिताऊंगा। ऐसा पहली बार होगा कि मैं फुर्सत से पढ़-लिख सकूंगा। कितना कुछ जानने-समझने को बाकी है।" बिजली को याद आया कि बहादुर वर्णमाला के बाकी बचे अक्षर अब तक नहीं सीख सका था।

बबलू और बिजली बहादुर की सेवा में चाहे जितना काम कर रहे हों उन्हें अपना काम करने खेतों में तो जाना ही पड़ता था। उस दिन दोपहर में भी ऐसा ही था। अचानक सबने देखा कि बबलू को तेजी से रेंकता हुआ भाग कर आ रहा है : "जल्दी, जल्दी करो... तुरंत आओ, वे लोग बहादुर को ले जा रहे हैं।" सबने नजर घुमाई तो देखा कि घर के पास एक गाड़ी खड़ी थी।

सूअर के आदेश की परवाह किए बिना सभी घर की तरफ दौड़ पड़े। अहाते में एक बंद गाड़ी खड़ी थी। घोड़े जुते हुए थे। गाड़ी के दोनों तरफ कुछ लिखा हुआ था और चालक की गद्दी पर बड़ी-सी टोपी पहने, बदमाश-सा दीखने वाला एक आदमी बैठा हुआ था। बहादुर का तबेला खाली था।

सारे पशु गाड़ी के चारों तरफ भीड़ लगा कर खड़े हो गए : "अलविदा, बहादुर अलविदा!"

"मूर्खो, जाहिलो," बबलू चिल्लाया, "मूर्खों, तुम्हें नजर नहीं आता कि इस गाड़ी के दोनों तरफ क्या लिखा है?"

सारे ठिठक गए। कमली ने अंटक-अंटक कर पढ़ना शुरू किया ही था कि सबको धकेलता बबलू आगे आया और मारक सन्नाटे को तोड़ता हुआ जोर से पढ़ने लगा : "भंवरलाल, घोड़ा कसाई और हड्डी की गोंद के निर्माता, रंगपुरा। चमड़े और हड्डी चूरे के विक्रेता। कुत्ता-घर भी मिलेगा।"

"तुम्हें समझ में नहीं आता है इसका मतलब? ये बहादुर को कसाईखाने ले जा रहे हैं।"

सबके मुंह से एक साथ चीख निकल गई तभी गद्दी पर बैठे आदमी ने घोड़ों को चाबुक मारा और गाड़ी तेजी से अहाते से बाहर जाने लगी। सभी प्राणी गला फाड़ते, ऊंची आवाज में चिल्लाते उसके पीछे लपके। बिजली धक्का-मुक्की करके आगे आ गई। गाड़ी अब गति पकड़ने लगी थी लेकिन बिजली अपना भारी-भरकम शरीर लिये सरपट दौड़ रही थी : "बहादुर, बहादुर" वह चिल्लाई। सबने पुकार लगाई : "बहादुर! बहादुर", और फिर गाड़ी की पिछली खिड़की में से बहादुर का सफेद, धारीवाला चेहरा ऊपर आया। उसने बाहर का हल्ला-गुल्ला सुन लिया था शायद।

"बहादुर," बिजली तेज आवाज में चिल्लाई, "बहादुर, बाहर निकलो। जल्दी बाहर निकलो। ये तुम्हें तुम्हारी मौत के पास ले जा रहे हैं।" सभी चिल्लाने लगे लेकिन घोड़ागाड़ी तेज होती गई, दूर होती गई।

अगले पल खिड़की से बहादुर का चेहरा गायब हो गया। गाड़ी में से जोर-जोर से पैर पटकने, खुर मारने की आवाजें आने लगीं। वह लातों से दरवाजा तोड़ कर बाहर आने की कोशिश कर रहा था शायद। एक वक्त वह भी था कि जब बहादुर की एक लात पड़ जाती तो ऐसी गाड़ियां माचिस की डिबिया की तरह उखड़-बिखर जाती। लेकिन आज न वह बहादुर रह गया था, न उसकी वैसी ताकत! पैर पटकने की आवाज कम होते-होते शांत हो गई। बहादुर का चेहरा खिड़की में दोबारा दिखाई नहीं दिया। गाड़ी दरवाजे से बाहर निकली, मुड़ी और नजरों से ओझल हो गई। बहादुर को किसी ने फिर कभी नहीं देखा।

तीन दिन बाद जनावरपुरा को बताया गया कि बहादुर के लिए प्रधान राजा ने सबसे बेहतरीन इलाज की व्यवस्था की लेकिन भगवान को कुछ दूसरा ही मंजूर था। वह शहर के सबसे अच्छे अस्पताल में ही चल बसा। भीम ने कहा : "मैं अंतिम घड़ी में उसके सिरहाने ही था। प्रधान राजा की ऐसी ही आज्ञा थी।"

भीम ने अपना पैर उठा कर आंसू पोंछते हुए कहा, "मैंने अपने जीवन में इससे अधिक करुण दृश्य नहीं देखा। जब उसका अंत आया तब वह इतना कमजोर हो चुका था कि कुछ बोल भी नहीं पा रहा था। लेकिन वह मेरे कान में फुसफुसाया कि उसे सबसे अधिक दुख इस बात का है वह पवनचक्की को अधूरा ही छोड़ कर जा रहा है। उसके आखिरी शब्द थे रू बगावत के नाम पर आगे बढ़ो। जनावरपुरा अमर रहे। प्रधान राजा अमर रहें। प्रधान राजा हमेशा ठीक कहते हैं... ये ही उसके अंतिम शब्द थे दोस्तो!"

इतना कह कर भीम का लहजा थोड़ा बदला। उसने अपनी छोटी-छोटी, शक भरी आंखें घुमाई, "एक वाहियात और मूर्खतापूर्ण अफवाह फैलाई गई कि हम बहादुर को बूचड़खाने भेज रहे हैं। ऐसी घटिया बात किसी ने सोची भी कैसे?" भीम का गुस्सा उबल पड़ा, "क्या आप सब अपने प्रिय नेताजी को इतना भी नहीं जानते? लेकिन आपको शक हो ही गया है तो मैं बात साफ कर देता हूं। वह गाड़ी बूचड़खाने की संपत्ति थी जिसे हमारे पशु चिकित्सक ने खरीद लिया था। उसने पहले से लिखा नाम मिटाया नहीं था। सारी गलतफहमी इसी कारण हुई।" पशुओं को सारी बात जान कर भारी राहत मिली। अपने साथी की मृत्यु का गहरा दुख तो था लेकिन संतोष भी था कि चलो, कम-से-कम वह खुशी-खुशी तो मरा।

अगले रविवार की सुबह की बैठक में राजा खुद हाजिर हुआ। उसने बहादुर के सम्मान में एक छोटा-सा भाषण दिया। उसने बताया कि अपने बिछुड़े साथी का शव बाड़े में दफनाए जाने के लिए ला पाना संभव नहीं था : "लेकिन हम ऐसा जरूर करेंगे कि घर के बगीचे के गेंदे के फूलों से एक बड़ी माला बनाएंगे और अपने प्रिय बहादुर की समाधि पर चढ़ाएंगे। और सूअर अपने बहादुर के सम्मान में एक शोकसभा और भोज का आयोजन करने की सोच रहे हैं। ...मुझे अपने प्रिय बहादुर के दो प्रिय सूत्रवाक्य बहुत याद आते हैं और आप सबको भी उसे भूलना नहीं चाहिए- 'मैं और अधिक परिश्रम करूंगा' तथा 'प्रधान राजा हमेशा ठीक कहते हैं।' उसने रुंधे कंठ से अपनी अंतिम बात कही : "प्रिय बहादुर के इन सूत्रों को भूल जाना उसे भूल जाने के बराबर है।"

जिस दिन भोज निर्धारित था उस दिन शहर से एक गाड़ी आई और लकड़ी की एक

बड़ी-सी पेटी घर वालों को सौंप गई। उस रात फिर ऐसा हुआ कि घर के भीतर से जोर-जोर से गाने की आवाजें आती रहीं। फिर जैसे मार-पिटाई और झगड़ा शुरू हो गया। साढ़े ग्यारह बजे गिलास टूटने की जोरदार आवाज के साथ सब कुछ शांत हो गया। अगले दिन दोपहर तक घर के भीतर कोई हरकत नहीं हुई। फिर यह खबर फैली कि सूअरों ने व्हिस्की की एक और पेटी खरीदने के लिए पैसों का जुगाड़ कर लिया था।

कई बरस बीत गए। मौसम आए और गए। कितने ही प्राणी अपनी जीवन-लीला समाप्त कर गए। ऐसा भी वक्त आया जब बिजली, बबलू, कालू और कुछ सूअरों के सिवाय किसी को पता भी नहीं था कि बगावत से पहले के दिन कैसे थे।

कमली गुजर चुकी थी। ब्लू बैल, जस्सी और लस्सी तीना नहीं रहे। मुंगेरीलाल भी देश की किसी गुमनाम गली में, किसी दूसरे पियक्कड़ के घर पर जा मरा था। गोलू और बहादुर को भी भुलाया जा चुका था। बिजली अब बूढ़ी, मोटी घोड़ी थी जिसके जोड़ों में दर्द उठता रहता था, और आंखें हमेशा नम। उसकी रिटायरमेंट की उम्र तो दो साल पहले ही हो चुकी थी लेकिन अब तक कोई पशु रिटायर नहीं किया गया था। चारागाह का एक कोना उनके लिए अलग रखने की योजना खटाई में डाली जा चुकी थी। राजा अब कोई डेढ़ सौ पौंड का वयस्क, बधिया न किया सूअर था। भीम इतना मोटा हो गया था कि आंखें खुली रखकर भी वह मुश्किल से देख पाता था। सिर्फ बबलू पहले जैसा था। हां मुंह के पास उसका रंग थोड़ा सफेद हो गया था। बहादुर के बाद से वह ज्यादा उदास, चिड़चिड़ा और चुप्पा हो गया था।

बगावती प्राणियों से पैदा होने वाली नई पीढ़ी के लिए बगावत एक धुंधली-सी परंपरा मात्र थी जो मुंहजबानी एक-दूसरे तक चली आई थी। कुछ ऐसे प्राणी थे जो खरीदकर लाए गए थे। उन्होंने बगावत का जिक्र भी नहीं सुना था। अब जनावरपुरा में बिजली के अलावा तीन घोड़े और थे— ये हट्टे-कट्टे शानदार! लेकिन बड़े बेवकूफ किस्म के थे। बिजली उन्हें बगावत और पशुवाद के सिद्धांतों के बारे में जो कुछ बताती, उसे वे स्वीकार कर लेते। वे उसके प्रति मां जैसा आदर रखते लेकिन वे उसका कहा समझते भी थे, ऐसा लगता नहीं था।

जनावरपुरा पहले से अधिक संपन्न और बेहतर हो रहा था। सुल्तान से खरीदे गए दो खेतों को जोड़ कर इसका इलाका और बड़ा कर लिया गया था। पवनचक्की को भी कैसे-कैसे करके पूरा कर ही लिया गया था लेकिन बिजली पैदा करने के लिए उसका कभी इस्तेमाल नहीं किया गया। यह अनाज दलने के काम आती थी जिससे खासी कमाई होती थी। अब

सारे प्राणी एक और पवनचक्की बनाने में जुटे थे। उनसे कहा गया था कि जब यह पूरी हो जाएगी तो इसमें डायनमो लगाया जाएगा। लेकिन सबको थानों में ही बिजली, गर्म-ठंडा पानी, तीन दिन का सप्ताह मिलेगा जैसे गोलू के सपनों का अब जिक्र भी कोई नहीं करता था। राजा ने यह कहकर इनकी निंदा भी की कि यह सब पशुवाद की भावना के खिलाफ है : "सच्ची खुशी काम करने और थोड़े में गुजारा करने में ही है। यही पशुवाद की विशेषता है।" बाड़े में अब खुद की एक थ्रैशिंग मशीन और सूखी घास काटने की मशीन लग गई थी। कई नई इमारतें बाड़े में जुड़ चुकी थीं। कविराज कचरा ने अपने लिए एक तांगा खरीद लिया था।

पता नहीं क्यों ऐसा लगने लगा कि पशु तो नहीं लेकिन जनावरपुरा पहले से कहीं ज्यादा अमीर हो गया है। सूअर और कुत्ते अन्य प्राणियों से कहीं ज्यादा अमीर हो गए थे। इसका कारण शायद यह भी रहा हो कि वहां ढेरों कुत्ते थे। आप ऐसा न समझें कि ये अय्याशियां ही करते थे। भीम इस बात का बयान करता कभी नहीं थकता था कि जनावरपुरा की देखरेख और संगठन का काम इतना बेहिसाब और थका देनवाला है कि इसे समझ पाना दूसरे पशुओं के बस का नहीं है। भीम उन्हें बताता कि सूअरों को प्रतिदिन फाइल, रिपोर्ट, कार्यवृत्त, ज्ञापन जैसी कई रहस्यमय चीजों के साथ घंटों दिमाग खपाना पड़ता है। भीम कहता था कि यह जनावरपुरा के कल्याण के लिए जरूरी है। सूअर और कुत्तों के अलावा कुछ और प्राणी भी थे जिन्हें अपनी मेहनत से अपने लिए अनाज उगाने की जरूरत नहीं थी। उन्हें हमेशा अच्छी खुराक मिलती ही थी।

जहां तक दूसरों का सवाल था, उन्हें लगता था कि उनकी जिंदगी हमेशा से ऐसी ही थी। वे अकसर भूखे रहते, पुआल पर सोते, तालाब का पानी पीते, खेतों में मेहनत करते। सर्दियों में ठंड और गर्मियों में मक्खियां परेशान करतीं। कभी कोई बूढ़ा प्राणी अपनी धूमिल याददाश्त को टटोलता और कहता कि यह उन दिनों की बात है जब बगावत हुई थी, जब उन्होंने मुंगेरीलाल को निकाला था, तब सब अजनबी आंखों से उसे देखते क्योंकि उनकी आज की जिंदगी में ऐसा कुछ भी नहीं था जिसकी वे तुलना कर पाते। बूढ़ा बबलू जरूर था कि जो कहता रहता था कि उसे अपनी लंबी जिंदगी की छोटी-से-छोटी बात याद है और वह कह सकता है कि चीजें कभी न बेहतर रही हैं, न खराब हुई हैं : "वे बेहतर या खराब हो भी नहीं सकतीं। भूख, तकलीफ और निराशा ही जीवन के अटल नियम हैं।"

इसके बावजूद पशुओं ने कभी आस नहीं छोड़ी। उन्हें जनावरपुरा पर हमेशा गर्व रहा। आज भी पूरे भारत में उनका जनावरपुरा ही एकमात्र था जिसके स्वामी और संचालक खुद प्राणी थे। उनमें से हर कोई, चाहे नया हो या पुराना, छोटा हो कि बड़ा, दस-बीस मील दूर के किसी बाड़ों से खरीदकर लाया गया हो कि यहीं पैदा हुआ हो, सभी इस बात पर मुग्ध रहते कि जनावरपुरा उनका अपना है। जब वे बंदूक की गर्जना सुनते, ऊपर हरा झंडा फहराता देखते, तो उनके सीने गर्व से फूल कर कुप्पा हो जाते। आज भी यह भरोसा बरकरार था कि जनावरपुरा पशुओं का वह गणतंत्र है जिसकी मेजर ने भविष्यवाणी की थी। यह विश्वास आज भी कायम था कि कभी-न-कभी वह दिन भी आएगा जब भारत के हरे-भरे खेतों पर मनुष्यों का नामोनिशान नहीं रहेगा। 'भारत के जनावर' गीत की धुन भी कभी यहां तो कभी वहां, चुपके

से ही सही, सुनाई दे जाती थी। भले कोई इसे जोर से गाने की हिम्मत नहीं करता था पर जनावरपुरा का हर पशु इस धुन को जानता था। उनका जीवन कठिन जरूर था लेकिन वे जानते थे कि उनका जीवन दुनिया के दूसरे पशुओं की तरह नहीं है। अगर वे भूखे सोते हैं तो किसी तानाशाह मनुष्य की वजह से नहीं है; यदि वे हाड़तोड़ मेहनत करते हैं तो किसी की गुलामी में नहीं, खुद के लिए करते हैं। कोई भी प्राणी दो टांगों पर नहीं चलता; कोई प्राणी किसी दूसरे प्राणी को मालिक नहीं कहता; सभी पशु बराबर हैं।

गर्मियां शुरू हो गई थीं। एक दिन भीम ने भेड़ों को अपने पीछे आने के लिए कहा। वह उन्हें बाड़े की फालतू पड़ी जमीन की तरफ ले गया। वहां सफेदे की झाड़ियां उग आई थीं। भीम की देखरेख में भेड़ों ने सारा दिन पत्ते चरते बिताया। शाम को भीम अकेला ही घर लौटा। उसने बताया कि चूंकि मौसम गर्म है, इसलिए उसने भेड़ों को वहीं रहने के लिए कहा है। भेड़ें पूरा हफ्ता वहीं रहीं और इस दौरान उन्हें किसी ने भी नहीं देखा। दिन का ज्यादातर समय भीम उन्हीं के साथ गुजारता। पता चला कि वह भेड़ों को एक नया गीत सिखा रहा है और उसके लिए एकांत जरूरी था।

फिर भेड़ें लौटीं। वह एक सुहानी शाम थी। अपना काम खत्म कर पशु भी घर की तरफ आ रहे थे कि अहाते की तरफ से घोड़े की जबरदस्त हिनहिनाहट सुनाई दी। सभी रास्ता छोड़कर एक तरफ खड़े रह गए। यह बिजली की हिनहिनाहट थी। वह दोबारा जोर से हिनहिनाई तो सारे सरपट दौड़े और अहाते में जा पहुंचे। उन सबने भी वह देखा जिसे देखकर बिजली चौंकी थी।

एक सूअर अपनी पिछली दो टांगों के सहारे चल रहा था।

गौर से देखा तो पता चला कि यह भीम था। इस अवस्था में अपना भारी-भरकम शरीर संभाल न पाने की वजह से वह बेहूदा-सा दीख रहा था। लेकिन संतुलन उसका बढ़िया था। वह अहाते में चहलकदमी कर रहा था। कुछ ही पलों में घर के दरवाजे से सूअरों की एक लंबी कतार निकली। सब-के-सब अपनी पिछली टांगों पर चल रहे थे। कुछ दूसरों से बेहतर चल रहे थे, तो एक-दो हल्का-सा लड़खड़ा भी रहे थे। फिर कुत्तों के जोर-जोर से भौंकने की और काले मुर्गे की तेज कुकड़ूं-कूं सुनाई दी। अब राजा बाहर आया। वह राजसी तरीके से सीधा, चारों तरफ से अपने कुत्तों से घिरा दाएं-बाएं घमंड से देख रहा था।

उसने अपने पैर में एक कोड़ा ले रखा था।

भीषण सन्नाटा छा गया। चौंके और डरे प्राणी एक-दूसरे से सट गए। सबने सूअरों की लंबी कतार को अहाते में धीमे-धीमे टहलते देखा। ऐसा लग रहा था जैसे धरती उलट-पलट गई है। वर्षों से कुत्तों के आतंक के साये में सबने कोई शिकायत न करने, मीन-मेख न निकालने की आदत डाल ली थी। इसके बावजूद विरोध के कुछ शब्द-से फूटे कि जैसे किसी ने संकेत दिया और सभी भेड़ों ने ऊंची आवाज में मिमियाना शुरू कर दिया चार टांगें अच्छी, दो टांगें ज्यादा अच्छी... चार टांगें अच्छी, दो टांगें ज्यादा अच्छी... 'चार टांगें अच्छी, दो टांगें ज्यादा अच्छी।'

पांच मिनट तक बिना रुके वे यह राग अलापती रहीं। भेड़ों का यह गान पूरा होता, शोर शांत होता तब तक कुछ भी दूसरा कहने का मौका जा चुका था। सूअर मार्च करते हुए

घर के भीतर लौट चुके थे।

बबलू को लगा कि उसके कंधे पर कोई अपनी नाक रगड़ रहा है। पलटकर देखा तो यह बिजली थी। उसकी बूढ़ी आंखें पहले से ज्यादा धुंधली लग रही थीं। एक शब्द भी बोले बिना बिजली ने हौले से उसकी अयाल सहलाई और उसे बड़े तबेले के आखिर में ले गई जहां सात धर्मादेश लिखे हुए थे। कुछ पल वे सफेद रंग के शब्दों वाली डामर की दीवार को घूरते खड़े रहे।

"मेरी नजर कमजोर हो गई है," बिजली ने धीरे से कहा, "वैसे जब मैं जवान थी तब भी ऊपर लिखे हुए शब्द कहां पढ़ पाती थी! लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि दीवार कुछ अलग-सी दीख रही है। बबलू, जरा देखो न भाई, क्या आज भी सात धर्मादेश वही हैं जो पहले लिखे थे?" बबलू गधे ने अपना नियम तोड़ा और दीवार पर लिखा सारा कुछ पढ़कर बिजली को सुना दिया लेकिन अब वहां सात नहीं, केवल एक ही धर्मादेश लिखा हुआ था :

"सभी पशु समान हैं लेकिन कुछ पशु दूसरों से ज्यादा समान हैं!"

अगले दिन और भी गजब नजारा था जब बाड़े के काम की निगरानी करने वाले सभी सूअर अपने-अपने पैरों में कोड़े थाम थे। यह पता लगने पर भी किसी को आश्चर्य नहीं हुआ कि सूअरों ने अपने लिए एक रेडियो खरीद लिया है और अब वे टेलीफोन लगवाने की भी व्यवस्था कर रहे हैं। उन्होंने सामना, टाइम्स ऑफ इंडिया, मिड डे, पांचजन्य जैसे अखबार मंगवाने शुरू कर दिए थे। आश्चर्य तब भी नहीं हुआ जब राजा अपने मुंह में पाइप दबाए घर में चहलकदमी करता दिखाई दिया; तब भी आश्चर्य नहीं हुआ जब सूअरों ने मुंगेरीलाल कपड़े निकालकर पहनने शुरू कर दिए। राजा ने खुद के लिए काला कोट, चुस्त जांघिया और चमड़े की पैंट चुनी जबकि उसकी पसंदीदा सूअरनी झिलमिल रेशम की ड्रेस पहनकर निकली। यह कीमती पोशाक श्रीमती मुंगेरीलाल त्योहार के दिन पहना करती थीं।

एक सप्ताह बाद, दोपहर के समय बाड़े में कई कुत्तों से चलने वाली गाड़ियां आईं। पड़ोसी किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल निरीक्षण-दौरे पर बुलाया गया था। उसे पूरे जनावरपुरा में घुमाया गया। उन्होंने जो कुछ देखा उसकी खूब तारीफ की। पवनचक्की को उन्होंने खूब पसंद किया। पशु पूरी निष्ठा से काम करते रहे। किसी ने जमीन से अपना सिर भी नहीं उठाया क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि सूअरों से ज्यादा डरना है या मेहमान मनुष्यों से।

शाम ढली तो घर के भीतर से जोर-जोर से ठहाकों की और गाने-बजाने की आवाजें आने लगीं। पशु उत्सुकता से ठगे रह गए। पशु और मनुष्य पहली बार बराबरी से मिल रहे थे। इसलिए बाड़े में सभी उत्सुक थे कि देखें तो कि भीतर क्या हो रहा होगा। सभी एक राय से दबे पांव घर के बगीचे में पहुंचे।

दरवाजे तक पहुंचकर वे ठिठक गए। वे आधा डरे और आधी हिम्मत दिखा रहे थे। भीतर जाएं या नहीं, सबके चेहरे पर यही सवाल था। लेकिन बिजली ने रास्ता दिखाया और सबको भीतर ले गई। कुछ पंजों के बल उचक-उचककर देखने की कोशिश कर रहे थे तो जो कद-काठी में ऊंचे थे वे बैठक के कमरे की खिड़की से आसानी से झांक पा रहे थे।

भीतर एक लंबी मेज के एक तरफ छह किसान बैठे थे। दूसरी तरफ छह सूअर बैठे थे। राजा स्वयं मेज के सिरे पर सबसे ज्यादा सम्मान वाली कुर्सी पर जमा हुआ था। सूअर

अपनी कुर्सियों पर आराम से बैठे ताश का आनंद ले रहे थे। थोड़ी देर के लिए खेल रुका। एक बड़ा-सा जग सबके बीच घुमाया जा रहा था। सब अपनी-अपनी प्यालियां भर रहे थे। किसी ने भी ध्यान नहीं दिया कि आश्चर्यचकित पशुओं के चेहरे खिड़की से उन्हें घूर रहे हैं।

रंगपुरा का सुल्तान हाथ में अपना गिलास लिये उठ खड़ा हुआ : "सब अपनी शराब पीना शुरू करें इससे पहले मैं दो शब्द कहना चाहता हूं।"

उसने बताया कि उसे अपार संतोष हो रहा है कि आज आपसी अविश्वास और गलतफहमी का एक लंबा युग समाप्त हो रहा है : "वैसे तो हमारे मन में ऐसा कोई भाव कभी नहीं था लेकिन कुछ पड़ोसी मानव जनावरपुरा के सम्माननीय स्वामियों के प्रति विद्वेष से न सही, संदेह की नजर से देखते थे। इससे ही दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटती रहीं। हमें यह भी लगता रहा कि सूअरों के स्वामित्व के तहत जनावरपुरा में कुछ अजीब-सी बातें चल पड़ी हैं जिनका पास-पड़ोस के बाड़ों पर गलत प्रभाव पड़ेगा। लेकिन नहीं, यह सारा शक बेबुनियाद था। वे सारी गलतफहमियां अब दूर हो चुकी हैं।" आज अपने साथियों के साथ जनावरपुरा आकर उसने खुद इसके चप्पे-चप्पे का मुआयना किया है : "और मैंने पाया कि यहां सब आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से काम करते हैं। मैंने यहां ऐसा अनुशासन और सुव्यवस्था ऐसी देखी जो देश के किसानों के लिए एक मिसाल हो सकती है। मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि जनावरपुरा में निचले तबके के पशु पूरे भारत वर्ष के किसी भी पशु की तुलना में ज्यादा काम करते हैं और कम से कम खुराक पाते हैं। सच कहूं तो यहां हमने कई ऐसी चीजें देखी हैं जो हम अपने बाड़ों में तत्काल अपनाना चाहेंगे। मैं जोर देकर कहना चाहता हूं कि जनावरपुरा और उसके पड़ोसियों के बीच आज जो मैत्रीभाव बना है, वह हमेशा बना रहना चाहिए। सूअरों और मनुष्यों के बीच हितों का टकराव न कभी था, न है और न ही रहना चाहिए। उनके संघर्ष और उनकी तकलीफें एक जैसी हैं। आप बताइए, क्या मजदूरों की समस्या सब जगह एक जैसी नहीं है?"

सुलतान कोई नायाब जुमला उछालना चाहता था लेकिन वह खुशी के मारे इतना बौखला गया कि आगे कुछ कह ही नहीं पाया। वह हंसते-हंसते लोटपोट होने लगा। काफी देर तक हंसने के बाद उसने किसी तरह फिर से कहना शुरू किया : "अगर आपके पास निचले तबके के पशु हैं तो हमारे पास भी अपना मजदूर-वर्ग है!" इस कटाक्ष से मेज पर ठहाके लगने लगे। सुल्तान ने एक बार फिर सूअरों को कम राशन और काम के लंबे घंटों की बात की और राजा को बधाई दी कि उसने जनावरपुरा के 'निचले तबके' का तुष्टीकरण करने पर कड़ी रोक लगा रखी है। उसने हंसते-हंसते ही अपनी बात खत्म की, "मैं चाहता हूं कि आप सब अपने पैरों पर खड़े हो जाएं, अपने-अपने गिलास भर लें।" सबने वैसा ही किया। सुलतान ने अपना गिलास हवा में उठाकर कहा, "सज्जनो, जनावरपुरा की जय हो!"

सबने उत्साह से तालियां बजाईं, पैरों से जमीन थपथपाई। राजा एकदम अभिभूत हो गया। वह अपनी जगह से उठा, चलता हुआ सुल्तान के पास आया, अपना गिलास उसने सुल्तान के गिलास से टकराया और एक सांस में पूरी शराब गटक गया। हंगामा मचना था। मचा। जब सब थोड़े शांत हुए तो उसने कहा : "मुझे भी दो शब्द कहने हैं।"

राजा के पिछले भाषणों की तरह ही उसके ये दो शब्द भी मुद्देवार थे, मुझे इस बात की खुशी है कि आपसी गलतफहमियों का युग समाप्त हो गया है। लंबे अरसे तक जनावरपुरा के बारे में अफवाहें फैलाई जाती रहीं। हम पर यह झूठा आरोप भी लगाया गया था कि हम पड़ोसियों के बाड़ों के पशुओं के बीच बगावत फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। सच तो यह है कि हमारी एकमात्र इच्छा है कि सब शांति से रहें और पड़ोसियों के साथ सामान्य कारोबारी रिश्ता बनाए रखें। यह बाड़ा, जिसे नियंत्रित रखने के लिए आपने मेरा सम्मान किया है, दरअसल एक सहकारी उद्यम है। सबकी सहमति का परिणाम है। इसके स्वामित्व के कागजात, जो अब मेरे कब्जे में हैं, सूअरों की संयुक्त संपत्ति है।"

उसने आगे कहा : "मैं नहीं मानता कि अब कहीं, किसी को किसी प्रकार कोई संदेह है। बाड़े की दिनचर्या में हमने अभी-अभी कुछ परिवर्तन किए हैं जिनसे आपसी विश्वास को बढ़ाने में मदद मिलेगी। अब तक हमारे बाड़े में एक मूर्खतापूर्ण परंपरा चली आ रही थी कि पशु एक-दूसरे को 'साथी' कहकर संबोधित करते थे। एक और अजीब-सी परंपरा चली आ रही थी जो पता नहीं कब और कैसे शुरू हुई कि हर रविवार की सुबह सारे प्राणी बगीचे में एक टीले पर कीलों से ठुंकी एक सूअर की खोपड़ी के आगे से मार्च करते हुए गुजरते थे। अब इन दोनों प्रथाओं को खत्म किया जा रहा है। खोपड़ी को हमने पहले ही जमीन में गाड़ दिया है। आप मेहमानों ने चबूतरे पर लहराता हरा झंडा भी देखा होगा। आपका ध्यान इस पर गया कि नहीं कि पहले इस पर सफेद रंग से जानवर के खुर और सींग बने हुए थे। अब उन्हें मिटा दिया गया है। आगे से हमारा झंडा सादा हरे रंग का ही रहेगा।"

वह रुका, उसने गला तर किया और फिर अगली बात कही : "श्रीमान सुल्तान के शानदार और दोस्ताना भाषण के बारे में मेरा एक ही एतराज है। उन्होंने लगातार 'पशुबाड़ा' या 'जनावरपुरा' का जिक्र किया है। वैसे ठीक भी है, सुल्तान साहब को इस बात का पता चलता भी कैसे कि मैंने आज से 'जनावरपुरा' नाम भी समाप्त कर दिया है। अब से यह बाड़ा 'नरमादापुरा' के नाम से ही जाना जाएगा। मुझे विश्वास है कि यही इसका सही और मूल नाम है।"

"सज्जनो," राजा ने अपनी बात खत्म की, "मैं आपको पहले की तरह ही चीयर्स कहूंगा लेकिन मेरा तरीके होगा। आप सब अपने गिलास फिर से लबालब भर लीजिए, और मेरे साथ कहिए, चीयर्स... नरमादापुरा की जय हो!"

सबने पहले की तरह ही दिल खोल कर तालियां बजाईं, गिलास आखिरी बूंद तक खाली की गई। लेकिन खिड़कियों से उचक-उचककर जो प्राणी कमरे का यह पूरा नजारा देख रहे थे उन्हें लगा कि जैसे सामने जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह सच नहीं है। जैसे सामने कुछ आश्चर्यजनक घटित हो रहा हो। फिर उन्हें लगा जैसे सूअरों के चेहरों को कुछ हो रहा है। बिजली की धुंधली नजरें एक-एक चेहरे पर टिकती रहीं। वह साफ-साफ देख रही थी कि किसी के चेहरे पर पांच ठुड्डियां थीं तो किसी के चेहरे पर चार और किसी-किसी की तीन ठुड्डियां थीं। ऐसा लग रहा था जैसे सारा कुछ पिघलता और बदलता जा रहा था। जब वाहवाही का सारा शोर थम गया, तो सबने अपने-अपने पत्ते फिर से उठाए; जो खेल रुक गया था, वह फिर से शुरू हो गया। खिड़की पर जमा सारे पशु एक-एक कर चुपचाप सरकते गए।

वे बमुश्किल बीस गज भी नहीं पहुंचे होंगे कि अचानक घर के भीतर से चीखने-चिल्लाने की तेज आवाजें आने लगीं। वे सब रुके, मुड़े और वापस दौड़े। सब फिर से खिड़की से झांक कर देखने लगे। हां, अंदर भीषण लड़ाई चल रही थी। शोर-शराबा, मेज पीटती हथेलियां, तेजी से नाचती शंका भरी निगाहें, हिंसक इंकार की मुद्रा। यह हुआ क्या? खिड़की के इस तरफ खड़ी बिरादरी को कैसे पता चले कि उस तरफ हुआ क्या? अंदाजा यह आया कि सारी मुश्किल की जड़ शायद यह थी कि राजा और सुल्तान दोनों ने एक ही साथ हुकम का इक्का खेल दिया था। इक्के पर इक्का!!

गुस्से से भरी बारह आवाजें गूंज रही थीं और सब मिलकर बड़ा शोर पैदा कर रही थीं। अब बिजली को या किसी दूसरे प्राणियों को यह नहीं लग रहा था कि सूअरों के चेहरों को क्या हो रहा है। बाहर खड़े सभी प्राणी कभी सूअर को देखते, कभी आदमी को; कभी आदमी को देखते फिर सूअर को फिर आदमी को लेकिन अब किसी के लिए भी यह कहना असंभव हो चला था कि कौन-सा चेहरा किसका है।

(रचना-काल : नवंबर 1943 - फरवरी 1944)